वर्ष 27 | वैशाख–ज्येष्ठ | मई–2022 | अंक 5 (मासिक) | प्रकाशन उज्जैन

आर.एन.आई. नं. 0048570/29/30/1982
पोस्ट मालवा डिवीजन पी.आर.एन.नं.एम.डी. 08/2021–2023

मूल्य 10/- रुपये

मासिक प्रकाशन

आगमोद्धारक

प्रकाशन हर माह की 6 तारीख को

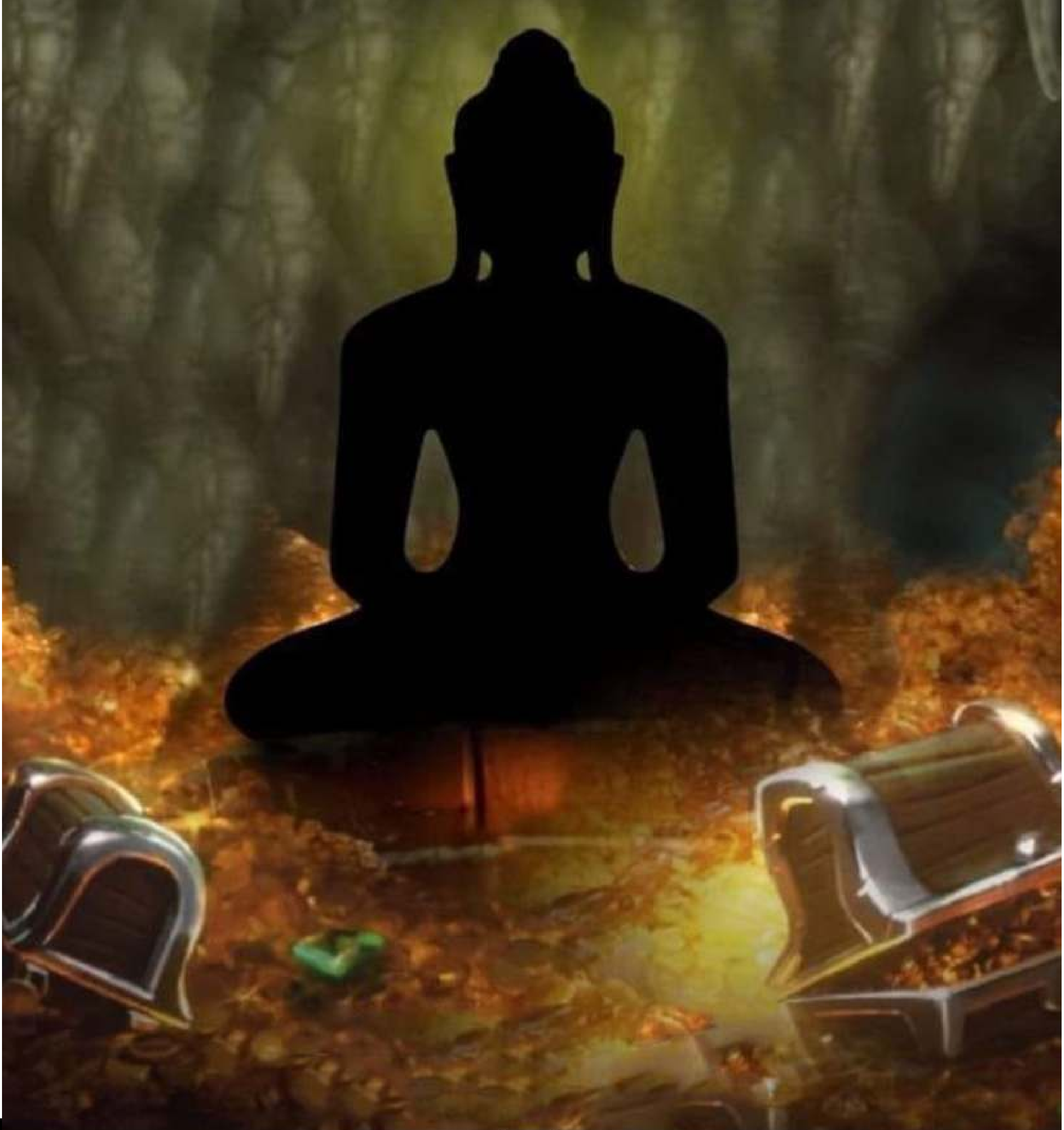

आगमोद्धारक

नमो नाणस्स नमो नमः

श्री अभ्युदय फ ाउण्डेशन

उज्जैन का जैन हिन्दी मासिक

प्रधान सम्पादक

डॉ.सुभाष जैन, उज्जैन

सम्पादकीय कार्यालय

डॉ.सुभाष जैन

46, सखीपुरा, उज्जैन-456001 (म.प्र.)

मोबा. नं. 94250-91012, 8770884897

1-E-mail-Subash_3333@yahoo.co.in

2-E-mail-i.am.Subhashjain@gmail.com

इन्दौर कार्यालय

प्रफुल्लकुमार जैन ''पप्पू''

1073, सुदामानगर, फूटीकोठी रोड़

इन्दौर-452009 (म.प्र.)

5057087, 5057067

मोबा. नं.-98260-10089

सदस्यता

आगमोद्धारक के सदस्य बनने वाले श्रीमानों से निवेदन है कि सदस्य के लिये शुल्क राशि बैंक ड्राफ्ट/चैक/M.O. से श्री सिद्धसेन दिवाकर चेरिटेबल ट्रस्ट, उज्जैन के नाम से सम्पादकीय पते पर भिजवाये। अन्य नाम से सदस्यता राशि स्वीकार नहीं की जायेगी। - **डॉ.सुभाष जैन**

क्रोध को कैसे जीतें ? *क्रोध का सामना, क्रोध से करने जाओगे तो पछताओगे। घृणा का मुकाबला घृणा से करोगे तो कुछ भी हाथ नहीं लगेगा, क्योंकि क्रोध से क्रोध बढ़ता है। अग्नि में ईधन डालोगे तो अग्नि और बढ़ेगी ही। क्रोध अग्नि है उसमें घृणा का ईधन मत डालो। क्रोध की अग्नि को क्षमा और सहिष्णुता के जल से बुझाओ। तलवार का सामना रेशम से करो, तलवार हार जायेगी। क्रोध का सामना क्षमा से करो, क्रोध खण्ड-खण्ड जो जायेगा, चूर-चूर हो जायेगा।*

दिव्य आर्शीवाददाता

प.पू.मालव भूषण आचार्य श्री नवरत्नसागर सूरीश्वरजी म.सा.

मार्गदर्शक एवं प्रेरक

प.पूज्य आचार्य श्री विश्वरत्नसागर सूरीश्वरजी म.सा.

श्री अभ्युदय फाउण्डेशन, उज्जैन

अध्यक्ष- भाई श्री प्रफुल्लजी जवेरी, मुंबई (महा.)

शाश्वत संदेश

तिण्णो हु सि अण्णवं महं,
किं पुण चिट्ठिसि तीरमागओ।
अभितुर पारं गमित्तए, समयं गोयम ! मा पमायए ॥

विशाल सागर को तू तिर चुका। अब तट पर जाकर क्यों खड़ा है ? पार पहुंचने के लिये शीघ्रता कर। हे जीव ! क्षण भर के लिये भी प्रमाद मत कर।

- उत्तरा. सूत्र, 10.34

पाथेय *हे अद्‌भूत अज्ञेतय प्रभो ! तुमने अभी तक स्वयं को नहीं किया है प्रकट और प्रतीक्षा कर रहे हो अनुकूल अवसर की। तुमने हमें भेजा है पृथ्वी पर, निर्माण करने के लिये अपनी पद्धतियों को और मेरी सत्ता का प्रत्येक अंश करता है यही पुकार, तुम्हारी इच्छा पूर्ण हो और मैं एक अविचल, अजेय भावना से तुम्हें करता हूं पूर्ण समर्पण। प्रभु अपनी करुणा की बाँहों में लपेट लो इस दुःखी पृथ्वी को और डुबो दे इसे अपने असीम प्रेम की लहरों में कल्याणकारी शीतल जल धाराओं में। मैं तुम्हारी करुणा की बलशाली बाँहें हूँ, मैं तुम्हारे प्रेम से परिपूर्ण एक विशाल वक्षःस्थल हूं। मैंने इस दुखी धरती को अपनी बाँहों में समेट, लगा लिया है अपने हृदय से और कोमलता से परम आर्शीवाद का एक चुम्बन और अंकित कर दिया है इस संघर्षरत ग्रह पर। यह उस माता का चुम्बन है जो सान्त्वना देता है, शीतल करता है !*

शुल्क सोपान

स्तम्भ	11,511/- रुपये
आजीवन	1000/- रुपये
पांच वर्षीय सदस्य	301/- रुपये
एक वर्षीय सदस्य	80/- रुपये
एक प्रति	10/- रुपये

नोट- आगमोद्धारक में प्रकाशित रचनाओं से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

वर्ष-27 जेष्ट-अषाढ़ जून 2022 अंक-6

विषय सूची

1- शाश्वत संदेश, पाथेय 3

2- विषय सूची 4

3- प्रभु एक बार मेरा भी कल्याण कर दो ! (सम्पादकीय)- डॉ.सुभाष जैन 5-6
राज-लोक-छः द्रव्य

4- पाप की सजा भारी-प.पू.आचार्य श्रीअरुणविजयजी म.सा. 7-8

5- भारत के प्राचीन हस्तप्रत भंडार-वैराग्यरतिविजय 9-10

6- मैं अभय-पू.आ.श्रीमद् विजयमुक्ति/ मुनिचन्द्रसूरीश्वरजी म. 11-13

7- अहंकार- राजेन्द्र परदेशी 14

8- संस्कृति और उसकी विवेचना, इच्छा का अंत नहीं, बीजाधान 15-16

9- चर्म चक्षु, मनः चक्षु एवं ज्ञान चक्षु 17-18

10-आओ चलें जेसलमेर.... इन्दु जैन 19

11-क्या आपकी पूजा सामग्री शक्ति अनुसार है ?, जिनपूजा स्वद्रव्य से या देवद्रव्य से ? 20
''ओम्'' में जैन प्रवचन

12-नैवेद्य पूजा-हालिक कृषक का कथानक, आवश्यकता नहीं है...., 21-22
चार्तुमास के बाद एक पच्चखाण

13-आनन्द की खोज- सुधीर पटवा **To Live** (जीवन) से **To Love** (प्रेम) तक 23

14-समर्पण और अहं से मुक्त ही सच्चा शिष्य- शान्तिलाल सगरावत, योग्यता 24

15-सर्जन का अहंकार कैसे मिटे ?, परिवर्तन प्रगति का सूचक है 25
वर्तमान में तीन प्रकार के बोर्ड

16-नवतत्व (व्यवराह नय से) -मुनि ऋषभरत्न विजय) 26-27

17-वर्गपहेली- 325 - जयंतीलाल जैन 28

18-ज्ञान गंगोत्री- 325 - आ.प्रवर श्री मृदुरत्नसागरजी म.सा. 29

19-शासन-समाचार 30-41

20-हमारे तीज त्यौहार, सादर आमंत्रण, सारे देश में आगमोद्धारक 42

संपादकीय

प्रभु एक बार मेरा भी कल्याण कर दो !

अनवरत चलता कालचक्र। एक असंख्य वर्षो का समय उसके दो विभाग। उत्सर्पिणी और अवसर्पिणीकाल। इन दोनों का चक्र चलता रहता है। उत्सर्पिणी याने शुभ सात्विक-सुन्दर-उन्नतिकाल मंगल हो। अवसर्पिणी काल-उत्तरोत्तर निःसत्व-अवनीति होती रहती है। इन दोनों काल में 24-24 तीर्थकर भगवंत होते है। प्रभु धर्मतीर्थ की स्थापना करके मुक्तिमार्ग बतलाते है। अनेक जीवों को दुःखों से मुक्त होने का मार्ग दर्शन देते हैं। यह सृष्टि का शाश्वत क्रम निरंतर चलता रहता है इसका कभी भी उल्लंघन नहीं होता है। वर्तमान में अवसर्पिणीकाल चल रहा है। परमात्मा श्रीऋषभदेव से लेकर परमात्मा श्री महावीर स्वामी हुए। इसी प्रकार उत्सर्पिणीकाल में भी चौबीस तीर्थकर हुए थे उनमें नवें तीर्थकर श्री दामोदर स्वामीजी हुए। वे भी अष्ट प्रतिहार्य चौतीस अतिशय, पैंतीस वाणी के गुणों से सुशोभित थे। एक दिन आषाढ़ी श्रावक भीषणभवों से उद्विग्न होकर प्रभु से प्रश्न करता है। प्रभु! मेरा निर्वाण कब होगा, भवों के बंधन से मैं कब मुक्त होऊंगा? भगवंत। मुझ पर कृपा करो। करुणा सागर भगवंत ने कहा-वत्स! आगामी अवसर्पिणी काल में 23 वें तीर्थकर परमात्मा श्री पार्श्वनाथ प्रभु होंगे, प्रभु के आर्यघोष नामक गणधर बनकर उसी भव में तुम मोक्षगामी बनोगे।

परमात्मा की जब भी चर्चा होती है तो हमारे सामने प्रभु का कल्याणकारी स्वरुप ही सामने आता है। प्रभु का यही कल्याण भाव हमारे जीवन में उतरे इसलिये हम प्रभु के पंच कल्याणक मनाते है, च्यवन, जन्म, दीक्षा केवल और निर्वाण कल्याणक सभी कल्याणक भविकजन के सर्वकल्याण के भाव को दर्शाते है। जब तक परमात्माभाव नहीं घटे तब तक सभी पाषाण है। वो इंसान नहीं पाषाण है जो अपने भीतर परमात्मा को नही देखता, परमात्मा को अनुभव नहीं करता है। परमात्मा वह नहीं है जिसने हमें जन्म दिया है परमात्मा तो वह है जिसे हम अपने भीतर अनुभव करते है जिसे अपने भीतर हम जन्म देते है अपने भीतर जन्म देने की कला ही कल्याणक है।

इस धरा पर हमेशा ऐसी महान आत्मन्-विभूतियों का आगमन होता रहा है जिसके कारण इस धरा की दुष्ट, आतातयीयों से सुरक्षा होती रही है। मानवता जीवित रही है। इस धरा पर अरबों की संख्या में मानव है परन्तु करोड़ों वर्षो में केवल 24 संख्या ही ऐसी महान होती है जो अपने साथ जगत का कल्याण करने के लिये आती है। 24 तीर्थंकर अगर जैनों में होते है अन्य धर्मो से भी 24 अवतार होते हैं। यह संख्या सर्व सम्प्रदाय के लिये महत्वपूर्ण है। यह धूमित होती मानवता को मार्गदर्शन देकर जीवन संदेश देने का काम करते हैं।

अभी सारे देश में अंजनशलाका के साथ प्रभु के पंच कल्याणकों की जोरदार प्रस्तुतियां मंचों पर हो रही है। यह प्रतिकात्मक होने के बाद भी ऐसे आयोजन हमें धर्म और परमात्मा के अहोभाव से भर देते हैं। प्रभु के तो पंच कल्याणक हो चुके अब हमारे कल्याण का भाव जाग्रत करना होगा। हमारा कल्याण हो जाये तो ऐस पंच कल्याणक आयोजन भी सार्थक सिद्ध हो जायेगें। पंच कल्याण आत्मा से परमात्मा बनने की प्रयोगशाला है। पंच कल्याणक महोत्सव के माध्यम से भगवान के जीवन चरित्र चित्रण से हमें अपने जीवन चरित्र का निर्माण करना है।

जैन दर्शन स्पष्ट दर्शाता है कि प्रत्येक आत्मा में परमात्मा बनने की शक्ति छुपी हुई है। तीर्थकर परमात्मा भी हमारे जैसे ही संसारी थे। प्रभु ने भी जीवन में दुःख कष्ट का अनुभव किया था परन्तु प्रभु ने अपने आपको पहचाना और आत्मा के कल्याण के लिये वह सब कुछ किया जो तीर्थंकर नामकरण का कारण बना। यह सफर आसान नहीं है इसको पाने में कई जिन्दगियां लग जाती है निरंतर आत्मावलोकन कई भवों के बाद परम पद की प्राप्ति करवाता है। पशु से परमेश्वर, नर से नारायण, कंकर से शंकर बनने की कला को हमें तीर्थकर परमात्मा से सीखना होगा। चाहे कितने भव लग जाये लेकिन अपने आपको परिमार्जित करने की प्रक्रिया हमारे अंदर निरंतर चलाना होगी, अगर हम ऐसा कर पाये तो परमात्मा अपना पद भी देने के लिये तत्पर है सिर्फ योग्यता को धारण करने के प्रयास करना है। तीर्थंकर परमात्मा के जीवन में घटित होनेवाले पंच कल्याणक से मानव सभ्यता को हमेशा ही आनंद की अनुभूति हुई, निर्वाण कल्याण भी अपूर्व आनंद का ही विषय है। यह प्रक्रिया प्रत्येक

तीर्थंकर परमात्मा के जीवन में समान रुप से घटित होती है, माता-पिता जन्म और निर्वाण, दीक्षा स्थान अलग होते हैं। तीर्थकर परमात्मा का अवतरण से लेकर निर्वाण तक सम्पूर्ण सफर मानव सभ्यता के कल्याण के लिये ही होता है।

परमात्मा को अनेक रुपों में पूजा जाता है, कोई मूर्ति के रुप में तो कोई निराकार रुप पूजता है, परमात्मा के बारे सभी की अवधारणायें भिन्न है पर यह परम सत्य है कि परमात्म भक्ति, भक्त के हृदय में शक्ति के स्रोत और पथ प्रदर्शक के रुप कार्य करती है। आत्म विश्वास में वृद्धि करती है। मन की गहराई से उतरने पर मानव को परमात्मा की अनुभूति होती है। हर मानव के भीतर बसे हुए ईश्वर की अनुभूति उसके जीवन की धरोहर बन जाती है और जो इसका साक्षात्कार कर लेता है उसका जीवन धन्य हो जाता है। अनेक लोग है जिन्होंने गहन संकट और विपरित परिस्थिति से भी परमात्मा के प्रति समर्पण भाव से अपने को सर्व संकटों से मुक्त पाकर जीवन में आनंद का अनुभव किया है। पंच कल्याणक आयोजन में बने पात्रों ने भी इस बात को अनुभव किया है। भावनात्मक से जुड़े लोगों के कई अनुभव हुए है। इसलिये पंच कल्याणक का आयोजन चाहे परमात्मा के जीवन चरित्र का चित्रण होने के ब ाद वह हमें परमात्मा के बहुत निकट ले जाता है।

जीवन में परिवर्तन का प्रकाश प्रकट हो यह भाव प्रभु के पंच कल्याणकों को देखने से आना चाहिये और परमात्मा से यह प्रार्थना करना चाहिये कि हे प्रभु आपके पंच कल्याणक हुए और संसार को असीम आनंद की अनुभूति हुई है। एक बार मेरा भी कल्याण कर दो। यह भाव अगर मन में, चिंतन में आ गया तो जीवन बदलते देर नहीं लगेगी।

- डॉ. सुभाष जैन

राज-लोक-छः द्रव्य

अगर कोई देव लोहें का बहुत भारी गोला ऊपर देवलोक में रहकर पूरा बल लगाकर जोर से फेंके तो लगातार 6 महिने तक गिरता-गिरता वह गोला जितना अंतर (दूरी) काटे उससे भी असंख्य गुणा बड़ा एक राज का माप है। ऐसे 14 राज की ऊँचाई वाला यह लोक (विश्व) है। इस विश्व के छः द्रव्य है।

1- धर्मास्तिकायः- इसकी सहायता से जीव-अजीव पदार्थ इस विश्व में गति करते हैं। जैसे पानी की सहायता से मछली की गति।

2- अधर्मास्तिकायः- इसकी सहायता से जीव-अजीव पदार्थ स्थिर रह सकते हैं। ये दोनों 14 राजलोक व्यापी-अरुपी-अखण्ड द्रव्य है।

3- आकाशास्तिकायः- यह लोक एवं अलोक में व्याप्त अरुपी एक अखण्ड द्रव्य है। 14 राजलोक में रहा आकाश विभाग लोकाकाश कहलाता है, बाकी सब अलोकाकाश है। यह सभी द्रव्यों को रहने के लिये स्थान देता है।

4- जीवास्तिकायः- ज्ञान-दर्शन-चारित्रि का मालिक अरुपी द्रव्य है। जब तक कर्म से युक्त है तब तक इसका चार गति, 14 राजलोक में भ्रमण चालू रहता है। कर्म मुक्त होने पर सिद्धशिला पर ये (जीव) प्रतिष्ठित होते हैं। यह जीव द्रव्य अनंत है। परस्पर सहायकता इसका गुण है। यहां तक के चार द्रव्य स्कंध, देश, प्रदेशवाले हैं।

5- पुद्‌गलास्तिकायः- 16 वर्गणा स्वरुप, 14 राजलोक में रहनेवाला पुद्‌गल द्रव्य है। वर्ण, गंध, रस, स्पर्श इसके लक्षण है। पूरण-गलन इसका स्वभाव है। जीव का शरीर बनाने एवं कर्म बांधने में काम आता है। जगत में जो कुछ दिख रहा है सब पुद्‌गल ही है। क्योंकि छः द्रव्य में मात्र यही रुपी द्रव्य है, यह अनंत है। इसके चार भेद है। यह स्कन्ध देश, प्रदेश, परमाणुवाला है।

6- कालः- यह द्रव्य मनुष्य क्षेत्र (ढाई द्वीप) व्यापी है। व्यवहार से समय- आवलिका, दिन, रात वगैरह इसके भेद है। यह एक एवं अरुपी द्रव्य है। इसके स्कंधादि भेद नहीं है। नये को पुराना करना इसका गुण है। निश्चय से काल एक ही समय का है।

छः में से 4 धर्म-अधर्म-लोकाकाश और जीव इन अस्तिकायों के प्रदेश समान है। तथापि जीव में यह विशेषता है कि इसके प्रदेश दीपक की भांति संकोच-विकासशील है। जिस प्रकार दीपक जितने (छोटे या बड़े) डिब्बे में रखते है तो उसका प्रकाश कम या अधिक विस्तार को प्राप्त करता है। उसी प्रकार आत्मा भी जैसे (चींटी या हाथी के) शरीर को प्राप्त करती है उतने भाग में अपने प्रदेश को फैलाकर रहती है। इसलिये संसारी आत्मा का माप शरीर प्रमाण है। लेकिन जब केवली भगवंत समद्‌घात करते है तब 14 राजलोक में एक-एक आकाश प्रदेश पर एक-एक आत्म प्रदेश आ जाते हैं। दोनों के प्रदेश समान होने के कारण आत्मा भी 14 राजलोक व्यापी बन जाती है। 6 द्रव्य में से 4 निष्क्रिय द्रव्य पुद्‌गल एवं जीव सक्रिय है। उसमें भी कर्ता तो मात्र जीव ही है। बाकी सभी अकर्ता है।

पाप की सजा भारी...!

*प.पू.आचार्यश्री अरूणविजयजी म.सा.

गतांक से आगे...!

तीनों रुप में विपरीतताः-

मन से सोचना, वचन से तद्नुसार बोलना, और काया शरीर से कहे अनुसार वर्तना यह साधु-संत सज्जनों का लक्षण है। जैसा अच्छी तरह से सोचना वैसा ही बोलना और बोले अनुसार वैसा ही वर्तन भी करके दिखाना। अर्थात् विचार-वाणी और वर्तन इन तीनों में जिनकी एक वाक्यता हो, एक रुपता और साम्यता हो उसे अच्छा साधु-संत या सज्जन पुरुष कहते हैं। यहीं उनका सुंदर लक्षण है। लेकिन आज यह भयंकर पंचम कलिकाल आया है। सात्विकता जहां नष्ट होती जा रही है। वैसे ही विचार-वाणी और वर्तन की साम्यता भी आज नामशेष मात्र रह गई है। आजकल अक्सर ऐसे लोग ज्यादा दिखाई देते है जिनके बोलने का कोई ठिकाना नहीं है और बोलने के बाद अपना ही बोला हुआ पालने का तो और भी कोई ठिकाना ही नहीं है। आजकल झूठ बोलने में एक मिनिट की भी देरी नहीं लगती है। झूठ इतना सहज और सरल हो गया है कि सत्य कैसा होता है यह ढूंढने के लिये किसके पास जाएं ? कहां जाएं ? ऐसी द्विधा मन में खड़ी होती है। अच्छे-अच्छे धर्मी कहलानेवाले लोग भी जब बोलते है तब उनमें भी जब विचारादि तीनों में साम्यता नहीं दिखते हैं तब लगता है कि क्या हो गया है। काल की इस असर के नीचे कितने लोग आ गए ? मुंह में राम बगल में छूरी, और गुजराती में भी कहते है- **''हैये- होठे- राम ने करो काम नी बात''** इस तरह जब अच्छे पवित्र राम-नाम पर लोग न करने योग्य करने लग जाते हैं तो क्या समझना ? माया मृषावादी का यही स्वरुप है अपना बोला हुआ ही न पालना। समय आने पर यह कह देना मैंने कहां ऐसा बोला था ? मैंने तो ऐसा कहा ही नहीं था। ओहो ! कहां तो वह काल जहां ये कहा जाता था कि- ''रघुकुल रीत सदा चली आई, प्राण जाई पर वचन न जाई।'' रघु राजा के काल से वह परंपरा चली आ रही है कि प्राण जाय तो भले जाय परन्तु वचन तो नहीं जाना चाहिए। प्राण से भी ज्यादा वचन की कीमत थी। और आज उल्टा ही हो गया है। ''वचन जाय पर दाम न जाई'' वचन जाय तो भले जाय पर दाम (धन-पैसा) नहीं जाना चाहिये। आज अपने वचनों की लोगों को कोई किम्मत ही नहीं रही है। ''अभी बोला अभी फोक'' कहकर भी मैंने कहां कहा है, कब कहा है ? बात बदल डालते हैं। तो क्या यह ठग विद्या नहीं हुई। अपने शब्दों के प्रति जब अपनी खुद की ही वफादारी नहीं है तो फिर दूसरों के शब्दों पर वचनों पर कुरबानी करने की वफादारी नहीं है तो फिर दूसरों के शब्दों पर वचनों पर कुरबानी करने की वफादारी, फना होने की तैयारी तो कहां संभव है ? शास्त्रकार कहते हैं कि- जिसके मन-वचन-काया की तीनों प्रकार की प्रवृत्ति में सुसंगतता न हो, समानता न हो, विसंगतता और विपरीतता हो यह माया मृषावादी का लक्षण है। जो मन से जैसा सोचे-विचारे वैसा तद्नुरुप बोले और उससे विपरीत बोले, और बोलकर भी प्रत्यक्ष करने में और ही उल्टा कुछ विपरीत तीसरा ही प्रकार करे वह मायामृषावादी कहलाता है। बोलकर भी, किसी को किसी विषय में वचन देकर भी फिर मायाकपट करके किस तरह उस बात को उड़ाना ? और उस बात को उड़ाने के लिये कपटपूर्वक झूठ बोलने की आदत मायामृषावाद कहलाता है। वह किसी भी तरह ऐसा झूठ बोलेगा जिससे उसकी बात तो उड़ जाय, वह सह साबित कर देगा कि मैंने तो मैंने तो यह बात कहीं नहीं थी और स्वयं छूट कर आपको अपराधी ठहराने की कोशिश करेगा। मायापूर्वक ही झूठ (मृषावाद) बोलने की आदत मायामृषावादी की रहती है और स्वयं छूटकर आपको कैसे कीचड़ में फंसाना ? यह उसकी जाल रहेगी। स्वयं पानी के बाहर पाल पर बैठकर पानी को मछली को दूर से कैसे पकड़ें ? और मछली को यह पता भी न चले, उसे इस बात की गंध भी न आए कि मुझे पकड़ने वाला है अतः खाद्य पदार्थ-खाने की वस्तु कुछ डाल दी जाती है। और इस तरह मछली को फंसा ली जाती है। मायामृषावादी की यही मायाजाल, यह वाक्यजाल मनुष्यों का, कई लोगों को फसाने का काम करती है। एक सामान्य दृष्टांत देते हुए बताया है कि मायामृषावादी कैसा नाटक रचता है-

मायामृषावादी का मायावी नाटकः-

उपदेशसप्ततिका नामक ग्रंथ में एक दृष्टांत इस प्रकार दिया है- तिलकपुर नगर में धर्मबुद्धि और पापबुद्धि नामक दो बनिए रहते थे। स्वभाव से ही एक सरलस्वभावी, भद्रिक परिणामी, परहितचिंतक, सत्यवादी सज्जन था उसका नाम गुण के अनुरुप धर्मबुद्धि था और दूसरा महामायावी कपटी, ठगवृत्तिवाला असत्यवादि परगुणद्वेषी, विश्वासघाती, दंभी स्वभाववाला, अतः वह पापबुद्धि के नाम से पहचाना जाता था। व्यापार के निमित्त दोनों में मित्रता हुई। इस मैत्री को लोग काष्ठ और करवत का योग कहते थे। वह करवत के जैसा पापबुद्धि बिचारे भोले-भाले धर्मबुद्धि को काट डालेगा। दो टुकड़े कर देगा।

दोनों मिलकर व्यापारार्थ विदेश गए। भाग्यवश काफी पैसा कमाया। स्वदेश लौटते समय पाप बुद्धि ने कहा- अरे भाई ! जंगल में से गुजरना पड़ता है अतः धन यहीं एक जंगल में वृक्ष के नीचे गाड़ दें, और कभी मौके पर आकर ले जाएंगे। नहीं तो रास्ते में कहीं ठग लूट लेंगे। बेचारा धर्मबुद्धि

उसकी बात में आ गया। उसे कहां पता था कि यही ठग मुझे लूटने वाला है ? एक वृक्ष के नीचे धन गाड़कर दोनों गांव में गये और दो-चार दिन बाद एक दिन चुपके से आकर पापबुद्धि सब धन निकालकर चुरा गया। समय आने पर पाप बुद्धि ने ही कहा अरे भाई ! अब चलो वह धन निकाल लावें। मुझे भी थोड़ी जरुर है। दोनों मिलकर गए। निशानी वाले वृक्ष के नीचे देखा, खड्डा खोदा तो कुछ भी नहीं था। यह देखकर धर्मबुद्धि तो हक्का-बक्का रह गया। यहां तक तो पापबुद्धि ने माया-कपट की वृत्ति रची। अब आगे मृषावाद का भी सेवन करेगा। इस तरह माया और मृषावाद दोनों ही पाप का साथ में सेवन करता है।

आखिर पापबुद्धि ने धर्मबुद्धि मित्र को फटकारना शुरु किया। दो गलियां सुनाने लगा। तू ही चोर है। ....और कहता कहता राज दरबार में राजा के सामने जाकर शिकायत की। हे राजन् ! इसने सब धन चुरा लिया है। वैसे भी पापी ज्यादा चतुर होता है। वह ज्यादा चालाकी करता है। इससे धर्मबुद्धि को तो इतना आघात लगा कि क्या बोलना ? क्या जवाब देना यही पता नहीं चलता था। वह बेचारा किंकर्तव्यमूढ़ बन चुका था। राजा ने पूछा- तुमने धन जहां गाड़ा था वहां कौन साक्षी है ? और क्या धर्मबुद्धि ने धन लिया है, इस बात में भी कोई साक्षी है कोई प्रमाण ? मायामृषावादी को असत्य बोलना सहज और सरल होता है अतः उसने एक क्षण में हां भर दी। जी हजुर साक्षी है। राजा ने कहा- अच्छा सुबह जंगल में चलेंगे। और देखेंगे। तलाश करेंगे। इधर पापबुद्धि ने तुरन्त घर जाकर अपने वृद्ध पिता को कहा कि- आप अभी तुरन्त घर जाकर अपने वृद्ध पिता को कहा कि आप सभी रात को जाइए और वहां एक वृक्ष है जो अंदर से पोला है, तथा बाहर बड़ा खड्डा दिखाता है उस वृक्ष में घुसकर बैठना। कल सुबह जब राजा के साथ सब आएंगे और पूछेंगे तब आप कुछ विचित्रासी ध्वनि निकालकर कहना हां हां दोनों ने मिलकर धन यहां गाड़ा और धर्मबुद्धि परसों निकालकर ले गया है। बस ऐसी ध्वनि में बोलना जिससे देववाणी, भविष्यवाणी लगे और धर्मबुद्धि पकड़ा जाय। ठीक तरह से पापबुद्धि ने नाटक रच लिया।

सुबह राजा, मंत्रीवर्ग, नगरजन आदि सैकड़ों लोग जंगल में गये और कुतुहल वश सब इकट्ठे हुए। पाप बुद्धि तो बड़ा खुश था। अभी सत्य प्रगट होगा इस तरह सबको कहता था। इधर राजा के पूछने पर वृक्ष की पोल में छिपे हुए पापबुद्धि के वृद्ध पिता ने कृत्रिम और विचित्र ध्वनि निकालते हुए कहा.... हां दोनों ने धन गाड़ा था लेकिन परसों धर्मबुद्धि अकेले ही आकर सब ले गया था। ये आवाज और शब्द बाहर आते ही पापबुद्धि ताल बजाकर नाचने लगा ! और धर्मबुद्धि को जूते मारने लगा। लोग सभी आश्चर्यवश बातें करने लगे। अरे रे ! इतना अच्छा बेचारा धर्मी और कैसी चोरी की.... इत्यादि। लेकिन इधर राजा ने उस पापबुद्धि को पकड़कर अभी परीक्षा (न्याय) पूरी कहां हुई है ? ठहर। इस वृक्ष में कौन रहता है ? पापबुद्धि अरे हजुर ! वनदेव इसमें रहता है। वे मेरे ऊपर प्रसन्न है। राजा ने कहा- ठहरो ! देव रहता है। ऐ सैनिकों इस वृक्ष को आग लगा दो। घासतेल खूब डालकर चारों तरफ आग लगा दो। घासतेल खूब डालकर चारों तरफ आग लगा दो। देखें इसका देव कैसा है ? और आग लगाते ही अन्दर से वृद्ध पिता चिल्लाया बचाओ.... बचाओ.... कहता हुआ कूदकर बाहर आया। लोगों ने पहचाना अरे ये तो पापबुद्धि का ही वृद्ध पिता है.... और पापबुद्धि को लोगों ने मारना-पीटना शुरु किया। आखिर पाप का घड़ा फूट गया और पाप छिपाया-छिपता नहीं है। दबाया-दबता नहीं और पाप प्रगट होकर ही रहता है। राजा ने उसे सजा दी और सब धन धर्मबुद्धि को दिया।

अभी जिसकी चर्चा गरम-गरम चल रही है वह बेचारा तथाकथित भागा हुआ भगवान अमरीका में कोर्ट की सारा गुना कबूल करके चार लाख डॉलर का जुर्माना भरकर उसे अमरीका छोड़कर भागने का हुक्म होने पर भागकर यहां भारत आया है और अब मानो मुझे भारत की मातृभूमि की शरण मिली हो इस तरह अब अपनी प्रतिष्ठा के नाश के भय से मायामृषावाद का सेवन करते हुए बेचारा बोल रहा है- अमरीका तो नर्क है। मैंने तो मेरे भक्तों को खुश करने के लिये ही गुनाह कबुल किया है परन्तु मैं गुनहगार नहीं हूं। मेरे जितना सच्चा और निर्दोष जगत में कोई मिलेगा नहीं। अमरीका को नष्ट कर देना चाहिये और न मालूम क्या-क्या कैसी -कैसी बातें बना रहा है। क्या दुनिया के करोड़ों लोग मूर्ख है ? क्या यह बेचारा अपने आपको भगवान कहलाने वाला सबको मूर्ख बना सकता है ? क्या दुनिया इसकी पापलीला और भोगलीला नहीं जानती है ? क्या इन शब्दों को, शब्दजाल में सभी फस जाएंगे इतने मूर्ख लोग है ? अरे भाई ! पापी की जाल ऐसी ही होती है। सब प्रकार के पाप करने के बाद उन पापों को ढकने के लिये भी अक्सर लोग मायामृषावाद का आश्रय लेते है। यह मायामृषावादी झूठा बोल भी सकता है और झूठा कर भी सकता है। मायाजाल, वाकूजाल का विचित्र नाटक भी खड़ा कर सकता है। इसको झूठ करना, झूठा विपरीत करना, दंभ भरना, ठगवृत्ति करना, वंचना करना, विश्वासघात करना सब आता है और बुद्धि चातुर्य ज्यादा हो तो समझो वह हजारों को बना सकता है। ठग सकता है। असत्य को सत्य का रुप दे सकता है। आखिर धर्मी से ज्यादा पापी विशेष चतुर होता है। **(आगे और भी है...!)**

✽ अंहकार और हीन भावना दोनों ही मम भाव के परिणाम है, मम जब गलेगा तभी मंगल होगा।

भारत के प्राचीन हस्तप्रत भंडार

✲ वैराग्यरतिविजय

गतांक से आगे....!

10-सरस्वती महल (तंजौर)- विक्रम की दसवीं शताब्दी में महाराजा सरफोजी ने इसे और अधिक समृद्ध बनवाया।

11-धार (मालवा)- प्राचीन धारा नगरी अर्थात् वर्तमान में धार, राजा भोज की राजधानी थी। भोज स्वयं विद्वान था। उसकी सभा में उत्तमोत्तम पंडित थे। राजा भोज द्वारा स्थापित ज्ञानभंडार का उस काल में काफी महत्वपूर्ण स्थान था। बारहवीं सदी में सिद्धराज जयसिंह ने धारानगरी पर विजय प्राप्त करके यहां का ग्रंथ भंडार पाटन भेजा था।

12-जैसलमेर (राजस्थान)- ग्यारहवीं सदी में जैसलमेर में दस ग्रंथ भंडार थे। पंद्रहवीं सदी में आचार्यश्री जिनभद्रसूरीजी के मार्ग दर्शन में यहां एक बड़ा ग्रंथभंडार स्थापित हुआ था।

13-आगरा- विक्रम की सोलहवीं सदी में यहां अकबर शाही पोथीखाना (ज्ञानभंडार) था जिसमें 30 हजार हस्तप्रतें थी। अकबर ने पं. पद्मसुंदरगणि का भंडार आचार्यश्री हीरविजयसूरीजी को भेंट स्वरुप प्रदान किया था। यह ग्रंथ भंडार आगरा में ही पुनः अकबर के नाम से ही स्थापित हुआ।

14-आमेर (राजस्थान)- आमेर के राजा भारमल्ल ने ई.सन् 1592 (वि.सं.1656) में अपने राजघराने का ज्ञानभंडार स्थापित किया था। आमेर राजवंश के चार सौ वर्षो के राज्यकाल में यह भंडार सर्व समृद्ध था। जिसमें 7000 दुर्लभ ग्रंथ उपलब्ध थे।

उपरोक्त जानकारियां केवल उन्हीं ग्रंथभंडारों के विषय में दी गई है, जिनके नाम सर्वोपरि ज्ञात हुए हैं। वैसे भारत के प्राचीनतम भंडारों की बहुत कम जानकारियाँ उपलब्ध हो पाती है। उपरोक्त भंडारों के अतिरिक्त भी ऐसे और भी अनेक भंडार थे जिनके नाम पहचानना भी कठिन है। प्राचीनकाल में अनेक राजा अपने संग्रह में भिन्न-भिन्न विषयों की हस्तप्रतें रखवाते थे। प्रत्येक राजा का एक सर्वसामान्य पुस्तकालय होता था। उस काल की पाठशालाओं में भी प्रचुर मात्रा में हस्तप्रतें संग्रहित की जाती थी। मंदिरों, मठों, विहारों एवं जैन उपाश्रयों में काफी तादाद में हस्तलिखित पांडुलिपियों का लेखन-संग्रह होता था। वैद्यकीय क्षेत्र के निष्णातों के भी पृथक संग्रहालय होते थे। मंत्री, पुरोहित और विद्वान लोगों का भी अपना व्यक्तिगत संग्रह होता था। आज भी अच्छे प्रयास से उस प्राचीन विरासत की खोज की जा सकती है, मगर उस तरह की प्यास आज तो कहीं से भी उठती नहीं दिखायी देती है।

कालांतर में अंग्रेज भारत आये और यहां भी यंत्रयुग की शुरुआत हुई। शिक्षा व्यवस्था में बड़े बदलाव आये। भारत की परंपरागत जीवनशैली के साथ ज्ञानपद्धति ने भी नया रुप धारण कर लिया। परिणामस्वरुप भारत की प्राचीन ज्ञानसंपदा की वह अद्भूत विरासत भी उपेक्षित होने लगी। अनेक संग्रहालय देखरेख के अभाव में स्वयं ही नष्ट होते चले गये। अनेक ज्ञानभंडारों को तो अज्ञानी लोगों ने पानी में बहा दिया। अनेक ग्रंथ भंडार ऐसे थे जिन पर अंग्रेज विद्वानों की नजर पड़ी। उन्होंने अपने प्रयास से शोध करवाना प्रारंभ किया और यहीं यहीं से हस्तप्रतों की शोधयात्रा प्रारंभ हुई। इधर-उधर बिखरी पड़ी प्राचीन प्रतों को जमा करने का काम शुरु हुआ। उस समय संग्रहीत हस्तप्रतों के लिए लाइब्रेरी सोसायटी जैसी संस्थाओं का गठन हुआ। यह सिलसिला भारत की स्वतंत्रता के बाद भी चलता रहा। नयी सरकार के हाथ भी अनेक व्यक्तिगत संग्रह और सार्वजनिक संग्रहालय आये। प्रसंगवश ऐसे संग्रहालयों का उल्लेख करना भी यहां जरुरी है-

1- राष्ट्रीय अभिलेखागार (दिल्ली)- 11 मार्च 1891 में अंग्रेजों द्वारा इंपिरियल रेकार्ड डिपार्टमेंट की स्थापना हुई थी बुल्हेर, पीटर्सन, मित्रा और भांडारकर जैसे देशी-विदेशी विद्वानों ने संपूर्ण भारत में उपलब्ध हस्तप्रतों का सर्वेक्षण किया। काफी संख्या में हस्तप्रतों की खरीद भी की गई और एक बड़ा संग्रहालय दिल्ली में स्थापित हुआ। इस संग्रह में हस्तलिखित पांडुलिपियों, शिलालेखों के साथ प्राचीन मूर्तियों एवं काफी पुरातत्वीय वस्तुओं का समावेश हुआ। लगभग एक लाख हस्तप्रतें यहां संग्रहीत हुई। आजादी के बाद इस संग्रहालय का नाम बदलकर राष्ट्रीय अभिलेखागार किया गया। अनेक हस्तप्रतों की माइक्रोफिल्म (सूक्ष्म छाया चित्रण) बनाकर उन्हें यहां सुरक्षित रखा गया है।

2- खुदाबख्श लाइब्रेरी (पटना)- ईसा 1815 से 1876 के दरम्यान महम्मद बख्श नामक ईस्लामी व्यक्ति ने पटना में यह संग्राहालय बनवाया था जिसे उसने अपने पुत्र खुदाबख्श का नाम दिया था बाद में खुदाबख्श ने इस

संग्रहालय में और भी अधिक हस्तप्रतों को जोड़कर इसे सार्वजनिक पुस्तकालय के रुप में रुपांतरित कर दिया। आज इस संग्राहलय में लगभग 12000 हस्तप्रतें हैं जिसमें 1300 वर्ष पुराना कुरान का एक पन्ना भी है। इसके अलावा हुमांयू जहांगीर और शाहजहां के हस्ताक्षर वाले पत्र भी रखें हैं।

3- सिधिंया पुस्तकालय (उज्जैन)- विक्रम विश्वविद्यालय परिसर में सिंधिया प्राच्य शोध संस्थान के नाम से वर्तमान में यह संग्राहलय है। यहां लगभग 2500 दुर्लभ ग्रंथ है, जिसमें एक ग्रंथ गुप्तकालीन लिपि में लिखा गया है। यह ग्रंथ काश्मीर के गिलगिट क्षेत्र में मिला है, जिसे भोज और ताड़पत्र पर लिखा गया है।

4- भरतपुरा- श्री गोपालनारायणसिंह ने 4000 हस्तप्रेतों का संग्रह किया था, जिसमें कुछ प्रतें नीलम और सच्चे सोने की स्याही लिखी गई है।

5- प्राच्यविद्या मंदिर (बड़ोदा)- गुजरात में श्रीमंत सयाजीराव गायकवाड़ द्वारा स्थापित विद्यापीठ में 7834 हस्तप्रतों का संग्रह है। इनमें से कुछ प्रतें उन्होंने स्वयं लिखवायी थी और बाकी अन्य भंडारों से प्राप्त हुई थी।

6- लालभाई दलपतभाई संस्कृति विद्यामंदिर (अहमदाबाद)- आगम प्रभाकर मुनिराज श्री पुण्यविजयजी म.सा. ने अपने संग्रह की दस हजार हस्तप्रतें इस संस्थान को अर्पण की है। इसके बाद गुजरात के अनेक गांवों में स्थित भंडारों की प्रतों का भी इसमें समावेश होता गया। आज इस संस्थान में लगभग एक लाख हस्तप्रतें उपलब्ध हैं।

7- आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञान भंडार (कोबा-अहमदाबाद)- परम पूज्य आचार्यदेव श्री पद्म सागरसूरीजी म.सा. ने संपूर्ण भारत में भ्रमण करते हुए भिन्न-भिन्न स्थानों पर, जहां हस्तप्रतों का समुचित संग्रह नहीं हो पा रहा था, ऐसे अनेक ग्रंथालयों से एकत्रित करके विशाल ज्ञानभंडार की स्थापना की। हस्तप्रतों के संरक्षण की उत्तम व्यवस्था तैयार की। वर्तमान में यहां लगभग 2 लाख हस्तप्रतों का संग्रह है। संस्था द्वारा यहां उपलब्ध प्रतों की नकल सहजता से उपलब्ध करवाई जाती है। संभवतः भारत ही नहीं, अपितु विश्व का यह सबसे बड़ा हस्तप्रत संग्रह है।

8- भांडारकर रिसर्च ईन्स्टीट्यूट (पूना)- यहां 29500 हस्तप्रतों का संग्रह है, इनमें लगभग 7000 से अधिक जैन हस्तप्रतें है। उपरोक्त भंडारों के अतिरिक्त मद्रास, नागपुर, लखनऊ सूरत, (विंचेस्टर संग्रहालय) अजमेर, वाराणसी (भारतीय कला भवन, संपूर्णानंद विश्व विद्यालय, पार्श्वनाथ विद्यापीठ, बनारस हिन्दू युनिवर्सिटी) कलकत्ता, बीकानेर, अलवर, कोटा, प्रयाग, सिमला, हैदराबाद (सालारजंग संग्रहालय) टोंक (कुतुबखाना ए-सैयदिया) आदि संग्रहालयों (Museum) अथवा संशोधन संस्थानों में भी हस्तप्रतों का संग्रह मिलता है।

पूर्वकाल में राजस्थान के प्रत्येक गांव में, जहां उपाश्रय होते थे, वहां हस्तप्रतों का भी संग्रह होता था। उस काल के कई यतियों ने अनेक हस्तप्रतों को सरकारी संग्रहालयों को भेंट कर दी और काफी हस्तप्रतें अन्य संस्थाओं में चली गई। इसके बावजूद आज भी अनेक स्थानों पर काफी हस्तप्रतें अस्त व्यस्त पड़ी दिखाई पड़ती है।

विदेशों में नेपाल, श्रीलंका, चीन, सीरिया, मैक्सिको, स्पेन, लंदन, जर्मनी, अस्त्रापात (रशिया) बुखारा आदि स्थानों पर भी प्राचीन भारतीय हस्तप्रतें होने की संभावना है। मिथिला, नवद्वीप, वैशाली, प्रयाग, अयोध्या आदि भारत के प्राचीन विद्या केन्द्र रहे है। वहां भी ज्ञानभंडारों में हस्तप्रतों के संग्रह की परंपरा थी।

वियन्ना विश्वविद्यालय के प्रोफे सर डॉ. डोमिनिक वुजास्तिक ने भारतीय पांडुलिपि नामक एक शोधपत्र प्रस्तुत किया है। उसके समापन में वे बताते है कि-

हस्तप्रत भारतीय साहित्य की आधारशिला है। इसमें भरा ज्ञान महासागर जितना है। अगर उस प्राचीन विरासत के ज्ञान का पुनरुत्थान करने की मंशा हो और गंभीर विषयों की जानकारी की जिज्ञासा हो, तो सबसे पहले वर्तमान भारतीय विश्वविद्यालयों को अंग्रेजी भाषा और साहित्य की बंदिस्तों से बाहर आने की आवश्यकता है। इसके अलावा व्यापक रुप से भारतीय अभिजात भाषाओं (प्राकृत, संस्कृत,आदि) के अध्ययन को पुनः गति प्रदान करनी पड़ेगी। हस्तप्रतों में छिपी प्राचीन ज्ञान की बहुमूल्य विरासत के लुप्त हो जाने से पूर्व यह कार्य कोई शक्ति गुरु करेगी, यह देखना शेष है। विशेषतः क्या श्रमणप्रधान चतुर्विध संघ इस उपेक्षित क्षेत्र पर गंभीर दृष्टिप्रदान करना जरुरी समझेगा? यह प्रश्न भी प्रासंगिक है।

- (हिंदी रुपांतर-ओम ओसवाल)

❊ भाव किसी के लिए भी बिगाड़ो, भव तो अपना ही बिगड़ेगा।

मैं अभय

✻ पू.आ.श्रीमद् विजयमुक्ति/मुनिचन्द्रसूरीश्वरजी म.

आठ वर्ष की उम्र तक तो मुझे पता भी नहीं था कि मेरे पिताजी कौन है ? मैं तो मेरे नानाजी को ही पिताजी समझता था। यह तो खेलते समय मुझे किसी ने ''पितृहीन'' का ताना मारा और मैंने मेरी माँ को पूछा। इससे पता चला कि मेरे पिताजी तो कोई दूसरे ही है। मेरी माँ का नाम नंदा। मैंने उससे पूछा तब उसने कहा- आठ साल के पहले मेरी शादी तेरे पिताजी ने किसी अनजान परदेशी युवक के साथ की थी। वे यहां कुछ समय रहकर कोई ऊंटवाले के बुलावा आने पर तब चले गये हैं। उसके बाद आज तक उनके कोई समाचार नहीं है। जब वे गये तब तू गर्भ में था। इसलिए तुझे उनका पता भी कैसे होगा ? हाँ.... एक यह पत्र देकर गये हैं। तू पढ़। इसमें कुछ लिखा है सही।

मैंने पत्र पढ़ा। उसमें लिखा था- **''राजगृहे गोपालाः वयम्''** दूसरा कोई हो तो ऐसा ही समझते कि यह कोई राजगृह का ग्वाला होगा, परन्तु मैं तो समझ गया कि मेरे पिताजी ग्वाले नहीं, लेकिन राजा है। ''गोपाल'' का अर्थ राजा भी होता है। ''यो'' यानि पृथ्वी। ''पाल'' यानि पालन करनेवाला। पृथ्वी का पालक राजा ही होता है न ?

मैं तो अपनी माँ को लेकर, नाना के आर्शीवाद लेकर, राजगृह की तरफ चल पड़ा। बेन्नातट से अविरत प्रयाण करते कुछ समय के बाद मैं राजगृही पहुंचा। मुझे लगा- यों ही माँ को यहां ले आना ठीक नहीं। पहले मैं नगर में जाऊं। देखूं.... और उसके बाद माँ को लेकर जाऊं। मेरी माँ को मैं उद्यान में छोड़कर राजगृह की तरफ जाने लगा। वहां रास्ते में ही मैंने लोगों का समूह देखा। मैं उस तरफ गया। मैंने किसी को पूछा- यह क्या है ? इतना कोलाहल क्यों है ? तब उसने कहा- श्रेणिक राजा के चार सौ निन्यानवें मंत्री है किन्तु अब उन सबका नेता, तीक्ष्ण बुद्धिशाली मंत्री ढूंढ रहा है। पांच सौ वां ऐसा कोई बुद्धिशाली मंत्री मिल जाये इसलिये राजा ने बीच बाजार परीक्षा का उपक्रम किया है। मैंने पूछा- किस तरह की परीक्षा है ? उसने कहा- मैं यही बता रहा हूं। एक गहरे खाली कुएं में अंगूठी डालकर घोषणा की है कि जो कुंए के किनारे पर खड़ा रहकर अंदर रही हुई अंगूठी को बाहर निकालेगा उसे मुख्यमंत्री बनाया जायेगा। इस कारण यह लोकासमूह इकट्ठा हुआ है। तभी कल्पना के अश्व दौड़ रहे हैं, बुद्धि लगा रहे हैं, परन्तु किसी के प्रयत्न अब तक सफल नहीं हुए हैं। यह सुनकर मेरे मन में विचार-बिजली चमकी- यह मौका अच्छा है। मुझे यह झड़प लेना चाहिये। मेरी बुद्धि की चमक बताने की यह अद्भूत तक है। मानव योग्य मौका प्राप्त करने के लिये बहुत मेहनत करता है, लेकिन जब मौका सामने से आ जाता है तब वह हतप्रभ हो जाता है। बाद में शिकायत करता रहता है। क्या करें ? हमारे जीवन में अच्छा मौका मिला नहीं। नहीं तो हम भी जीवन में ''कुछ'' कर दिखाते। मेरी दृष्टि से मनुष्य की यह फरियाद बिलकुल गलत है। आप में यदि योग्यता हो तो अनेक मौके आपके सामने ही पड़े हैं। मौके तो क्षण-क्षण मनुष्य को पूछ रहे हैं- मैं तो आपको मेरा सर्वस्व देने के लिये तैयार हूं। बोलो, तुम्हारी तैयारी कितनी हैं ? लेकिन मनुष्य की यह कमजोरी है कि वह अपने दोष या अपनी अयोग्यता देखता नहीं है, किंतु दूसरों पर दोष का झाबा डालकर स्वयं ''निर्दोष'' है ऐसे कहने के लिये प्रयत्न करता रहता है।

मैंने यह मौका झड़प लेने का निर्णय किया। उस बुजुर्ग को कहा- ओह ! इसमें कौन सी बड़ी बात है ? मैं अभी ही जाता हूं और कुंए में से अंगूठी बाहर निकालकर बताता हूं। मेरी बात सुनते ही वह भाई हंस पड़ा। सिर्फ वही नहीं, आसपास रहा हुआ जनसमूह भी हंस पड़ा। सब एक साथ बोल उठे- अरे बच्चे ! बड़े-बड़े श्रीमंतों ने भी जहां हाथ धो डाले वहां तू क्या करेगा ? तेरी उम्र कितनी ? तेरी बुद्धि कितनी ? तेरा अनुभव क्या ? तुझसे दस गुनी दिवाली दिखानेवाले भी धूल चाटते रह गये हैं। इसलिये तू शांति से देखा कर। मेहरबानी करके होशियारी का दिखावा करके बुद्धि का प्रदर्शन मत करना। नाहक तेरी फजेती होगी। तेरी फजेती हो ऐसा हम नहीं चाहते। मैं तो टोले की बात का कोई भी जवाब दिये बिना आत्मविश्ववास पूर्वक आगे बढ़ा। रास्ते में दूसरे भी और लोगों ने लगभग ऐसी ही सलाह दी। सचमुच ही ''टोला'' कभी यह स्वीकार करने के लिये तैयार नहीं होता कि हमसे कोई आगे बढ़ जाये। समूह अधिकतर एक जैसा ही सोचने का आदि होता है। वह एक जैसे ही विचारों से बंधा हुआ होता है। वह कभी ऐसी कल्पना भी कर नहीं सकता कि इससे अन्यथा भी सोचा जा सकता है। समस्या का हल हम सोचते हैं। उससे भिन्न-भिन्न रुप से भी हो सकता है। हम से छोटी उम्रवाले भी इसका रास्ता ढूंढ सकते हैं। ऐसे कोई विचार टोले को

नहीं आते। ऐसे टोले की बात जो सुनता है वह कभी आगे बढ़ नहीं सकता। लेकिन मैं टोले की ऐसी खासियत जानता था। मुझे टोले से ऊपर उठकर मेरी स्वतंत्र प्रतिभा के दर्शन करवाने थे। मैं तो सीधा राजा के पास जा पहुंचा। मैंने कुएं में से अंगूठी निकाल देने की बात की। शुरु में तो राजा और आसपास के सभी लोग मेरी बात की हंसी में निकाल दी, फिर राजा को लगा- देखने तो दो.... यह लड़का क्या करता हैं ? कई बार कुछ छोटे बच्चों की तीक्ष्ण बुद्धि बड़ों को भी अचंभित कर दे वैसी होती है। शायद यह लड़का सफल नहीं भी हो। लेकिन उससे क्या हुआ ? बहुत बड़े बड़े भी निष्फल गये हैं ! राजा की कृपा से मुझे ''मौका'' मिला। मैंने राजा से कहा- राजन् ! मुझे इसके लिये जिन-जिन चीजों की आवश्यकता होगी उसे लाने का आपको प्रबंध करना पड़ेगा। गोबर, घास का पूला और पानी- ये चीजें मेरे पास हाजिर करो। मैं थोड़ी देर में अंगूठी निकालकर देता हूं। राजा के हुकुम से सभी चीजें हाजिर हो गयी।

सभी लोग मुझे आश्चर्य चकित नयनों से देख रहे थे। मैंने अपना प्रयोग चालू किया। गोबर का लौंदा बनाकर मैंने कुएं में रही हुई अंगूठी पर फेंका। अंगूठी उस पर चिपक गई। फिर घास एक तरफ जलाकर मैंने उस पर फेंक दिया। उसकी गर्मी से भीना गोबर सूख गया। फिर मैंने कूंए को पानी से भरने को कहा। राजा की आज्ञा से कुंआ तुरन्त ही पानी से भर गया। वह गोबर पानी की सपाटी पर आ गया। उसके साथ चिपकी हुई अंगूठी भी उपर आ गई। पानी में से उसको निकालकर मैंने राजा को दी। राजा हर्ष से गद्‌गद् बन गये। मुझ पर उनका स्नेह बरस पड़ा। मुझे उन्होंने वात्सल्य से नहला दिया। जब उनको पता चला कि मैं उनका पुत्र ही हूं तब उनके आनंद का तो पूछना ही क्या ? मेरी माँ नंदा के बारे में पूछा तब मैंने बताया कि वह नगर के बाहर उद्यान में है। राजा मेरी माँ को लेने गये। मैं पहले ही अपनी माँ के पास पहुंच गया था। सभी समाचार दिये। मेरी माँ आनंद से झूम उठी। नये कपड़े, गहने इत्यादि पहनने की वह तैयारी करने लगी। तब मैंने कहा- माँ ! जल्दी मत करो। अभी श्रृंगार सजना रहने दे। पति के विरह में कुलीन स्त्रीयां श्रृंगार रहित ही रहती है। इसलिये तू पहले रहती थी उसी तरह रहना। जिससे कुछ शंका का कारण नहीं रहे। माँ ने मेरी बात मानी। मेरे पिता श्रेणिक ने हर्षपूर्वक हमारा स्वागत किया और अपने आवास में ले गये। तब से मैं पिता की सेवा में रहने लगा। उम्र में मैं छोटा होने पर भी सभी मेरी सलाह लेते रहे। बड़ा होकर मैंने बुद्धि के प्रभाव से बहुत बार राज्यरक्षा की है और धर्म की प्रभावना भी की है। मेरे जीवन के कुछ प्रसंग संक्षेप से आपको कहूं ? आपको बहुत ही आनंद होगा।

एक बार किसी लकड़हारे ने सुधर्मास्वामी के पास दीक्षा ली। तब नगर के लोग निंदा करने लगे- देखा ? न मिली नारी और न बाबा बने ब्रह्मचारी ! लकड़हारे के पास था ही क्या ? ऐसे भिखारियों को क्या दीक्षा देते होंगे ? जैन धर्म की निंदा होती देखकर सुधर्मास्वामी विहार की तैयारी करने लगे। मुझे पता चलते ही मैंने उनको रोका और लोकनिंदा दूर करने का वचन दिया। फिर मोती के तीन ढेर बनाकर बीच बाजार रखवाकर लोगों को मुफ्त में ले जाने को कहा। परन्तु शर्त यह रखी कि मोती लेनेवाला स्त्री, अग्नि या कच्चे पानी को स्पर्श नहीं कर सकेगा। अतः कोई लेने के लिये तैयार नहीं हुआ। तब मैंने कहा-लकड़हारा मुनि इन तीनों शर्तो का पालन करते रहे हैं, फिर भी मोती लेने नहीं आये। बोलो, वे त्यागी है या नहीं ? लोग समझ गये। निंदा बंद हो गई। महाराज का विहार रुक गया।

एक बार सभा में मांस सस्ता है ऐसी चर्चा चली। तब मैं व्यथित हो उठा। मैंने उन सभी को सबक सिखाने का निश्चय किया। दूसरे दिन रात को ऐसी चर्चा करनेवालों के घर जाकर मैंने कहा- महाराजा श्रेणिक अत्यंत बीमार है। वैद्यों ने कहा है कि मनुष्य के कलेजे का मांस तात्कालिक दिया जायें तो ही बच सकेंगे। तो इसलिये आपके पास आया हूं। आप महाराजा के वफादार सेवक है इसलिये कलेजे के मांस देने में जरा भी इन्कार नहीं करेंगे ऐसा विश्वास है। मेरी यह बात सुनकर वह तो स्तब्ध ही हो गया। डगमगा ही जायेगा न ? मेरे बिना कलेजे का मांस कैसे दे सकते हैं ? न दें तो राजा तरफ की वफादारी भी कैसे कहीं जाये ? उसने धीरे से मेरी जेब में सुवर्णमुद्रा सरकाते हुए कहा- मंत्रीवर ! मैं लाचार हूं। ये स्वर्णमुद्राएं लीजिए और इस काम के लिये दूसरी जगह पधारो। मेरी अपेक्षा के मुताबिक ही सब कुछ हुआ अतः मुझे कोई आश्चर्य नहीं हुआ। इस तरह मैं चर्चा करनेवाले सभी मांसलोलुपीओं के घर गया। सभी ने मुझे सवर्णमुद्राएं दी, लेकिन कलेजे का मांस देने के लिये कोई तैयार नहीं हुआ। दूसरे दिन राजा की उपस्थिति में जब मैंने मांस की बात निकाली तब सभी शरमींदा हो गये। मैंने सभी को समझाया कि मांस सस्ता है, लेकिन दूसरों का। स्वयं का मांस तो महंगा है, महंगा ही नहीं किन्तु

बहुत महंगा है। तो बंधुओं ! दूसरे जीवों की भी हमारे जैसे ही हालत होती हैं। यदि हमारे अंदर थोड़ी भी संवेदनशीलता बची हो तो जल्दी से मांस छोड़ देना चाहिये। मेरी प्रेरणा से उन्होंने मांसाहार का त्याग किया।

ऐसा नहीं है कि मैं कभी ठगाया नहीं। कई बार मैं ठगाया भी हूं। अलबत्त धर्म के बहाने से। एक प्रसंग तुम्हें कहूं। उज्जैन का चंडप्रद्योत राजा एक बार बड़ा लश्कर लेकर हमारी नगरी पर चढ़ाई करने के लिये आया। मैंने ऐसी युक्ति लगाई कि उसे युद्ध किये बिना ही भागना पड़ा। बाद में तो बनावट का पता चलते ही दो वेश्याओं को श्राविका के स्वांग में भेजकर मुझे जिंदा पकड़ा। फिर तो मैंने भी चंडप्रद्योत को सबके बीच ले जाने की प्रतिज्ञा की और वह करके भी दिखाया। मेरे संसर्ग में आनेवाले कई आत्माओं का उद्धार भी हुआ है।

अनार्यदेश में रहे हुए एक आर्द्रक नामक राजकुमार ने मेरे साथ दोस्ती का हाथ बढ़ाने के लिये मुझे अच्छे उपहार भेजे। मैंने उसको धर्म के मार्ग पर लाने के लिये प्रभु की मूर्ति भेजी। उसे देखकर जाति स्मरण ज्ञान पाकर आर्यदेश में आकर वह जैन मुनि बना और आत्मकल्याण साधा।

कसाई और खूंखार चोर के पुत्र भी मेरे संसर्ग से धर्माचार्य पर आगे बढ़े है।

कालिया कसाई का पुत्र सुलस, मेरी ही प्रेरणा से सन्मार्ग की तरफ बढ़ा था और पिता का कसाई का धंधा उसने स्वीकारा नहीं।

उस रोहिणिये चोर की बात तो आपने सुनी ही होगी ? उसके पिता लोहखूरने श्री महावीरदेव की देशना नहीं सुनने की उसे प्रतिज्ञा दी थी। एक बार वह पकड़ाया। मैंने उसके पास गुनाह कबूल करवाने देवलोक की माया खड़ी की, लेकिन वह फंसा नहीं। कहां से फंसेगा ? उसने श्रीमहावीरदेव की देशना के कुछ वाक्य सुने थे। सुने नहीं थे, किन्तु सुनाई दिये गये थे। अनिच्छा से भी देशना सुनने से प्राण बचते हो तो उनकी शरण स्वीकारने से क्या नहीं मिलेगा ? इस विचार से उसने दीक्षा ली। मैं उसके चरणों में गिर पड़ा।

मैंने जबसे प्रभु के मुख से सुना कि अंतिम राजर्षि उदयन बननेवाले है, तब से मैंने दीक्षा लेने का निर्णय किया था। क्योंकि मैं जानता था कि राजा यदि राजगद्दी का त्याग नहीं करें तो प्रायः नरक में जाता है। राजसेरी नरकेसरी ! लेकिन मेरे पिता किसी भी तरह से अनुमति नहीं देते थे। वे मगध की गद्दी मुझे सौंपना चाहते थे। एक बार मैंने ऐसा काम किया कि उससे वे गुस्से से चिल्ला उठे- जा.... तू मेरे घर में से बाहर निकल जा। मुझे तो इतना ही चाहिये था। मैं भगवान के पास जाकर मुनि बन गया। यद्यपि, बाद में मेरे पिता को पता चला और वे मुझे लेने आये, परन्तु अब मैं घर जाऊंगा ?

जगत का सर्वोत्कृष्ट श्रमणत्व प्राप्त करके मैं धन्य बन चुका था।

बंधुओं ! मेरी बुद्धि, मेरी प्रगति इत्यादि देखकर आपको हुआ होगा- ऐसी बुद्धि कैसे मिली ? ऐसी प्रगति कैसे हो सकती है ? मेरी बुद्धि और मेरे आत्मविकास का मूल बताऊं? इसलिये मुझे पूर्व भव बताना पड़ेगा। क्योंकि इस भव का अच्छा या बुरा पूर्वभव की अपनी ही करणी का फल है। मेरे पूर्वभव की अपनी ही करणी का फल हैं। मेरे पूर्वभव की बात सुनकर आप चौक उठेंगे। हें...? ऐसा गंवार आदमी भी प्रगति कर सकता है ?

पूर्वभव मैं एक गरीब.... नहीं.... गरीब ही नहीं, मैं भिखारी लड़का था। मुझे भीख मांगता देखकर एक सेठ को दया आयी। मुझे कहा- मैं प्रतिदिन भगवान के मंदिर में पूजा करने जाता हूं। तू मेरे लिये फूल ले आना। इस काम के लिये मैं तुझे एक मन अनाज दूंगा। मैं यह काम करने लगा। एक दिन मुझे भी भगवान की पूजा करने की इच्छा हुई। मैंने अपने पैसों से खरीदे हुए फूलों से भगवान की पूजा की। मुझे अपार आनंद आया। वहां से मरकर मैं महाराजा श्रेणिक का पुत्र अभय बना। मेरी बुद्धि का मूल प्रभु-पूजा में पड़ा हुआ है, यह मत भूलें। प्रभु भक्ति से मिलनेवाली बुद्धि निर्मल होती है। निर्मल बुद्धि कभी भी अकार्य का मार्ग नहीं बताती। आज भी आप लोग ''अभयकुमार जैसी बुद्धि हो'' ऐसा लिखते है वह किसलिए ? बुद्धि तो बहुतों में होती है परन्तु बुद्धि के साथ शुद्धि हो तो ही तारक बनती है, अन्यथा मारक बनती है।

अनादिकाल से जन्म-मरण का क्रम चलता ही रहता है, जिस प्रकार दिन के बाद रात, उत्थान के बाद पतन, सर्दी के साथ गर्मी, सुख के बाद दुःख के क्रम के भांति। जब तक मानव को अपनी आत्मा का बोध नहीं होगा, तब तक इस धरती पर जन्म-मरण का चक्कर चलता ही रहेगा। इसीलिए हे आत्मा। कुछ सोच और शुभ कार्य कर।

अहंकार

✼ राजेन्द्र परदेशी

उस दिन राजा के सामने एक विचित्र भिक्षु उपस्थित हुआ। उसने कहा- राजन् ! तुम्हारे दान-ऐश्वर्य की महिमा सारे भूखण्ड में व्याप्त है। तुम नित्य एक भिक्षु को मुंह मांगी वस्तु देते हो । क्या आज इस क्षुद्र प्राणी को तुष्ट कर सकोगे ? राजा हंस पड़े। भिक्षु ही ठहरा, उसे राजा वैभव की क्या चाह ? उन्होंने उत्तर दिया- पूरा राजकोष तुम्हें अर्पित है।

राजकोष ! भिक्षु मुस्कराया और बोला- राजन् राजकोष पर तुम्हारा कोई अधिकार नहीं है। वह प्रजा की वस्तु है और तुम दूसरे की वस्तु दान नहीं कर सकते।

राजा की जिव्हा जड़ हो गई। तो क्या एक सामान्य भिखारी उन्हें परास्त कर देगा ? नहीं-और वे मुस्कराये।

भिक्षु, तुम उस राजमहल की किसी भी वस्तु को अपनी कह सकते हो, हाथी, ऊंठ, घोड़े, स्वर्णपात्र जो कुछ भी मेरी व्यक्तिगत सम्पत्ति है, वह मैं तुम्हें दे सकता हूं। राजा ने गर्व से कहा। सुनकर भिक्षु कुछ गंभीर हो गया। फिर बोला- राजन् ! मुझे यह जानकर बहुत दुःख हुआ। तुम उस वस्तु पर अपना अधिकार समझते हो, जिसे दूसरों ने केवल तुम्हारी सुविधा के लिए तुम्हें प्रदान किया है।

राजा के हृदय में तीर बिंद्र गया। शायद जीवन में पहली बार उन्होंने अपने को इतना अशक्त अनुभव किया। गली के एक भिखारी ने उन्हें निरुत्तर कर दिया। किन्तु सहसा राजा, अपने ही स्थान पर उछल पड़े- भिक्षु भूल स्वीकार करता हूं। इस शरीर पर पूरा मेरा अधिकार है। मैं उसे तुम्हें सौंपता हूं। राजा का मुखमण्डल विजय-दीप्ति में प्रकाशित हो उठा।

राजन् तुमने कौन से ऋषि के आश्रम में शिक्षा प्राप्त की है- भिक्षु ने गर्वयुक्त मुस्कान से प्रश्न किया।

आशय ? राजा का हृदय डगमगाया।

यही कि तुम्हें इतना भी ज्ञान नहीं कि जिस वस्तु पर समाज का अधिकार हो उसे तुम किसी व्यक्ति विशेष को नहीं दे सकते।

राजा को अपने हृदय की धाड़कन बन्द होती अनुभव हुई। उन्हें लगा कि उनके पैरों तले की धरती खिसक रही है। वे अब गिरे, तब गिरे। सहसा निराशा के अंधकार में भी उन्हें प्रकाश की एक रेखा दिखाई पड़ी। मैं अब तक के अर्जित पुण्य तुम्हें दान करता हूं। राजा ने भिक्षु की ओर इस दृष्टि से देखा कि चक्रवर्ती कभी किसी से हार नहीं मानता। वह हर एक को जीतता है और इसीलिये वह चक्रवर्ती है। राजा के चेहरे पर विजय की रेखाएं उभर आई। उन पर तुम्हारे अगले जन्म का अधिकार बाकी है। उस जीवन से अब आपका कोई संबंध नहीं और विजय भिक्षु की ही रही। उस दिन सहस्रों पुरुषों और नारियों ने विस्फारित नेत्रों से देखा, विजय गर्व से अपना मस्तक उठाए भिक्षु राजमहलों पर अपनी क्षुद्र दृष्टि डालता चला जा रहा था। आज उसने एक चक्रवर्ती सम्राट को परास्त किया था।

सहसा नगर पथ पर कोलाहल मच गया। एकत्र चकित होकर देखा- राजा अस्त-व्यस्त अवस्था में नंगे पैरों भिक्षु के पीछे दौड़ रहे थे। उन्होंने उसे रुकने के लिये कहा। भिक्षु चौक कर वहीं रुक गया। अपने सामने पुनः राजा को देख उसके चेहरे पर मुस्कान उभर आई।

राजन् ! मैं किसी को भिक्षा नहीं देता ! भिक्षु ने व्यंग्य किया। नहीं, मैं उसके लिये नहीं आया हूं। राजा ने उत्तर दिया। तब ?

आज मैंने एक वस्तु तुम्हें अनजाने में ही दे दी और तुमने उसे स्वीकार भी कर लिया।

नहीं बिल्कुल नहीं। भिक्षु ने दृढ़शब्दों में कहा और अपनी खाली हथेलियाँ उनके आगे कर दी।

सुनो मैं पहले उसके भार से झुका रहता था और अब तुम उस भार को ढोकर ले जा रहे हो।

क्या तुम उसका नाम बता सकते हो ? भिक्षु ने अविश्वास की फीकी हंसी हंसकर पूछा।

अहंकार- राजा ने निर्विकल्प भाव से उत्तर दिया। राजा ने कहा- वस्तु गौण है, भावनाएं मुख्य है। मैं देता हूं जितना यह अहंकार है, मैं नहीं लेता हूं, यह भी उतना ही बड़ा अहंकार है। स्वामित्व का भाव ही तो अहंकार है। व्यक्ति की आवश्यकता तो सीमित है। असीमित की जो चाह है, वह अहंकार है। अहंकार प्राप्ति में नहीं, त्याग में भी उपज सकता है। मैंने यह छोड़ा, यह त्यागा, इससे भी व्यक्ति का सूक्ष्म अहंकार पुष्ट तथा तुष्ट होता है और संध्या का बढ़ता हुआ धुंधलापन भी भिक्षु के श्वेत पड़ गये मुख को अपनी गोद में न छिपा सका।

संस्कृति और उसकी विवेचना

संस्कृति शब्द का उपयोग आज विभिन्न अर्थो में होता है। नाच, गाना, प्रहसन, अभिनय आदि का बोध सांस्कृतिक कार्यक्रमों से होता है। इस प्रकार का कोई विज्ञापन प्रकाशित हो तो यही समझा जाता है कि इस आयोजन में इसी प्रकार की गतिविधियां अपनाई जायेगी और दर्शकों का मनोरंजन ही किया जायेगा। यह मनोरंजन कार्य प्रकार उसको अर्थ एवं स्वरुप में विज्ञापित करने वाला रहा होता तो आखिर अच्छा होता।

दूसरे संस्कृति का अर्थ खान-पान, रहन-सहन, वस्त्र परिधान एवं प्रथा परम्पराओं के रुप में होता है। ऐसी संस्कृति प्रायः परम्पराजन्य होनी है उसके साथ क्षेत्रीय सुविधाओं का समावेश होता है। भारत जैसे उष्ण प्रदेश में बार-बार का स्नान, नदी, सरोवरों का अवगाहन संस्कृति है, पर जहां पानी का घोर अभाव है, वहां हाथ धोने के लिये भी पानी नहीं फैलाया जाता वरन् हाथ पर उल्टा बहा लिया जाता है ताकि वह भाग भी स्नानसिक्त मान लिया जाय। हिमानी क्षेत्रों में शीत ऋतु में कोई विरले ही कभी-कभी शरीर को धोते-पोतते है। यह वहां की संस्कृति है जो उष्णता और जल की बहुलता वाले क्षेत्रों से पृथक है।

शिष्टचारों के निर्धारण पुरातनकाल से चले जाते है, उनमें सुविधा असुविधा की बात आरम्भ काल में सोची गई होगी, पर अब तो वह प्रचलन मात्र है। पाश्चात्य देशों में पर नारी और पर पुरुष का नृत्य स्टेजों पर होता है और फूर्तीले नर्तकों के कौशल पर तालियां बजती है। पर जिन देशों में कड़े पर्दे का रिवाज है उन समुदायों में ऐसा करना अश्लीलता समझा और अक्षम्य माना जाता है।

ऐसी दशा में संस्कृति का क्या अर्थ माना जाय ? अरब लोग जिस प्रकार की पौशाक पहनते है, अफ्रीकी वैसी नहीं पहनते। इसी प्रकार भाषाओं में भी अन्तर है और पितरों तथा देवी-देवीताओं की मान्यता के सम्बन्ध में भी। इन सब प्रसंगों को प्रचलन या अभिरुचि, परम्परा भले ही कहा जाय पर उस उद्देश्य की पूर्ति नहीं होती, जिसको लेकर उस गौरवास्पद शब्द का सृजन हुआ है। संस्कृति का अर्थ है- सुसंस्कारिता। सुसंस्कारिता से तात्पर्य है मानवी गरिमा के अनुरुप, चिंतन, चरित्र एवं व्यवहार। इस संदर्भ में बहुत अधिक मतभेद की गुंजा नहीं है। देश, क्षेत्र, जाति, वर्ण सम्प्रदाय के कारण शालीनता का स्तर नहीं गिरता। संयम, सज्ञनता, उदारता, नम्रता जैसे शब्दों में उसका विवेचन किया जा सकता है। दूसरों से हम अपने लिये जैसे व्यवहार की आशा करते है, वैसा ही यदि दूसरे के साथ करने लगे तो समझना चाहिये कि संस्कृति का पूर्वार्ध हुआ। उत्तरार्ध में उदारता, सेवा-साधना, पुण्य-परमार्थ जैसे विषय आते हैं। उनका तात्पर्य मिल-बांटकर खाने और हंसती-हंसाती जिन्दगी जीने से है। इसे ''वसुर्धव कुटुम्बकम्'' सूत्र के अंतर्गत समेटा जा सकता है। कोई व्यक्ति दूसरों को सुखी समुन्नत बनाने की सचमुच ही इच्छा करें तो उसका एक ही आधार हो सकता है कि अपने आपको संयमी, मिनव्ययी, अपरिग्रही और महत्वाकांक्षाओं से रहित बनाये। स्पष्ट है कि आदर्शवादी महत्वाकांक्षाएं पूरी करने के लिये अपनी सुविधा एवं विलासताओं, तृष्णाओं में कमी करनी पड़ती है और औसत भारतीय स्तर का जीवनयापन करते हुए निर्वाह करना पड़ता है। यही वह वचन है जिसे परमार्थ कार्यों में नियोजित किया जा सकता है।

साधुओं की उच्च स्तरीय संस्कृति रही है। उनके व्यक्तिगत जीवन एवं जन साधारण के भावनात्मक नव निर्माणों में संलग्न रहने को ही देव-संस्कृति कहते हैं। भारतीय संस्कृति देव-संस्कृति है। उसके हर पक्ष और प्रतिपादन में उत्कृष्ट चिंतन, आदर्श कर्त्तव्य एवं शालीन व्यवहार के लिये निर्देश है। इस विद्या को व्यवहारिक रुप देने हेतु सादा जीवन उच्च विचार का व्यवहार करना पड़ता है। यह ऋषियों और संत सज्ञनों की परिपाटी रही है। इसी को गांधी, विनोबा जैसे महामानव अपनाते और सर्व साधारण को अपने प्रवचनों से ही नहीं, जीवन यापन के विधि-विधानों से परिचय देते रहते रहे हैं।

भारतीय संस्कृति का एक नाम यज्ञ संस्कृति भी है। यज्ञ का अर्थ है- त्याग, बलिदान, सेवा, पवित्राता। उन गुणों का कथा प्रवचनों में बखान करने से काम नहीं चलता, वरन निज की जीवनचर्या को खुली पुस्तक की तरह रख कर सर्व साधारण को यह बताना पड़ता है कि राजमार्ग क्या है ? जिस पर चलते हुए लक्ष्य तक पहुंचा जा सके।

अग्निहोत्र की क्रिया में अपने उपयोग के पदार्थ वायुभूत बनाकर जन साधारण के लिये वितरित किये जाते हैं। प्रत्यक्षतः

इस प्रकार के रासायनिक यजन का प्रभाव सीमित क्षेत्र में हो सकता है। किन्तु इस क्रिया-कृत्य के पीछे जो भावनाएं जुड़ी हुई है, वे सर्व साधारण के मर्मस्थल तक पहुंचती है और उसे उसी प्रकार विकसित करती है, जिस प्रकार बन्द कलियां सूर्य का प्रकाश उदय होते ही खिलना आरम्भ कर देती है।

मनुष्य मात्र शरीर नहीं है, जिसकी गतिविधियां, आकांक्षाएं किस दिशा में चल रही है, मात्र इसी आधार पर किसी का व्यक्तित्व परखा जा सकता है। गुण, कर्म, स्वभाव से ही यह जाना जा सकता है कि आन्तरिक व्यक्तित्व किस प्रकार का है। उसमें उत्कृष्टता या निकृष्टता के कितने अंश है। बाहर से साज-सज्जा या खर्चों में ठाट-बाट बनाकर कोई व्यक्ति महान नहीं बन सकता। यह बहुरुपिया स्तर की विडम्बना है। मुखौटा चेहरे पर बांध कर कोई व्यक्ति वह नहीं हो सकता जैसा कि अपने को प्रदर्शित करता है। नाटकों में लोग भगवान या महापुरुषों के वेश विन्यास बनाते हैं। पर दर्शक उससे चमत्कृत होते हुए भी यह नहीं मानते कि यह व्यक्ति वैसा ही है जैसा कि आवरण ओढ़कर अपने को प्रदर्शित कर रहा है। संस्कृति शब्द का सरल और सार संक्षेप समझना हो तो उसे ''सादा जीवन उच्च विचार'' के थोड़े से शब्दों में प्रकट अभिव्यक्त किया जा सकता है।

इच्छा का अंत नहीं

संसार की प्रत्येक भौतिक वस्तु प्रतिक्षण क्षीणता की ओर अपना कदम उठा रही है। आज जो आलीशन बिल्डिंग दिखाई दे रही है.... वह भी एक दिन धराशायी हो जाने वाली है.... मिट्टी में मिल जाने वाली है।

मानव की काया जो आज हष्टपुष्ट दिखाई दे रही है, एक दिन वह भी जरा से एकदम क्षीण हो जाने वाली है। आज जो वस्त्र अत्यन्त सुंदर दिखाई दे रहा है, कुछ वर्षो बाद वह भी जीर्णशीर्ण हो जानेवाला है।

आज जिस फर्नीचर को देख मन मोहित होता है....कुछ वर्षो बाद उसे भी नीलाम कर दिया जाता है।

सचमुच, इस दुनिया में नवनिर्मित हर वस्तु जीर्ण-शीर्ण बनती जा रही है परन्तु यह आश्चर्य है कि इन सब जीर्ण वस्तुओं के बीच भी मानव की तृष्णा सदैव नौजवान बनी रहती है। वृद्धावस्था का उस पर कोई असर दिखाई नहीं पड़ता है।

व्यक्ति का शरीर जीर्ण हो जाता है, व्यक्ति बुढ़ा हो जाता है, परन्तु उसकी तृष्णा तो जवान ही रहती है।

भर्तृहरि ने ठीक ही कहा हैं- **तृष्णा न जीर्णा वयमेव जीर्णा।**

मानव जीर्ण हो जाता है, परन्तु उसकी तृष्णा जीर्ण नहीं होती है। बुढ़ापे में भी उसकी इच्छाएं बढ़ती जाती है। खुले आकाश की ओर जब हम दृष्टिपात करते हैं, तब दूर-सुदूर नजर डालने पर धरती और आकाश का संगम होता दिखाई पड़ता है, परन्तु जब हम वहां पहुंचते हैं तो मृगजल की भांति वह संगम पुनः और दूर दिखाई पड़ता है। सचमुच, वह एक मात्र भ्रांति होती है। जैसे आकाश का कोई अंत नहीं है, उसी प्रकार मानवीय इच्छाओं को पूर्ण करना चाहते है, त्यों-त्यों नई-नई इच्छाएं पैदा होती जाती है।

बीजाधान

धर्म मार्ग में बीजाधान सबसे महत्व की घटना है। बीजाधान के बिना प्रत्युपेक्षणादि बाह्य क्रियाएं प्राय: निष्फल होती है। बीजाधान नहीं होने का मुख्य कारण जीव का सहजमहल है। इसका क्षय करने के लिये धीर पुरुषों को प्रयत्न करना चाहिये। बीजाधान और सहजमहल का क्षय वीतराग के प्रति तीव्र बहुमानभाव पैदा करने से होता है। इसके लिये बार-बार विचार करना कि वीतराग परमात्मा कैसे कि जिन्होंने हम पर उपकारों की बरसात की है।

भयंकर संसार रुपी जंगल में वे हमारे लिए मार्गदर्शक बने, विषय-कषाय रुपी लुटेरों से हम लूट न जाये इसके लिये हमारे रखवाले बने। कहीं हम इधर-उधर भटक न जाये इसलिए भव-जंगल में प्रभु ने मार्ग बनाया और बताया.... अरे भगवान स्वयं मार्गरुप बने। संसार रुपी सागर से पार उतरने के लिए भगवान ने घाट (तीर्थ) बनाया। इसीलिए भगवान तीर्थंकर कहलाते है। महाभाग्य हो तो ही ऐसे तीर्थ का आश्रय मिलता है। ऐसे अध्यवसायों को पैदा करने से सहजमल का ह्रास होता है, धर्मरुपी बीज का वपन होता है।

अगर बीजाधान नहीं हुआ तो सभी धर्मक्रियाएं प्राय: व्यर्थ है। जिस तरह बीज बोये बिना किसान की सभी मेहनत व्यर्थ है।

चर्म चक्षु, मनः चक्षु एवं ज्ञान चक्षु

किन्हीं देवी-देवीताओं की प्रतिमाओं में तीन नेत्र दिखाये जाते है। यह मनुष्य में भी पाये जाते है। इनमें से दो दिख पड़ते हैं, तीसरा अदृश्य रहता है। बनावट की दृष्टि से दृश्यमान नेत्र एक जैसे लगते हैं और तीसरे की सत्ता के संबंध में संदेह ही बना रहता है। पर तात्विक दृष्टि से विवेचना करने की-उनके अस्तित्व के चेतना के साथ जुड़े हुए होने की बात सहज ही समझी जा सकती है। उनका अस्तित्व बोधगम्य हो जाता है।

एक को चर्म चक्षु, दूसरे को मनः चक्षु, तीसरे को विवेक चक्षु कहा जा सकता है। चर्म चक्षु को भौंहो के नीचे अवस्थित देखा जा सकता है। वे समीपवर्ती पदार्थों का स्वरुप देखते हैं। व्यक्तियों और पदार्थों की भिन्नता, विशेषता इन्हीं प्रत्यक्ष नेत्रों द्वारा देखी समझी जाती है। यह सभी में होते है। दृष्टि इनकी विशेषता है। इसी के माध्यम से जो पहचान होती है। उसी के आधार पर रुचि, अरुचि, उत्पन्न होती है। जो दिख पड़ता है उसके साथ सम्पर्क साधना या बचना संभव होता है। दूसरा मनः चक्षु कल्पना करता है। चिन्तन उसका प्रधान गुण है। मन की भाग दौड़ सर्वविदित है। वह अनेकों उचित अनुचित कल्पना-जल्पना करता रहता है। बालू के महल बनाता है। इच्छाएं, आकांक्षाएं उभारता है और फिर उनके पीछे-पीछे भागता फिरता है। बच्चे जिस प्रकार तितली पकड़ने के लिये दौड़ लगाते हैं, पर उनसे ऊंची रहने और उड़ने में प्रवीण होने के कारण उन बालकों के हाथ नहीं आती। इसी प्रकार काल्पनिक पदार्थों, परिस्थितियों को हस्तगत करने के पीछे कोई सुनियोजित कार्य पद्धति न होने के कारण वे उपलब्ध नहीं होती। झाग या बबूले की तरह अगणित मनोरथ उठते और विलुप्त होते रहते हैं। अनगढ़ कल्पनाओं से मानसिक शक्तियों का अपव्यय ही होता है किन्तु यदि कल्पनाओं को सुनियोजित ढंग से दिशा विशेष में उठाया दौड़ाया जाय, तो उसी कल्पना सागर में से बहुमूल्य मणि-मुक्तक भी हाथ लग जाते हैं। वैज्ञानिक साहित्यकार, कलाकार, योजनाकार, इंजीनियर आदि बुद्धिजीवी जो उपलब्धियां हस्तगत करते हैं वे सर्व प्रथम उनके कल्पना क्षेत्र में ही आती है। पीछे बुद्धि पूर्वक उनका ढांचा खड़ा किया जाता है। कांट-छांट करके किसी सुनिश्चित आधार को ढूंढ निकाला जाता है।

तीसरा नेत्र विवेक चक्षु है। जिसे दूसरा नाम मात्र भाव चक्षु भी दिया जाता है। संवेदनाएं उसी में उठती हैं अन्य प्राणियों में स्वार्थ सिद्धि एवं आत्म रक्षा की दो प्रवृत्तियां भी प्रधान रुप से काम करती है, पर मनुष्य भावनाशील भी है। उसे दूसरों के दुःख में हिस्सा बांटने और अपने सुखों में दूसरों को साझीदार बनाने की इच्छा भी होती है। वह अन्यायों की व्यथा वेदनाओं के प्रति संवेदनशील होता है। दया, करुणा, सेवा-सहायता, सहानुभूति, संवेदना आदि उदार चता ही में विशेष रुप से पाई जाती है। वे अपने साधनों का उपयोग परमार्थ में करते रहते हैं। जन कल्याण का, विश्व कल्याण का उन्हें ध्यान रहता है। भावनाओं की न्यूनाधिकता ही मनुष्य को निष्ठुर या प्रेमयोगी बनाती है।

विवेक चक्षु के रुप में इसी को समझा जाता है। उचित अनुचित का नीर-क्षीर-विवेक इसी की शक्ति से बन पड़ता है। आमतौर से लोक प्रचलन में भलाई बुराई का इतना सघन सम्मिश्रण है कि उन्हें पृथक कर पाना कठिन पड़ता है। इसके लिये कोई राजहंस परमहंस स्तर के लोग ही सफल होते हैं किन्तु अभ्यास में सब कुछ सरल हो जाता है।

साथी सहयोगी जिस प्रकार सोचते हैं, उसी प्रवाह में अपना चिन्तन भी बहने लगता है। बारीकी में प्रवेश करने के झंझट से बचने की आदत होती है। उथली दृष्टि से देखकर काम चला लिया जाता है। घटनाक्रम जिस दृश्य के रुप में सामने प्रस्तुत है, उसी को पर्याप्त मान लिया जाता है। यथार्थता क्या है ? इसे सोचने जानने की किसी को फुरसत तक नहीं। एक बार एक दार्शनिक कहीं तथा कथित विद्वानों की गोष्ठी में बैठा था। उसने उनकी तत्व की दृष्टि जानने के लिए एक उपक्रम किया। खड़ा हो गया। एक कपड़ा उसके पास था। उसे मोड़ मरोड़कर सिर पर बांध लिया और पूछा-इसका नाम बताये। सभी ने कहा- ''पगड़ी'' फिर उसने उसी कपड़े को तह करके कंधे पर रख लिया- पूछा तो उत्तर मिला ''दुपट्टा''। फिर उसने उसे कमर में लपेट लिया। दर्शकों ने उसे ''फेंटा'' बताया। प्रश्नकर्त्ता ने फिर पूछा कि वस्तु तो एक ही थी, फिर उसके इतने नाम कैसे हो गये ? यह तो कपड़ा मात्र है। जिस रुप में वह प्रयुक्त होता है, उसी नाम से उसे जाना जाता है। यह परिस्थितियां स्थायी नहीं है। वे थोड़े से प्रयत्नभर से बदली जा सकती है। मनुष्य आत्मा भर है। वह जिन परिस्थितियों में रहना आरंभ कर देता है, जिन गतिविधियों को अपना लेता है, उसी के अनुरुप उसकी पहचान बन जाती है। कलेवरों के इस भ्रम में न पड़कर यथार्थता को समझा जाना चाहिये। बच्चे मुखौटे लगाकर दूसरों को डराते है। कई बार अनजाने होने पर स्वयं भी डर जाते हैं। उनके लिये वह दृश्यमान ही सत्य है। पर समझदार बच्चे जानते हैं कि जो आच्छादान चेहरे पर बांधा हुआ है, वह नकली है। शेर का आचरण ओढ़कर कोई शेर नहीं बन सकता। वस्तु

स्थिति प्रायः पर्दे की आड़ में रहती है। रंग मंच पर अनेकों नट-नर्तक विभिन्न वेष-भूषाएं धारण करके अभिनय करते रहते हैं। प्रत्यक्षतः वे वैसे ही लगते भी है पर विचारवान जानते हैं कि राजा या ऋषि बनकर मंच पर सजधज कर बैठा हुआ व्यक्ति वस्तुतः एक साधारण कला कर्मचारी है। यही विवेक दृष्टिहै जिसके उदय होने पर जीवन का स्वरुप समझ में आता है और कर्त्तव्यों का बोध होता है। अन्यथा मनुष्य आकर्षणों और दबावों के बीच कटी पतंग की तरह जिधर-तिधर छितराता हुआ अन्ततः कीचड़ में गिरकर अपनी सत्ता समाप्त कर देता है। दूरदर्शी विवेकशीलता के अभाव में ऐसी ही दुर्गति होती है। लोक कथा प्रसिद्ध है, कुछ अनगढ़ नदी पार करके किसी बड़े नगर के लिये चले। नदी पार करते ही उन्होंने सोचा कि गिन लेना चाहिये। घर से चले थे तब दस थे। कोई हममें से बह तो नहीं गया। हर एक ने गिना तो नौ निकले। बैठकर रोने लगे। एक समझदार उधर से गुजरा उसने कारण पूछा, तो बात सामने आई। उसने झुण्ड को खड़ा किया और अलग खड़ा करते हुए सबके सिर पर धौल जमाते हुए गिनती गिनी तो पूरे दस थे। समाधान करते हुए उस विज्ञजन ने कहा- आप लोग अपने को गिनना भूल जाते थे फलतः एक की कमी पड़ती थी। हम सब की स्थिति भी ऐसी ही है। औरों के गुण दोष देखते है। औरों की निन्दा प्रशंसा करते हैं। दूसरों को उत्तरदायी बताते हैं पर यह भूल जाते है कि अपनी मन स्थिति और क्रिया प्रक्रिया ही उन परस्थितियों के लिए जिम्मेदार है जिसका कि दोष या श्रेय दूसरों को देते है। यह विवेक शीलता ही है जो परावलम्बन छोड़कर आत्मनिर्भर होने के प्रभाव परिणाम से अवगत कराती है। एक निपट देहाती ने कभी हाथी नहीं देखा था। संयोगवश कोई राजा हाथी पर बैठ कर उस गांव से गुजरा। देहातियों को भौंचक्का देखकर उसने समझ लिया कि इन लोगों ने हाथी कभी देखा नहीं है। चलना रोक दिया गया। दर्शकों के पास बुलाया और प्रश्न पूछा गया कि ध्यान से देखो- इसमें अजनबीपन क्या है ? सभी ने देखा और एक ही उत्तर दिया कि इसके आगे पीछे मोटी पतली पूंछें तो दो है पर मुंह कहीं दिखता ही नहीं। यह खाता कहां से होगा ? राजा ने हंसते हुए हाथी आगे बढ़ा दिया साथ ही सूंड उठवाकर हाथी का छिपा हुआ मुंह भी उन्हें दिखा दिया। मनुष्य को दो पूँछें दिखाई पड़ती है। शरीर के साथ जुड़ी हुई ज्ञानेन्द्रियों और कर्मेन्द्रियों के रुप में किन्तु उसका वह पक्ष नहीं दिखता जिसे चेतना या आत्मा कहते हैं। उसे विवेक दृष्टिसे ही देखा जा सकता है। चर्म चक्षुओं में दृष्टिदोष न होने पर भी वे सतही जानकारी ही प्राप्त कर सकते हैं। चेहरे पर लिपटी हुई चमड़ी की बनावट देखकर हम किसी के सौंदर्य पर मुग्ध होते और कुरुप के प्रति अरुचि प्रकट करते हैं। किन्तु वास्तविकता यह है कि चमड़ी की झिल्ली से नीचे वाला मसाला देखने पर सभी में हाड़-मांस रक्त, मज्ञा, मल-मूत्र आदि भरा ही दिखता है। सभी की काया उस चमकदार पन्नी चिपकाये हुए घड़े की तरह है जिसमें भीतर सड़ी कीचड़ भरी पड़ी है। आत्मा ही जीवन का आधार है पर वह यथार्थता चर्म चक्षुओं से किसी भी प्रकार दिख नहीं पड़ती। जमीन पर रेत, पत्थर बिछे दिखते है पर उसकी गहराई में पानी के स्रोत और बहुमूल्य खनिज पदार्थ भरे पड़ेहैं। यह खुली आंखों से पलक उठाकर नहीं देखा जा सकता। चर्म चक्षु आमतौर से दैनिक जीवन के काम चलाऊप्रयोजनों में सहायता करने तक सीमित हैं। वे आकाश में टंगे विशाल काय ग्रह पिण्डों को झिलमिल चमकनेवाली बिन्दियों के रुप में देखते हैं। इन्द्र धनुष जैसे अवास्तविक दृश्यों को प्रत्यक्ष एवं सही होने की धारणा बना लेते हैं। सिनेमा के पर्दे पर चलती बोलती छाया के उभार प्रत्यक्ष जैसे लगते हैं और असाधारण रुप से प्रभावित करते हैं। इन तथ्यों पर विचार करने से प्रतीत होता है कि चर्म चक्षु समीपवर्ती पदार्थो की ऊपरी सतह ही देख पाते हैं। गूलर के फल में भरे हुए भूनगों तक को उनके सहारे नहीं देखा जा सकता। यह विश्व अणुओं और तरंगों का समुच्चय मात्र है पर हमें तरह-तरह की आकृतियों के रंगों के रुप में उनका समुच्चय दृष्टिगोचर होता है। स्थिति को देखाते हुए चर्म चक्षुओं द्वारा दी गई जानकारी को अधूरी एवं भ्रमपूर्ण ही कहा जा सकता है। मन चक्षु अपने आप में विलक्षण है। वे कल्पना के घोड़ेगढ़ते है और उन पर चढ़कर आकाश पाताल की सैर करते रहते हैं। सुप्तावस्था में दिख पड़ने वाले सपनों की तरह उनके द्वारा जागृत स्थिति में भी दिवा स्वप्न देखे जाते रहते हैं। इसके लिये देश काल की भी कोई सीमा मर्यादा नहीं। चिर अंतीत के संबंध में जो सुना है, उनके यथार्थ जैसे चित्र गढ़ेजा सकते हैं। भविष्य की संभावनाओं को इच्छित स्तर की बनाकर उन्हें डरावनी या लुभावनी छवि दी जा सकती है। अवास्तविक कल्पनाओं को वास्तविकता का बाना पहनाना मनः चक्षुओं का ही काम है। उनके दिखाये दृश्यों को सही मान बैठने की बात बनती ही नहीं।

वास्तविकता युक्त तो ज्ञान चक्षु ही है। ये अदृश्य की गहराई में उतर कर पनडुब्बों की तरह बहुमूल्य मणि मुक्तक खोज सकते हैं इन्हीं के द्वारा आत्मा को- परमात्मा को- कर्त्तव्य को देखा समझा जा सकता है। इस जादु नगरी की भूल भुलैयों में से बाहर निकलने का वास्तविक रास्ता ढूंढ निकालने में यह ज्ञान-चक्षु ही काम देते हैं। उन्हीं की दृष्टि को तत्व दर्शन नाम दिया जा सकता है। यह नेत्र जब तक मुंदा रहता है, तब तक चर्म चक्षु और मनः चक्षु खुले रहने पर भी हम तत्व, तथ्य और सत्य को देखने समझने में असमर्थ ही रहते हैं।

आओ चलें जेसलमेर....

* इन्दु जैन, जोधपुर

जेसलमेर जुहारिये या दुख वारिये रे
अरिहंत बिंब अनेक तीरथ ते नमुं रे

जेसलमेर एक शहर ही नहीं बल्कि बीते हुए कल की सुंदरता, सहजता, संस्कार, सद्भाव, साधार्मिकता की गौरवता पूर्ण सम्पदा को अपने अंक में छिपाया हुआ भारतीयता का द्वारपाल है। राजपूत रावल जेसल ने 12 वीं सदी में राजस्थान के पश्चिमी भाग में टेकरी पर बनवाया अद्भूत किला जो अपने आप में एक शहर ही बन गया और अतीत का इतिहास इसके कलात्मक झारोखों एवं खूबसूरत खिड़कियों से झांकता है। यह अलग बात है कि अब यहां अतीत ही अतीत है। अब यहां सोने की चिड़ियों का चहचाना भले ही नहीं सुनाई दे किन्तु समय के थपेड़ों में यहां का सूनापन फांके मरती के आलम में सन्नाटा जरुर भरता है। दर्शकों की टोलियां दाँते तले उंगली जरुर दबाती है अहा ! कितने भव्य है यहां के जैन मंदिर, जैन पटवों की हवेलियाँ और विशाल ज्ञान भंडारों में संरक्षित भारतीय दर्शन। क्या यहीं वह राजपूत रावल जेसल रहता था जो असाधारण क्षमतावाला कलाप्रेमी था, कला का विकास, संवर्द्धन, प्रोत्साहन और संरक्षण उसकी दिनचर्या थी, उत्तर मिलेगा उसने अपने हृदय की विशालता को अक्षयपोल, सूरजपोल गणेशपोल एवं हवापोल नाम से चिन्हित प्रवेश द्वारों से युक्त किले का निर्माण कराया। इस किले की भव्य प्राचीर (कोट) राजमहल के निर्माण को सांडाशा नामक श्रेष्ठी ने पूरा कराया। किले के सूरजपोल स्थित राजमहल की दीवार पर लगाये गये शिलालेख (वि.सं. 1512) में अंकित है कि रावल देवीदास के अमरकोट राज्य को गिराकर लाए गए ईंटों से दीवालों का बांधकाम पूरा किया गया। जेसलमेर की संरचना में जैनत्व है। धर्मवीर जैनों के शिल्प स्थापत्य अभिरुचि का जीवंतचित्र है जैसलमेर के जैन मंदिर हवापोल के अंदर पीले जेसलमेरी पत्थरों से 7 गगनचुंबी शिखरबद्ध मंदिर और हवापोल के बाहर एक मंदिर का कलात्मक निर्माण अद्भूत है। उपाध्याय श्री समय सुंदरजी ने अपने भावों का पुष्प चढ़ाते हुए अपनी अक्षर सम्पदा में जेसलमेर का सम्पूर्ण परिचय दे दिया है। आज भी अनेक गौरवता से विभूषित जेसलमेर अपने ऐश्वर्य एवं संस्कार सम्पन्नता में स्थापत्यकला को संरक्षित रखे हुए हैं। जोधपुर से जेसलमेर रेलमार्ग एवं सड़कमार्ग से जुड़ा हुआ राजपुताना का सशक्त पश्चिमी भाग पर स्थित ऐतिहासिक नगर है। इन विशाल जैन मंदिरों के साथ ही प्राचीन ग्रंथ भंडारों की वृहत्त श्रृंखला जैसलमेर को दर्शनीय बनाने सफल हैं। किले में श्री संभवनाथ जैन मंदिर के भोयरे में ताड़पत्रीय प्राचीन ग्रंथों का भंडार (गायकवाड़ ओरियेंटल सिरीज वड़ोदरा ने इस भंडार की वृहत्त सूचीपत्र प्रकाशित की है), शहर स्थित तपागच्छीय उपाश्रय में आर्यागच्छ के बड़े उपाश्रय में, भट्टारक गच्छीय उपाश्रय में वृहत्त खरतरगच्छीय भंडार लोकगच्छ, यदि डूंगरशी के उपाश्रयों में तथा थीरुशाह की हवेली में भंडार है। इन भंडारों में अनेक विषयों के प्राचीन ग्रंथ, जैन शास्त्रों के प्राचीन ग्रंथ बौद्धदर्शन के अतिविरल ग्रंथ, संस्कृत साहित्य के अद्वितीय साहित्य जो अन्यत्र अनुपलब्ध हैं। यहां भंडारों में सुरक्षित हैं। जैसलमेर के भंडारों में सुरक्षित संग्रहित ताड़पत्र पर अंकित पत्राकार साहित्य पाटण के अलावा और कहीं नहीं मिलता साहित्य निर्माण में इन भंडारों का संदर्भ सदैव उपयोगी होगा। सचमुच साहित्यान्वेषकों के लिये जैसलमेर विपुल ज्ञान तीर्थ है। इसी भंडारों की महनीय प्रभावक दादा गुरुदेव जिनदत्त सूरिजी के कपड़े सुरक्षित रखे हुए हैं। भव्य कलात्मक मंदिर, भारतीयता का अमूल्य अविरल साहित्य भंडारों द्वारा सरंक्षण और साथ ही दर्शनीय है जैसलमेर की हवेलियाँ। शहर के मध्य में पटवों की हवेली विश्वविख्यात है। जैसलमेरी पत्थरों की खूबसूरत हवेली कल से आज तक सैलानियों को आकर्षित करते हैं। जैनों की विरासतीय गाथाओं जिसमें ऐश्वर्य, सामर्थ्य, शिल्पकला प्रेम, संस्कार प्रियता एवं भक्तिमयता का गौरव शाली वृत्तांत को जैसलमेर ने अपने अंदर समाहित किये हुए हैं। भले ही आज, कल के गौरव का अवशेष ही होता चला गया यह शहर जिसकी मूल आबादी खो गई है, परित्यक्ता सी पीड़ित सी पीड़ित है आनेवाले पर्यटक जैन मंदिरों, उपाश्रयों, हवेलियों आदि कलात्मक श्रृंगारों को देख देखकर नहीं थकते। मंदिरों के स्तंभ, तिलोकतोरण एवं जिन प्रतिमाओं के साथ हवेलियों के कलात्मक झारोखे एवं खिड़कियों की जालियों को देखनेवाले जैनों को सहज ही याद करते हैं। जेसलमेर के झारोखों में से प्राचीन स्थिर सद्भाविक की पूंजी की खुशबू इसके कण कण में फैली हुई है। इस नगरी के धार्मनिष्ठ संघवी पांचा ने 13 बार श्री शत्रुंजय तीर्थाधिराज के संघ यात्रा का ऐतिहासिक आयोजन किया। इसके निकट ही अमरसागर लोद्रवा की रमणीयता है।

क्या आपकी पूजा सामग्री शक्ति अनुसार है ?

कुमारपाल राजा के पूजा करने के वस्त्रों का एक बार बाहड़ मंत्री के छोटे भाई चाहड़ ने उपयोग किया था, इससे कुमारपाल ने उन वस्त्रों को पूजा के लिये नहीं पहने और चाहड़ से नये वस्त्र लाने को कहा। चाहड़ ने कहा कि-''ये वस्त्र बम्बेरा नाम की नगरी से आते हैं और वहां का राजा जो वस्त्र भेजता है वह उनका एकबार उपयोग करके ही यहां भेजता है।'' तुरन्त ही कुमारपाल ने पूजा के वस्त्र अन्य किसी के द्वारा उपयोग में लिये बिना प्राप्त हों-ऐसी व्यवस्था करने की आज्ञा की। इस हेतु कुमारपाल ने विपुल धनराशि खर्च की। क्योंकि शक्ति के अनुसार भावना जागृत हुए बिना नहीं रहती।

महाराज श्रेणिक प्रभु श्री महावीरदेव की पूजा हेतु प्रतिदिन सोने के जवला बनवाते थे। ऐसे-ऐसे अनेक उदाहरण मौजूद है। यह ऐसी पूजा में कोई माल नहीं होता। सामान्य स्थिति में भी उदार हृदय का श्रावक जिस रीति से देवपूजा कर सकता है उस प्रकार से तो कृपण श्रीमंत भी देवपूजादि नहीं कर सकता।

कुछ पूजा करनेवाले भगवान को तिलक करते हैं वह भी ऐसा अविवेक से करते हैं मानो उन्हें पूजा का कोई ध्यान ही नहीं। भगवान के प्रति उसे कितना सन्मान होगा ? ऐसा विचार उसे पूजा करता देखकर हो जाता है। यदि भगवान के प्रति सच्चा भक्तिभाव होता, ''भगवान की पूजा मुझे अपने द्रव्य से ही करनी चाहिये- ऐसा ख्याल होता और ''मैं कमनसीब हूं कि स्व-द्रव्य से मैं जिनपूजा करने में समर्थ नहीं''- ऐसा लगता होता, तो वह शायद संघ द्वारा की गई व्यवस्था का लाभ लेकर पूजा करता तब भी वह इस प्रकार करता कि उसकी प्रभुभक्ति और भक्ति करने की मनोजागृति तुरन्त ही दृष्टव्य होती। स्व-द्रव्य से पूजा करनेवालों को वह हाथ जोड़ता और स्व-काया से जिनमंदिर की तथा जिनमंदिर की सामग्री की जितना भी देखरेख हो सकती हो उसे करने में वह कभी न चूकता। आज तो ऐसी सामान्य बातें भी यदि कोई साधु भी कहे तब भी कुछ लोग को भारी लगती है।

जिनपूजा स्वद्रव्य से या देवद्रव्य से ?

तुमने सुना है या नहीं ? सुनने के पश्चात भी तुम्हारी पूजा की सामग्री तुम्हारी शक्ति के अनुसार है ? अपने यहां पश्चानुपूर्वी क्रमानुसार विवेचन उपलब्ध है, पूर्वानुपूर्वी क्रम से भी विवेचन आता है और अनानुपूर्वी क्रम से भी विवेचन आता है। यहां देवपूजा की बात बाद में रखी गई और संविभाग की बात पहले प्रस्तुत की गई। उसमें जो हेतु है वह समझने योग्य है। स्वयं की वस्तु का त्याग करने की और उसके सदुपयोग करने की वृत्ति के बिना यदि पूजा की जाय तो आपके पास द्रव्य होने पर भी दूसरे के द्रव्य से पूजा करो तो उसमें ''आज मेरा श्रीमंतपना सार्थक हुआ'' ऐसा भाव प्रकट करने के लिये कोई अवकाश है क्या ? वास्तव में भक्ति के भाव में त्रुटि आई है। इसीलिए आज उल्टे-सीधे विचार सूझाते हैं। जिनमंदिर में रखी हुई सामग्री से ही पूजा आदि करनेवालों का विवेक हीनपना दिखाई देता है उसका कारण क्या ? स्वयं की सामान्य मूल्य की वस्तुओं को भी वह जिस तरह संभाल करता है उतनी मंदिर की बहुमूल्य वस्तुओं की वह संभाल नहीं करता। वास्तव में तो जिन मंदिर या संघ की छोटी से छोटी, साधारण से साधारण मूल्य की वस्तुओं की भी अच्छे से अच्छे प्रकार से संभाल करनी चाहिये।

''ओम्'' में जैन प्रवचन

'अ' अर्थात् विष्णु। विष्णु 'ध्रौव्य' के प्रतीक है।

'उ' अर्थात् उमापति-शंकर। शंकर 'व्यय' के प्रतीक है।

'म्' अर्थात् ब्रह्मा। ब्रह्मा 'उत्पाद' के प्रतीक है। अ +उ +म= ओम्।

ओंकार में उत्पाद-व्यय-ध्रौव्य रुप त्रिपदी छिपी हुई है और त्रिपदी में सम्पूर्ण जैन-प्रवचन बीज रुप में छिपा हुआ है। (अकारो वासुदेवः स्यात् उकास्तु महेश्वरः। मकारः प्रजापतिः स्यात् त्रिदेव ॐ प्रयुज्यते॥)

नैवेद्य पूजा-हालिक कृषक का कथानक

✽ प.पू.आ.भ.श्रीमद् विजय सुशील सूरीश्वरजी म.

देवाधिदेव श्री जिनेश्वर भगवान की अष्टप्रकारी पूजा में से यह सातवीं पूजा है। नैवेद्य अर्थात् भोज्य पदार्थ द्वारा की जानेवाली पूजा ''नैवेद्य पूजा'' कही जाती है। यह भोजन पर रही हुई आसक्ति को सर्वथा समाप्त करने के लिए की जाती है। नैवेद्य से अनाहकारी पद की अन्तर-झंखना साकार करने के लिये यह पूजा की जाती है। चार गति और चौरासी लाख जीवायोनि रुप इस संसार में परिभ्रमण करानेवाली आहार संज्ञा का त्याग करने हेतु और अणाहारी पद-मोक्षपद प्राप्त करने के लिये आपके पास आकर आपके चरणों में यह नैवेद्य रखता हूं जिसके प्रभाव से मेरी अनादिकालीन आहार संज्ञा सर्वथा विनष्ट हो जाय, ऐसी मेरी अभिलाषा है, अर्थात् हे प्रभो ! इस संसार में मेरी आत्मा ने अनन्त बार जन्म और मरण किये हैं। उसमें परलोक में जाते समय मेरी आत्मा सिर्फ एक, दो या अधिक तीन समय तक ही आहार रहित रही है अर्थात् अनाहारी रही है। इसके अलावा तो हर समय मेरी आत्मा संज्ञा के कारण आहार ग्रहण करती ही रही है। इसलिये आहार की इस तीव्र अभिलाषा-परतंत्रता से सर्वथा मुक्त होने के लिए हे प्रभो ! मुझे अनाहारी ऐसे मोक्ष-पद का शाश्वत सुख प्रदान करो।

देवाधिदेव जिनेश्वर भगवान की नैवेद्य पूजा का कैसा अपूर्व प्रभाव है। इसका ज्वलन्त कथानक हालिक कृषक निम्नानुसार हैः-

हालिक नामक एक दरिद्र कृषक था। उसके खेत के समीप ही श्री शांतिनाथ भगवान का भव्य मंदिर था। उसमें मूलनायक श्री शांतिनाथ भगवान की महान प्रभावक भव्य मूर्ति थी। उसके दर्शनार्थ प्रतिदिन-रात्रि आकाशगामिनी विद्या के बल से चारण मुनि आते थे। दिन में ऋषि-महर्षि भी उनके महान प्रभाव से आकर्षित होकर दर्शनार्थ आते थे।

एक दिन श्री शांतिनाथ भगवान के दर्शन करके चारण मुनि जिन मंदिर में से बाहर निकले। वहां खड़ा हुआ हालिक कृषक चारण मुनि के चरणों में गिर पड़ा और नमस्कार करके कहने लगा- ''हे गुरुदेव ! मैं अति दरिद्र हूं। कृपा करके आप मेरी दरिद्रता दूर करो।'' यह सुनकर चारण मुनिवर ने कहा- ''हे हालिक ! देवाधिदेव श्री जिनेश्वर भगवान की भावपूर्वक पूजा भक्ति और सेवा करने से आत्मा सभी प्रकार के सुख प्राप्त कर सकता है। जहां प्रभु की भाव से पूजा, भक्ति, सेवा और शांति के कार्य होते हैं वहां पर लक्ष्मी भी आकर निवास करती है।'' चारण मुनिवर का इस प्रकार का सदुपदेश सुनकर हालिक ने तत्काल नियम लिया कि जब तक मैं जिनेश्वर देव की पूजा न करुँ और नैवेद्य न धरुं तब तक अन्न-जल लेने का नहीं। अर्थात् न खाने का और न पीने का। इस तरह हालिक दृढ़तापूर्वक प्रतिज्ञा का, नियम का पालन करने लगा। उसकी पत्नी अपने पति को भोजन कराने के लिये घर से खाना, चावल इत्यादि बनाकर प्रतिदिन खेत पर लाती थी। उनमें से भी पहले थोड़ा नैवेद्य प्रभु के सम्मुख रख कर बाद में हालिक भोजन करता था।

एक दिन ऐसा हुआ कि उसकी स्त्री भोजन लेकर आई। हालिक जीमने की धुन में भगवान के पास जाकर वह नैवेद्य रखना भूल गया और भोजन करने के लिए बैठ गया किन्तु की हुई प्रतिज्ञा की याद आते ही वह तत्काल अपने हाथ धोकर प्रभु के मंदिर में नैवेद्य रखने के लिये गया। वहां उसने एक विकराल सिंह को देखा। ऐसी भयजनक विषम परिस्थिति में भी हालिक निर्भय होकर जिनमंदिर में गया और नैवेद्य रखकर वापिस आया। अपने स्थान पर आया तो वहां पर भी पुण्य के संयोग से वहोरने के लिए पधारे हुए मुनि महाराज को देखा। वहां आनंदमय हो गया। अपनी प्रसन्नता और भक्ति-भाव भरे हृदय से उसने समस्त भोजन मुनि महाराज को वहोरा दिया।

अपनी की हुई प्रतिज्ञा में अचल रहनेवाले हालिक को देखकर देव ने भी प्रसन्न होकर हालिक को कहा कि तू मांग, तुझे जो चाहिये वह मांग। उस समय हालिक ने मांगा कि हे प्रभो ! मेरी यह दरिद्रता दूर हो जाये, ऐसा उपाय बताओ। देव ने कहा कि- तेरी इच्छा पूर्ण हो ! इतना कहकर देव अदृश्य हो गया।

अब इस तरफ एक आश्चर्यजनक सुन्दर घटना ऐसी होने लगी। शूर राजा की पुत्री विष्णुश्री यौवन अवस्था में आ गई। उसके लिये राजा ने विशाल स्वयंवर मण्डप की योजना की। देश-विदेश के राजाओं को आने के लिये निमंत्रण भी दे दिये। सब राजकुमार वस्त्राभूषणों से सुसज्जित होकर मंडप में आकर उचित स्थानों पर बैठ गये। स्वयंवर की विधि प्रारंभ

भी हो गई। वहां पर हालिक भी कौतुक देखने की दृष्टि से आकर एक तरफ खड़ा है। विशाल स्वयंवर मण्डप में राजकुमारी विष्णुश्री प्रतिहारी के साथ वरमाला लेकर घूम रही है। उसने एक भी राजकुमार को पसन्द नहीं करके हालिक के गले में वरमाला डाल दी। सभी राजकुमार इस तरह का दृश्य देखकर कुपित हो गये। वे हालिक के साथ युद्ध करने लगे। अन्त में हालिक जीता और सब राजकुमार हार गये। शूर राजा ने अपनी पुत्री विष्णुश्री का हालिक कृषक के साथ धूमधाम से विवाह किया बाद में स्वयं के कोई पुत्र नहीं होने से राजा ने अपना राज्य दामाद को सौंपकर संयम ले लिया। अब हालिक दामाद राजा बन गया। राज्य-संचालन करते हुए भी हालिक प्रभु की नैवेद्य पूजा नियमित करते रहे।

धर्म के प्रभाव से सुखी बने राजा हालिक ने धर्म की सुन्दर आराधना की। अन्त में मृत्यु पाकर वह देवलोक में देव रुप में उत्पन्न हुआ। वहां से आयुष्य पूर्ण करके पुनः मनुष्य भव में आकर संयम ग्रहण करके सकल कर्मों का क्षय करके मोक्षसुख का भोक्ता बनेगा। यह है प्रभु की नैवेद्य पूजा का अनुपम प्रभाव।

आवश्यकता नहीं है....

क्षमा हो तो बख्तर (कवच) की।
क्रोध हो तो शत्रु की।
शांति हो तो आग की।
मित्र हो तो दिव्य औषधि की।
दुर्जन हो तो विष की।
लज्जा हो तो आभूषणों की।
सुकाव्य हो तो राज्य की।
लोभ हो तो अवगुणों की।
पिशुनता हो तो पाप की।
सत्य हो तो तप की।
पवित्र मन हो तो तीर्थ की।
सौजन्य हो तो गुणों की।
स्व महिमा हो तो अलंकारों की।
सुविधा हो तो धन की।
अपयश हो तो मृत्यु की।

चार्तुमास के बाद एक पच्चक्खाण

आचार्य श्रीधर्मघोष परिव्रज्या कर रहे थे। तभी आ गया आषाढ़ मास का पहला दिन। वर्षा ऋतु का आगमन हो चुका था। बरसात के चार माह संन्यासी यात्रा नहीं करते। जिस स्थान पर वह दिन आ जाए वहीं रुक जाते हैं। गांव के नायक क्षुद्रमति से उन्होंने कहा-हम चार माह यही तुम्हारे पास रुकेंगे। तुम्हें कोई कष्ट तो नहीं होगा ? क्षुद्रमति बोला- आचार्य ! आप जैसे त्यागी-तपस्वी यहां रुके, इससे बढ़कर हमारा सौभाग्य क्या हो सकता है ! किंतु एक बात संकोच के साथ कहनी पड़ेगी, छिपाई भी नहीं जा सकती कि हम सभी लोग- इस गांव के सभी निवासी दस्यु कर्म करते हैं। दूसरों को लूटकर ही अपनी जीवनचर्या चलाते हैं। आपके यहां रुकने, धर्मोपदेश करने से कहीं हमारे बंधुओं की मति न पलट जाए। एक वचन दें कि आप चार मास यहां रुकते हुए ग्रामवासियों को उपदेश नहीं देंगे। फिर आप सहर्ष चार्तुमास करें। धर्मघोष ने विचार किया। इसे आपद्धर्म मानते हुए उन्होंने तरुण दस्यु सरदार की शर्त स्वीकार कर ली। सभी अनुचर धर्म-याजकों से भी उपदेश न देने की बात कह दी गई।

चार मास किस तरह बीत गए। सोचते-सोचते धर्मघोष गांव की सीमा पर पहुंच रहे थे कि तुच्छ ही सही, पर परिश्रम से कमाए इनके द्रव्य से चार माह सबकी जीवन-रक्षा हुई, चार्तुमास निभा। कुछ तो इन अज्ञानियों का उपकार करना चाहिये। इतने में सीमा आ गई। क्षुद्रमति ने कहा- ''प्रभु ! फिर सेवा का अवसर अवश्य दें।'' आचार्य ने कहा- ''अब तो हम सीमा के बाहर हैं। आप कहें तो एक उपदेश चलते- चलते दे जाएं।'' क्षुद्रमति मान गए। आचार्य ने कहा- ''सूर्यास्त के बाद आज के बाद तुम लोग कभी भोजन मत करना। इस प्रकार के भोजन को हिंसा कहा गया है।'' उपदेश स्वीकार कर लिया गया। सबने नियम बना लिया। एक दिन बड़ी डकैती की योजना बनी। डाका डालकर जंगल में विश्राम कर रहे थे। दो दस्यु नए थे। वे भोजन-सामग्री और मदिरा में विष मिलाकर ले आए। रात्रि हो चुकी थी। मदिरापान आरंभ हुआ। क्षुद्रमति ने प्याला हाथ में लेकर भोजन पर दृष्टि डाली तो शपथ याद आ गई। उसने मदिरा का प्याला और भोजन एक ओर कर दिया। शेष सारे दस्यु मृत्यु के मुंह में चले गये। दोनों षड्यंत्रकारी भाग गये थे। क्षुद्रमति की बुद्धि पलट गई- जब एक उपदेश जीवन का इतना हित कर सकता है तो फिर धर्मपरायण जीवन क्या नहीं कर सकता ! बस दस्यु कर्म छुट गया। पूरे गांव का कायाकल्प हो गया।

आनन्द की खोज

❋ सुधीर पटवा, कुकड़ेश्वर

हर व्यक्ति सुख और शांति की चाह रखता है। व्यक्ति पाता वही है जो वह बोता है। बाह्य तौर पर हमें भौतिक सुख सुविधाओं की अनुभूति होती है और इन्हें प्राप्त कर हम कुछ समय के लिये शांति की प्रतीति भी करते है, किन्तु यह सब स्थाई नहीं होता है। इसीलिए सुख का विलोम दुःख तथा शांति का अशांति होता है। यह सब बाह्य ही है आंतरिक नहीं।

एक नई कार खरीदने पर मन को प्रसन्नता होती है। रेल-मोटर की भीड़-भाड़ से बचने पर हम अपने को दूसरों से अधिक सुखी महसूस करते हैं और यही सुख हमें शांति का अहसास भी करवाता है। इसी का दूसरा पहलू यह है कि कार की दुर्घटना हो जाने पर और हमें चोंट आ जाने पर हम दुःखी और अशांत भी हो जाते हैं।

इसी तरह व्यवसाय में दिनरात लगकर खूब पैसा कमाया, बड़ा मकान बनवाया, खूब साधन खरीदे, सोना खरीदा, कीमती वस्तुएं एकत्रित की, इन सबसे समाज में हमारी हैसियत ऊँची उठी, हमारे गर्व को पंख मिले और हमें सुख मिला तथा एक दिन लूट हो गई, हमारी सम्पत्ति लुटेरे ले चले गए जो सुख के साधन हमने कठिन परिश्रम से एकत्र किये थे वे चले गये और हमें असीम दुःख तथा अशांति के गड्डे में धकेल गये।

बाह्य साधन-धन वैभव, पद-प्रतिष्ठा जब जाते हैं, तब हमें सुख संतोष का आभास देते हैं और जाते है तो दुःख-अवसाद-अशांति के खण्डहर छोड़ कर चले जाते है, ये हमें ताउम्र दुःखी और अशांत करते रहते हैं।

तो फिर स्थाई सुख-शांति और आनन्द क्या है ? यह सब अन्तर का मामला है। इन्हें पाने के लिये हमें उस परम पावन परमात्मा की शरण में जाना होगा, वह भी हमारे अहम को त्यागकर, निःस्वार्थ भाव से, पूर्ण समर्पण के साथ और जब उस परम कृपालु की कृपा हो जावेगी तो अपने हृदय की अनन्त गहराईयों से अपूर्व अनुपम आनन्ददायी झरना अपने आप फूट पड़ेगा और उसके स्नान से हम ऐसे आल्हादित-आनंदित होंगे जिसका शब्दों में वर्णन संभव नहीं है। यह केवल और केवल अनुभूति का विषय है, जिसे केवल अनुभव से ही जाना जा सकता है। इसीलिए किसी भी शब्द कोष में आनन्द के लिये कोई विलोम शब्द ही नहीं मिलेगा। हाँ, आनन्द और अधिक बढ़कर परमानंद अवश्य बन सकता है और अंतिम परिणति सच्चिदानंद के रुप से याने मोक्ष या मुक्ति के रुप में होती है।

एक सन्त के द्वारा वर्षो तक ध्यान-यज्ञ-होम-अनुष्ठान योग तथा तप आराधनाएं आदि की गई किन्तु उन्हें शांति प्राप्त नहीं हुई। एक दिन रात के समय किसी का करुण क्रन्दन सुन सन्त उठे और कुटिया के बाहर आये तो देखा एक व्यक्ति के शरीर पर घावों से खून मवाद झर रहा है, पीड़ा और भूख प्यास से व्याकुल सहायता की अपेक्षा से कराहता हुआ पड़ा था। सन्त ने उसके घावों को धोया, घी हल्दी का लेप लगाया, खाना पानी दिया और बिस्तर देकर सुला दिया। उस व्यक्ति का कराहना बंद हो चुका था, उसकी आँखों से आभार के आंसू छलक रहे थे, मुंह से शब्द तो नहीं निकल रहे थे किन्तु उसका रोम रोम सन्त का आभार मानकर उन्हें मानो कोटि-कोटि आशीष दे रहा था। इतने सालों की साधना के बाद आज पहली बार सन्त के अन्तर में आनन्द का उजास जन्मा था और उन्हें लगा कि आज उनकी साधना सफल हो गई। समर्पण और सेवा में जो सुख-शांति तथा आनंद है वही ईश्वर की सच्ची प्राप्ति है।

To Live (जीवन) से To Love (प्रेम) तक

जीवन किस लिए ? जीने के लिए।

जीना किस लिए ? कुछ करने के लिए।

कुछ करना किस लिए ? जीवों के साथ प्रेम करने के लिए।

जीवों के प्रति प्रेम क्यों ? भगवान के साथ प्रेम करने के लिए।

Live एवं Love में अन्तर कितना ?

आई (I) एवं शून्य (O) का ही केवल अन्तर है।

I अहं का, स्वार्थ का प्रतीक है।

O शून्य का, अहं-रहितता का प्रतीक है।

अत: विश्व का वास्तविक सत्य यही है कि I (अहं) को O-ओ (शून्य) में परिवर्तित कर दें। स्वार्थीता मिटाकर प्रभु-प्रेमी बनें।

दो सटिक प्रसंग.... समर्पण और अहं से मुक्त ही सच्चा शिष्य

✻ शान्तिलाल सगरावत, मंदसौर

सच्चे गुरु छाते की भांति होते है जो अपना भार शिष्य के सिर पर न रखकर शिष्य को हर मौसम में बचाते है। चोह धूप हो, ताप हो या बरसाती हो। वे हमेशा छाया और सुरक्षा का हाथ शिष्य के मस्तक पर रखे रहते हैं।

गुरु शिष्य के साथ लेटे थे। शिष्य निद्रावस्था में था। गुरु जागे हुए थे आँख खुली थी। तभी एक साँप फुफकार मारते आया और शिष्य की ओर लपका। गुरुजी ने सांप से पूछा- उधर क्यों जो रहे हो ? साँप ने कहा- मुझे इससे पुराना बैर चुकाना है। मैं इसका खून पीऊंगा। गुरु ने समझाया वैर और द्वेष के परिणाम ठीक नहीं होते, पर वो नहीं माना। तब गुरु ने सोचा यदि यह शिष्य को डसेगा तो वह मर जायेगा। यह सोचकर उन्होंने साँप से पूछा- यदि मैं इसका खून तुम्हें पीला दूं तो क्या तुम संतुष्ट हो जाओगे। साँप ने स्वीकृति दे दी। तब गुरु ने शिष्य की नस काटी और प्याले में खून भर साँप को पिला दिया। खून पीकर साँप चला गया। कुछ देर बाद शिष्य जागा। गुरुजी ने शिष्य से कहा- मैंने तुम्हारी नस काट खून निकाला था। शिष्य बोला- गुरुदेव मुझे मालूम है। तुमने विरोध क्यों नहीं किया ? शिष्य ने विनीत स्वर में कहा- मुझे दृढ़ विश्वास था कि आप जो भी कर रहे हैं, उससे मेरा हित है। यह शिष्य और गुरु के बीच समर्पण का सटीक उदाहरण है।

शिष्य के आध्यात्मिक उपलब्धियों के द्वार तभी खुलते हैं, जब गुरु के चरणों में सर्वस्व समर्पण कर देता है। आध्यात्म की दुनिया में प्रवेश कर देने पर गुरु उसके अहं जहर को निर्मल करके योग्य पात्र बनाते हैं। नामदेव नामक के एक संत हुए हैं। उम्र में कम होते हुए भी अपने ज्ञान और भक्ति के कारण सभी उनका सम्मान करते थे। नामदेवजी विट्ठल भगवान के अनन्य भक्त थे। लेकिन जब उन्होंने विट्ठल को दूध का भोग लगाया तो विट्ठलजी स्वीकार के करने पर उन्हें ठेस लगी और वे बहुत रोये। उन्होंने ठान लिया कि जब तक विट्ठलजी दूध नहीं पीयेंगे, वह वहां से हटेंगे नहीं। हठ वश विट्ठलजी को दूध पीना पड़ा।

मुक्ताबाई के पूछने पर काका ने नामदेव को कच्चा घड़ा बता दिया। यह भी विट्ठलजी कृपा ही थी। नामदेवजी इस अपमान की पीड़ा को सह न सके। वे पंडमपुर की ओर चल पड़े। वहां आराध्यदेव के सामने जाकर अपनी मनोरथा निवेदित की। भगवान विट्ठल प्रकट हुए उन्होंने कहा- नामदेव जो कुछ मैंने कहा- तुम मुझे प्रिय होने के बाद भी गोराजी ने कहा वह सच है। तुम्हें विसोबाजी के पास जाना चाहिये। वे अनमने पन से विसोबाजी के पास पहुंचे। विसोबाजी के पास एक शिवालय में मैली कुचैली चादर ओढ़े सो रहे थे और उनके पांव शिवलिंग पर टिके थे। यह देखकर विसोबाजी की कुबुद्धि पर तरस आया। विसोबाजी ने पुकारा- अरे ! ओ नाम्या तू आ गया ? मुझे ध्यान नहीं रहा, पाँवों के पिंडी से हटाकर वहां रख दे जहां शिव की पिंडी न हो। नामदेव ने पाँवों की तीन-चार-बार शिव की पिंडी से हटाये लेकिन स्थिति वैसी ही रही। शिवलिंग विसोबाजी के पाँव के नीचे पहुंच गये। नामदेव का अहंकार चूर-चूर हो गया। उनके मुंह से निकल पड़े- शिव विट्ठल तुम्हीं हो गुरुदेव। वास्तव में मैं अज्ञानी हूं। आपमें संशयवृत्ति रखी। मुझे शरणागति दो प्रभु। नामदेव को लग गया कि विसोबाजी और भगवान विट्ठलनाथ एक ही हैं। नामदेव को निज स्वरुप की अनुभूति हुई। वह गा उठे-

नामदेइ सिमरितु करि जानाँ,
जगजीवन सिउ जीउ समाना।

योग्यता:- *गाय के द्वारा खाया गया घास भी दूध में रुपांतरित होता है, जबकि सांप को पिलाया गया दूध भी विष में ही रुपांतरित होता है। पात्र और अपात्र के भेद से लाभ और हानि होती है। उपदेश देना अच्छी वस्तु है, परन्तु वह भी पात्र को ही लाभकारी बनता है। वसंत ऋतु आती है समस्त वनराजि खिल उठती है, जबकि करीर का वृक्ष शोभाहीन हो जाता है, उसमें वसंत ऋतु का दोष नहीं है, उस करीर का ही दोष है।*

आकाश में सूर्य का उदय होता है और सभी लोग प्रकाश का लाभ उठाते है, परन्तु उसी समय उल्लू अपनी आँखें बंद कर देता है, उसमें उल्लू का ही दोष है, सूर्य का नहीं। विशाल महासागर के तट पर पहुंचने पर भी छेदवाला घड़ा खाली लौटता है, उसमें सागर का कोई दोष नहीं है, दोष उस घड़े का ही है।

सर्जन का अहंकार कैसे मिटे ?

चारों कषायों में आदमी को अभिमान बहुत ही परेशान करता है। इसलिये ही उसको पाप का मूल कहा है। तुलसीदास ने जैसे कहा है, दया धर्म का मूल है, पापमूल अभिमान ! सर्वदोषों का उद्‌गम स्थान अहंकार है। अहंकार होता है वहां सारे दोष अपने आप इकट्ठे हो जाते हैं।

अहंकार अगर दोषों का मूल है तो नमस्कार-विनय गुणों का मूल होना ही चाहिये और है ही।**''धम्मस्स मूलं विणओ। धर्म प्रति मूलभूता वंदना''** ये सारे सूत्र विनय की महिमा गा रहे हैं।विनय आते ही सारे गुण आने लगते हैं।

अहंकारी हर बात में अपना कर्त्तव्य आगे करता है। विनीत हर बात में स्वयं को गौण मानता है। अहंकारी थोड़ा सर्जन करेगा तो तुरन्त ही अहंकार में भर जायेगा, यह मैंने बनाया ! मैं रचियता !

किन्तु विनीत सोचेगा- इसमें मेरा क्या ?

समझदार कुम्हार घड़े बनाने का कभी अभिमान नहीं करता है। वह तो सोचता है- विश्व में बहुत सारी मिट्‌टी पड़ी है। इसमें से मैंने आज घड़े बनाये, कल वे फिर मिट्‌टी बन जायेंगे। इसमें मेरा क्या ?

नम्र सर्जक भी सोचता है- इस जगत में अक्षर तो पड़े ही है। इनमें से ग्रंथ बनाकर मैंने क्या किया ? अक्षरों से शब्द, शब्दों से पद, पदों से वाक्य, वाक्यों से पेरेग्राफ पेरेग्राफों से प्रकरण और प्रकरणों से ग्रंथ। इसमें मेरा क्या ? हो सकता है कि कल यह मेरा ग्रंथ बिखर जाय ! ऐसे कई ग्रंथ बने और मिटे ! लेकिन अक्षर कायम है। ''अक्षर'' उसका ही नाम जिसका कभी नाश न हो।

यह विचार-सरणी हर जगह लागु कर सकते हैं। चित्रकार संगीतकार, शिल्पकार, प्रवचनकार या पैसादार भी इस तरह सोच कर अपने अहंकार का निग्रह कर सकते हैं। चित्रकार सोचेगा- इसमें मैने क्या किया ? रंग तो इस विश्व में थे ही, है ही, मैंने उनको सिर्फ कागज पर रखे। और क्या ?

संगीतकार सोचेगा- सात स्वर तो जगत में है ही। मैंने इसमें थोड़ा इधर-उधर किया। बाकी इसमें मेरा क्या ?

शिल्पी सोचेगा- यह मूर्ति मैंने बनाई है, ऐसा मैं कैसे कह सकूं ? मूर्ति तो बनी हुई थी ही, मैंने सिर्फ अनावश्यक भाग निकाल दिया। इसमें अभिमान करने जैसा क्या है ?

पैसेदार सोचेगा- पैसा मिल जाने से मैं व्यर्थ ही अभिमान कर रहा हूं। पैसा आने से मेरे गुणों में वृद्धि हुई है- ऐसा मैं नहीं कर सकता हूं, हां.... शायद दुर्गुणों में वृद्धि हुई होगी। आज जो मेरे पास पैसे है, वे कल मेरे नहीं थे, कल किसी ओर के होंगे ! नदी के प्रवाह जैसे पैसों से अभिमान क्या ?

अगर हर आदमी इस तरह सोचना शुरु करें तो नम्रता के द्वार खुल सके, न केवल नम्रता के, अपितु संपूर्ण सुख के द्वार सके। क्योंकि सुख का मूल गुण है। गुण का मूल नम्रता है।

परिवर्तन प्रगति का सूचक है

हथेली पर सरसों उगाने के क्षाणिक प्रयास में शक्ति क्षरण मत करो, अपितु सतत परिश्रमशील बनो। निरन्तर श्रम के आरक्षक बनो तथा प्रगतिशील दृष्टिकोण रखो। नये परिवर्तनों से घबराओ मत। बदलाव आने दो। गर्मी के पश्चात वर्षा का आना आवश्यक ही नहीं, अनिवार्य है। यह प्रकृति का नियम है। परिश्रम हमेशा परिवर्तन को जन्म देता है। श्रमविमुख कुण्ठा नये आयाम खोलने में सदा से असमर्थ रही है। उर्वरा भूमि में डाला गया बीज यदि परिश्रम के जल से सिंचित न हो, तो क्या कुछ उपलब्धियां दे सकता है वह ? क्या फसल मिल सकती है ? क्या खेती लहलहा सकती है ? क्या फूल खिल सकते हैं ? उत्तर होगा, नहीं। गति-प्रगति के लिए बीज को टूटना ही होगा। अपने आप में परिवर्तन लाना होगा। तभी वह प्रस्फुटित एवं अंकुरित हो सकेगा। उसका यह विस्फोटक रुप ही उसके जीवित होने का परिचायक होगा। इसलिए परिवर्तन से घबराओ मत। कुण्ठाओं को जीवन में स्थान मत दो। नये आयाम खुलने दो। नये मोड़ आने दो। यह परिवर्तन ही प्रगति का सूचकांक होगा।

वर्तमान में तीन प्रकार के बोर्ड

1- ऑफिस पर - No admission without Permission.

2- विद्यालय पर- No admission without Donation.

3- साधना धाम पर- No admission without Devotion.

नव तत्व (व्यवराह नय से)

*मुनि ऋषभरत्न विजय

सारे विश्व में जितने भी पदार्थ है, **ज्ञेय**- जानने योग्य, **हेय**- छोड़ने योग्य तथा **उपादेय**- आचरने योग्य, इन सभी का समावेश नौ तत्वों में होता है।

1- जीव- जो प्राणों को धारण करें तथा अपने हित-अहित को जानता है तथा अपने सुख-दुःख का जो अनुभव करें उसको जीवतत्व (आत्मा) कहते है। जैसे- मनुष्य, गाय, कबुतर, चींटी इत्यादि एकेंद्रिय से पंचेद्रिय जीव।

आत्म-चिंतनः- आत्मा है ? आत्मा कैसी है ? आत्मा को पहचाने बिना बाकी की सब पढ़ाई अधूरी रहेगी। बिना अंक के शून्य जैसी है ! तुम खुद आत्मा हो ! तुम शायद सवाल करोगे ! कहां है आत्मा ? मैं कहूंगा आत्मा तुम्हारे शरीर के भीतर में है। हर एक के शरीर में अलग-अलग आत्मा होती है। तुम पूछोगे आत्मा दिखाती क्यों नहीं है ? मैं कहूंगा आत्मा अपनी इन आंखों से नहीं दिखाती, जीभ से चखी भी नहीं जाती, कान से सुनी भी नहीं जाती, नाक से सुंघी नहीं जाती या चमड़ी से छुई नहीं जाती। इस आत्मा को देखने के लिये ''केवलज्ञान'' की दुरबीन चाहिये। केवलज्ञानी आत्मा को अच्छी तरह से देख सकते हैं।

आत्मा के आठ गुण है जो आठ कर्मो के क्षय होने से उजागर होते हैं।

1- अनन्तज्ञानः- आत्मा के अंदर अनंत ज्ञान रहा हुआ है। इस ज्ञान से आत्मा दूर दूर की सभी बातें जान सकती है। आत्मा से कुछ भी छुपा हुआ नहीं है तथा कुछ भी अनजान नहीं है। आत्मा दुनिया को तो जानती ही है, किन्तु दुनिया के उस पार के आकाश को भी जानती है। ग्रह-नक्षत्र-तारे-सूर्य-चंद्र-राक्षसादि सभी को यह आत्मा पहचानती है। वास्तविक में आत्मा का ज्ञान अनंत है। यह गुण ज्ञानावरणीय कर्मो के आवरण क्षय होने से प्रकट होता है।

2-अनंतदर्शनः- आत्मा जैसे सब कुछ जानती है, वैसे ही सब कुछ प्रत्यक्ष देखती है। आत्मा बिना आंखों के सब कुछ देख सकती है, सिद्ध आत्मा को शरीर तो होता ही नहीं फिर आँखें कहां से होगी ? आत्मा को वस्तु देखने के लिये पर्वत-दीवार आदि रुकावट नहीं करते है। आत्मा रुपवाली, आकृतिवाली तथा बिना-आकृतिवाली सब चीजों को देखती है। आत्मा को नींद आती ही नहीं अतः वह सोती नहीं है। वह तो बस, दुनिया को देखती ही रहती है। यह गुण दर्शनावरणीय कर्मो के आवरण क्षय होने से प्रकट होता है।

3- वीतरागता (अनंत-चारित्र):- आत्मा कभी भी गुस्सा नहीं करती, अभिमान, माया, कपट और लोभ भी नहीं करती, आत्मा रोती भी नहीं तथा हंसती भी नहीं, खुशी भी नहीं होती, नाराज भी नहीं होती, वह न डरती है न ही किसी को डराती है। आत्मा वीतराग बन जाती है तब किसी के साथ प्रेम व द्वेष नहीं करती। वीतराग आत्मा को अनंत सुख व परम शांति होती है। यह गुण मोहनीय कर्मो के आवरण क्षय होने से प्रकट होता है।

4- अनंत शक्तिशाली (अनंत वीर्य):- आत्मा जब वीतराग बनती है तब उसमें अनंत शक्ति प्रगट होती है, उसमें दुर्बलता या कमजोरी नहीं रहती है। उसमें कृपणता-कंजुसाई नहीं रहती है। शुद्ध आत्मा में अनंतशक्ति, अनंतलब्धि प्रगट होती है। ऐसी अनंत शक्तिशाली आत्माओं की पूजा करने से, उनका ध्यान करने से अपने को भी वैसी अनंतशक्ति प्राप्त हो सकती है। यह गुण अंतराय कर्मो के आवरण क्षय होने से प्रकट होता है।

5- अरुपी-पनाः- शरीर से आत्मा मुक्त हो जाती है तब फिर उसका रुप नहीं होता, उसका भार या वजन नहीं होता। उसमें रस-गंध और स्पर्श भी नहीं रहता है। उस आत्मा का यश या अपयश नहीं होता है। आत्मा बड़ी या छोटी नहीं होती, आत्मा गरम भी नहीं होती और ठंडी भी नहीं होती। हम आत्मा को देख नहीं सकते है किन्तु आत्मा ऐसी शुद्ध आत्मा को रुप न होने के बावजूद भी अनुभव कर सकती है। यह गुण नाम कर्मो के आवरण क्षय होने से प्रकट होता है।

6- अमरता (अक्षय स्थिति):- अरुपी बनी हुई आत्मा को जन्म नहीं लेना और मरने का भी नहीं। दुनिया में तो आत्मा को जन्म लेना पड़ता है किन्तु सिद्ध और मुक्त बनी हुई आत्मा को जन्म लेना या मृत्यु पाना होता ही नहीं है। मोक्ष में किसी भी तरह का दुःख नहीं होता, मोक्ष में आनंद ही आनंद होता है। यह गुण आयुष्य कर्मो के आवरण क्षय होने से प्राप्त होता है।

7- न ऊंची, न नीची (अगुरु-लघु):- अमर बनी हुई आत्मा न तो उच्च होती है, नहीं नीच होती है। वहां पर छोटे-बड़े का अंतर नहीं है। वहां कोई आत्मा गरीब-श्रीमंत

नहीं है तो न वहां कोई राजा-प्रजा है। वहां सभी आत्माएं सम्मान-एकसी, वहां नहीं है मान और अपमान, न गर्व अभिमान, सभी के गुण एक समान, उस धरती का नाम है ''सिद्धशिला'' यानि मोक्ष। यह गुण गोत्र कर्मों के आवरण क्षय होने से प्रकट होता है।

8- अव्याबाध (अनन्त सुख):- शुद्ध आत्मा को रोग नहीं होता, व्याधि नहीं होती, पीड़ा नहीं होती। शुद्ध आत्मा को बुढ़ापा नहीं आता, दुःख या दर्द नहीं होते, शुद्ध आत्मा को अखंड जवानी, संपूर्ण आरोग्य व अनंत आनंद होता है। शरीर की जवानी तो क्षणिक, चंचल और अल्प होती है। आधि-व्याधि और उपाधि से मुक्त शुद्ध-बुद्ध और सिद्ध आत्मा को हमारा वंदन हो। यह गुण वेदनीय कर्मो के आवरण क्षय होने से प्राप्त होता है।

2- अजीवः- जो प्राणों को धारण नहीं करता है तथा अपने हित-अहित को समझता नहीं है और सुख-दुःख का जो अनुभव नहीं करता है उसको अजीव तत्व कहते हैं, जैसे- दीवार, किवाड़, मोटर, प्लेन इत्यादि। छः द्रव्यों में जीव द्रव्य छोड़कर बाकी के पांच द्रव्य भी अजीव ही है।

3- पुण्यः- जिससे सुख, आमोद, प्रमोद और अनुकूलता प्राप्त होती है अथवा शुभ कर्मबंध के कारणभूत क्रिया जिसमें की जाती है वह पुण्यतत्व है।

चोंट देनेवाले कहां बचेंगे ?

*** सुरेश सिरोहिया**

हम हमेशा हारते रहेंगे, ऐसा मत समझना,
हर बाजी आप ही जितेंगे, ऐसा मत समझना,
माना आज रात बहुत अंधेरी है, और लम्बी है।
पर कल सवेरा नहीं होगा, ऐसा मत समझना,
जो आज धीरे धीरे लगड़ाकर चल रहा रहा है।
वह कभी दौड़ नहीं पायेगा, ऐसा मत समझना,
गरुर रोब सबका एक दिन मिट्टी में मिल जाता है
आप हमेशा शहंशाह बने रहेंगे, ऐसा मत समझना,
पतझड़ है तभी तो सारे पत्ते साथ छोड़ रहे है
पर कल फिर बहार नहीं आयेगी,ऐसा मत समझना,
दूसरे के दिलों को चोट देनेवाले कहां बच पाते है
हमारे पाप हमेशा छुपे रहेंगे, ऐसा मत समझना
बिना बिजली और पाईप के फव्वारा किसने देखा है,
सारी दुनिया पर नासमझ है ऐसा मत समझना

4- पापः- जिसके वश में जीव में नरकादि गति का दुःख भुगतना पड़ता है ऐसी चोरी, परदारगमन, हिंसा, दुर्ध्यान आदि सावद्य (पापकारी) क्रिया करनी पड़े उसको पापतत्व कहते हैं।

5- आश्रवः- जिससे पापकर्म का द्वार खुला रहता है और कर्मरुप कचरा हमारी आत्मा में आता है अथवा जिसके द्वारा कर्म का संचय होता है उसको आश्रवतत्व कहते हैं। इसके 42 भेद है 5 इंद्रिय, 4 कषाय, 5 अव्रत, 3 योग और 25 क्रिया के माध्यम से आश्रव हो रहा है।

6- संवरः- जिस क्रिया से पापकर्म का आगमन (आने का रास्ता) रुक जाता है, यानि शुभ तथा अशुभ कर्म आते बंद हो जाते है उसे संवर तत्व कहते हैं। इसके 57 भेद है, 22 परिषह, 12+4 भावना, 5 समिति, 3 गुप्ति, 10 यतिधर्म से संवर होता है।

7- निर्जराः- जिससे बंधे हुए शुभ-अशुभ कर्म का नाश होता है और नए कर्म का बंध नहीं होता है उसे निर्जरातत्व कहते हैं। इसके 12 भेद है जो तप के 6 बाह्य एवं 6 अंतर तप है इनसे निर्जरा होती है।

8- बंधतत्वः- दूध में पानी डालने पर जिस तरह वे एक दूसरे के अंदर मिलजुल जाते है उस मुताबिक आत्मा के साथ कर्म का संबंध होता है उसको बंध करते है। इसके प्रकृति, प्रदेश, रस व स्थिति बंध यह 4 भेद है।

9- मोक्षतत्वः- ज्ञानावरण आदि आठ कर्मों का संपूर्ण रुप से नाश होने पर आत्मा कर्म के मल से रहित हो जाती है उसे मोक्ष तत्व कहते हैं।

शासन को चमकाऊ आपका भाग्य चमक जायेगा।

1444 ग्रंथों के रचियता पूज्यपाद आचार्य भगवंत श्री हरिभद्र सूरीश्वरजी महाराजा ने एक श्लोक में कहा है कि-

कर्त्तव्या चोन्नतिः सत्यां
शक्ताविह नियोगतः।
अवन्ध्यं बीजमेषा यत् तत्वतः
सर्व सम्पदाम्॥

आपकी जितनी शक्ति है इसे जिन शासन की उन्नति में लगा दे यह सभी प्रकार की सम्प्रति प्राप्त करने का अमोध साधन-कारण है। शासन को चमकाओ आपका भाग्य चमक जायेगा।

वर्ग पहेली क्रमांक-*325*

✻ प्रस्तुति :- जयंतीलाल जैन, रतलाम (म.प्र.)

1	2		■	3	4		■	5
■		■	6			■	7	
8	■	9		■	10			
	■	11		12		■		■
13	14		■		■	15		■
■		■	16		17		■	18
19				■	20		21	
22		■	23	24		■		■
	■	25			■	26		

बाएं से दाएं:-

1- जैनम् जयति--- म् (3)

3- भ. वासुपूज्यजी का निर्वाण स्थल--- (3)

6- मंदसौर के पास पार्श्वप्रभु का तीर्थ व---नाथ (1,2)

7- वं--- हावीरम् (1,1)

9- जय जय--- ती, आदि जिनंदा (2)

10-जहां जिनेश्वरदेव बिरजते है--- (4)

11-एक देवलोक का नाम विज--- (1,3)

13- लछवाड़ के पास प्रभु महावीर का तीर्थ क्षत्रि--- (3)

15-भ.शांतिनाथ का प्रसिद्ध तीर्थ भोपा--- (2)

16- इस पावन भूमि पर अंतरिक्ष पार्श्व प्रभु विराजे है (4)

19-अड़सठ तीर्थ की यात्रा करने जैसा फल यहां की यात्रा करने पर मिलता है--- पार्श्वनाथ (4)

20-नोवें तीर्थकर का एक नाम पु---मी (1,3)

22-वीरप्रभु के प्रमुख दस श्रावकों में से एक सकड़ा ---त्र (1,1)

23-भ.सुमतिनाथ तीसरे भव मे वैजयं---न नामक देवलोक से च्यवकर आए थे (1,2)

25-अट्ठम् तप यानि तीन दिनों का---स (3)

26---- पूजन करता थका सफल करुं अवतार, फल मांगू जिन आगले तार तार मोहे तार (3) (स्वस्तिक बनाते समय बोलने का दोहा)

वर्ग पहेली क्रमांक-324 का परिणाम

इ	शा	न	■	अ	जी	म	गं	ज
क्ष्वा	■	व्द	न	■	व	■	धा	रा
कु	■	पु	रि	म	ता	ल	■	ज
वं	दे	■	■	हा	■	पा	र्श्व	■
श	■	चु	ल्ल	श	त	क	■	म
■	च	ल	■	त	■	■		हा
प	■	■	पो	क	र	ण	■	वि
र	क	■	र	■	वि	पु	■	दे
मो	टा	पो	सी	ना	■	र	वा	ह

ऊपर से नीचे:-

2- भगवान पार्श्वनाथ का लांछन/चिन्ह --- (2)

3- मंदिर में चढ़ाया जाने वाला पांच पंखुड़ी वाला एक फूल जो प्रायः सफेद-पीले रंग का होता है (2)

4- ---न्दा माता वामाजी के नंदा, तुम पर वारि जाउं खोल खोल रे, दरवाजा तेरा खोल खोल रे- एक स्तवन (2,2)

5- जैन धर्म का एक प्रसिद्ध ग्रंथ---सार (3)

6- अकबार के दरबार में बिछे शाही कालीन पर चलने का इन जैन आचार्य ने इंकार किया था--- जय (2,1)

7- आबू रोड़ के निकट स्थित भ.आदिनाथ का तीर्थ (4)

8- सोलह सतियां मेंसे एक है---न्ती (3)

9- तपागच्छ का उद्गम स्थल--- (3)

12-साचा देव सुमतिनाथ भगवान का गुजरात में नड़ियाद के निकट स्थित तीर्थ (3)

14-गौतम स्वामी की जन्मस्थली--- र (4)

15-नेमिनाथ भगवान के प्रथम गणधर---त्त (3)

16-45 दिवस के इस तप में प्रतिदिन एक उपवास से शुरु करके बढ़ते क्रम में होकर अंत में आठ उपवास पर पारणा होता है (4)

17- माता त्रिशला द्वारा देखे गये सपनों में से एक ---ला (3)

18-प्रथम विहरमानजी का नाम सीमंध--- मी (1,1)

19- कर्म और भाग्य के संयोग से ही मिलती है स---(3)

21-अ---पार्श्वनाथजी की चमत्कारिक प्रतिमा अधर में स्थित है (3)

24-बाइसवें तीर्थकर श्री नेमिनाथ अ--- हित थे (2)

ज्ञानगंगोत्री क्रमांक-325

✻ आचार्य प्रवर श्री मृदुरत्नसागरजी म.सा.

संयम जीवन के सवाल...!

1- संयम जीवन लेनेवाले संयमी कितने वसा की दया पालते है ?

2- संयम जीवन में रहकर किसने सबसे लम्बा कायोत्सर्ग किया था।

3- संयम जीवन में रहे कौन से आचार्यश्री ने पंचमी की संवत्सरि को चोथ की थी ?

4- संयम जीवन में रही साध्वीजी की संख्या वर्तमान समय में कौन से समुदाय में सबसे ज्यादा है ?

5- संयम जीवन लेकर किसने यह अभिग्रह लिया था कि- जिन दिन मेरे पाप स्मृति में आये उस दिन आहार नहीं करना।

6- संयम जीवन तेतली पुत्र ने किसके प्रतिबोध से लिया था ?

7- संयम जीवन में रहे कौन से मुनि को निर्दोष आहार के लिये प्रतिदिन मृग ले जाता था ?

8- संयम जीवन तिर्यंच की भाषा माता कौन सी महासती ने स्वीकारा था ?

9- संयम जीवन श्री कृष्णाजी की मृत्यु सुनकर किसने स्वीकारा था ?

10- संयम जीवन अपने भाई की मृत्यु को देखकर किसने स्वीकारा था ?

आगमोद्धारक सदस्यता शुल्क ऑन लाईन भेजिये....

आगमोद्धारक का सदस्यता शुल्क आप ऑन लाईन बैंक में जमा कर सकते है। शुल्क भेजने के लिये बैंक- आय.सी.आय.सी.आय. बैंक, शाखा तीन बत्ती चौराहा, उज्जैन (म.प्र.)

खाता:-श्री सिद्धसेन दिवाकर चेरिटेबल ट्रस्ट, 46, सखीपुरा, उज्जैन (म.प्र.)

खाता क्रं. 030001000331

IFSC Code ICIC0000300

वर्गपहेली क्रमांक-324 के परिणाम

विजेता:-

1- श्रीमती सुधा धारीवाल, देवास (म.प्र.) - प्रथम

2- श्रीमती कुसुम गौतम जैन, आगर (म.प्र.)- द्वितीय

3- प्रियांशी जैन, नरवर (म.प्र.) - तृतीय

इनके भी उत्तर सही थे:-

हंसा वैभव जैन, देवास, श्रीमती मीना जैन, देवास, स्नेहलता जैन, मंदसौर

ज्ञानगंगोत्री क्रमांक–324 के परिणाम

विजेता:-

1- स्नेहलता जैन, मंदसौर (म.प्र.) - प्रथम

2- श्रीमती मीना विरेन्द्र जैन, देवास (म.प्र.) - द्वितीय

3- श्रीमती सुधा धारीवाल, देवास (म.प्र.) - तृतीय

सही उत्तर-

1- युगलोक, 2- गण, गच्छ 3- प्रतिस्पर्द्धा 4- धाराशास्त्री, 5- नवकार मंत्र, 6- युगल, 7- गरल 8- प्रतिज्ञा, प्रसारयान, 9- धार्मिक, 10- नवग्रह।

इनके भी उत्तर सही थे:-

हंसा वैभव जैन, देवास

सूचना- अब पहेली के लिये ड्रा द्वारा प्रोत्साहन राशि पुरस्कार में दी जायेगी। इसके लिये ड्रा निकालकर क्रमशः तीन पुरस्कार तीन विजेताओं को रुपये 31/-, 21/-, 11/- एम.ओ.भेजे जावेंगे। सही उत्तरवाले नाम हम छापेंगे ही। आप सहयोग बनाये रखिये। धन्यवाद।

नोट- पोस्टकार्ड पर अपने पते के साथ शहर के पिनकोड नंबर अवश्य डालें।

प्रिय पाठकों! उपर्युक्त प्रश्नों के उत्तर हमें पोस्टकार्ड पर लिखकर हमें दिनांक 25-6-2022 तक भेज दीजिये। सही उत्तरों में से लक्की ड्रा निकालकर प्रथम तीन को क्रमशः51/-, 31/-, 21/- रूपये की राशि से सम्मानित किया जायेगा साथ ही उत्तीर्ण होने वालों के नाम ''आगमोद्धारक'' मासिक में प्रकाशित किये जायेंगे। भेंट राशि एम.ओ. द्वारा भेजी जायेगी। - सम्पादक

पूज्यपाद सागर गच्छाधिपतिश्री का 70 से अधिक श्रमण-श्रमणी संग पूना (कोढ़्वा) में चार्तुमास

पूना- सुविशाल आगमोद्धारक सागर समुदाय के शतकीय वय को धारण करनेवालेपूज्यपाद गच्छाधिपति जिनागमसेवी आचार्य देवेश श्री दौलत सागर सूरीश्वरजी महाराजा पूज्य आचार्य भगवंत अजातशत्रु श्री नंदी वर्धन सागरसूरीजी, पूज्य आचार्य श्री आचार्य श्री हर्षसागरसूरीजी म.सा. आदि ठाणा कह पावन अमृत निश्रा के साथ पूज्यपादश्री की अभ्यर्थना में संपूर्ण जिन शासन के सभी वर्तमान युग श्रमण-श्रमणी समुदायों के द्वारा जिन शासन की महान एकता का शंखनाद करते हुए पूज्यपादश्री को 8 मार्च को श्री संघ स्थविर की उपाधि से नवाजा गया था। पूज्यपादश्री की स्थिरता अभी पूना-कात्रज श्री संघ में ही बनी हुई है। आगामी चार्तुमास कोढवा पूना में 70 से अधिक साधु साध्वीजी के स ाथ होगा । प्रवेश दिनांक 9 जुलाई को रखा गया है।

अभ्युदयपुरम् में चार्तुमासिक आराधना प्रतिष्ठा-आचार्य पदवी का मंगल आयोजन

उज्जैन-उज्जैन-पूज्यपाद अभ्युदयसागर जी म.सा. के सुशिष्य एवं अभ्युदयपुरम् तीर्थ एवं गुरुकुल के संस्थापक मालव मार्तण्ड जैनाचार्य श्री मुक्तिसागर जी म.सा. ,पू.पंन्यास श्री अचलमुक्ति सागरजी म. सा., मुनिश्री पावनमुक्ति सागर जी, मुनिश्री मनमुक्ति सागरजी म.सा.आदि ठाणा काचार्तुमास प्रवेश अभ्युदयपुरम् नवनिर्मित तीर्थ में दिनांक 9 जुलाई को होगा साथ ही यहां आराधकों को 50 दिवसीय चार्तुमास आराधना करवाई जायेगी।आपकी निश्रा में अभ्युदयपुरम् का प्रतिष्ठा महोत्सव दिनांक 4 फरवरी 2023 को 23 दिवसीय भव्य आयोजन के साथ होगा। प्रतिष्ठा के पावन प्रसंग पर पूज्य पंन्यास प्रवर श्री अचतमुक्ति सागरजी म.सा. को आचार्य पदवी पर प्रतिष्ठित किया जायेगा । प्रतिष्ठा महोत्सव के लिये 700 चार्तुमास स्थलों पर 250 आचार्य भगवंतों को आमंत्रण दिया गया है लगभग 70-75 जिन बिम्बों के साथ नवग्रह मंदिर, 45 जिनालय का निर्माण यहां हुआ है । प्रतिष्ठा महोत्सव को सफल बनाने की तैयारियां आरम्भ हो गई है।

आचार्यश्री रश्मिरत्नसूरीजी की निश्रा में 14 भगवती प्रवज्या से जिनशासन झाण्डा लहराया

अहमदाबाद- सूरी श्री प्रेम भुवनभानु समुदाय के आचार्यश्री विजय रश्मिरत्नसूरीजी म.सा.आदि लगभग 400 श्रमण-श्रमणीवृंद की अमृत निश्रा में 11 नवयुवक एवं 3 नव युवतियों की दीक्षा निमित्त 6 महोत्सवों का आयोजन किया गया । सभी दीक्षा महोत्सव राजनगरी अहमदाबाद में हुई । एक दीक्षा राहुल मुथा की शेष है जो जून माह में होगी। आपके भाई भी 10 वर्ष पूर्व दीक्षित होकर मुनि श्री पूर्वरत्न विजयजी के नाम से जाने लगे है।

चैन्नई में चार्तुमास....

✲ आचार्य श्री वर्धमानसागर सूरीश्वरजी का चार्तुमास श्री संभवनाथ जैन मंदिर उपाश्रय वेपेरी संघ में होगा। प्रवेश 8 जुलाई को है।

✲ श्री वल्लभ सूरीश्वरजी समुदाय के गच्छाधिपति आचार्यश्री नित्यानंद सूरीश्वरजी आदि ठाणा का चार्तुमास के.एल.पी. अपार्टमेंट जैन संघ में होगा। प्रवेश दिनांक 9 जुलाई को होगा ।

✲ आचार्य भगवंत श्री मेघदर्शन सूरीश्वरजी म.सा.आदि ठाणा का चार्तुमास प्रवेश दिनांक 1 जुलाई को गुजराती जैनवाड़ी मिंट स्ट्रीट साहुकार पेठ में होगा।

✲ आचार्यदेव श्री चन्द्रयश सूरीश्वरजी म.सा. आदि ठाणा का चार्तुमास श्री नेमिनाथ जैन संघा किलापार्क में होगा । प्रवेश दिनांक 3 जुलाई को होगा।

✲ आचार्यदेव श्री विमलसागर सूरीश्वरजी म.सा.आदि ठाणा का चार्तुमास पुरुषावाकम-लक्ष्मीमहल में होगा। प्रवेश दिनांक 6 जुलाई को रखा गया है।

✲ मुनिप्रवर श्री तीर्थवल्लभ विजयजी म.सा.आदि ठाणा का चार्तुमास प्रवेश नेहरु बाजार श्री संघ में 30 जून को होगा।

✲ मुनिप्रवर श्री तीर्थचैतन्य विजयजी म.सा.आदि ठाण का चार्तुमास प्रवेश चुल्लै जैन श्री संघ में दिनांक 1 जुलाई को होगा।

✲ धर्म उसको कह सकते हैं जो धर्म होकर परिणाम, ज्ञान उसको कह सकते हैं जो ज्ञान होकर परिणमे।

शासन समाचार

जैनं जयति शासनम्

गुरु कृ पापात्र युवा जैनाचार्य श्री विश्वरत्नसागर सूरीजी की निश्रा में राजगढ़ में अंजन प्रतिष्ठा गरिमा के साथ सम्पन्न हुई

✻ 7 मई को भवानीमंडी के सपन संदीप बोहरा दीक्षित हो नवरत्न गुरुकुल में शौर्यरत्नसागरजी के नाम से शोभायेंगे बडी दीक्षा सेमलिया में हुई। ✻31 मई की महामांगलिक मनावर में हुई। ✻ श्री चिंतामणी संघ गोरेगांव मुंबई के 50 से अधिक श्रावक-श्राविका ने चार्तुमास की जय बोलाई। चार्तुमास प्रवेश 9 जुलाई आषाढ़ सुदी-10 को होगा। नागदा धार के बाद मनावर होकर मुंबई के लिये विहार होगा।

राजगढ़-पूज्यपाद गुरुदेव मालव भूषण आचार्यभगवंत श्री नवरत्न सागर सूरी जी महाराजा के गुरुकुल के रत्न पूज्यश्री के नाम को रोशन करने वाले अपने युवा शिष्यों मंडली के साथ जिन शासन को शोभायमान करने वाले गुरु नवरत्न कृपापात्र, युवाहृदय सम्राट, महामांगलिक प्रदाता परम पूज्य युवा जैनाचार्य श्री विश्वरत्नसागरसूरीजी म. सा. प.पू. मुनि श्रीकीर्तिरत्न सागरजी म. सा. ,प.पू. मुनि श्री तीर्थरत्नसागरजी म. सा. प.पू. मुनि श्री उदयरत्नसागरजी म. सा. ,प.पू.मुनि श्री उत्तमरत्नसागरजी म. सा. ,प.पू.मुनि श्री उज्ज्वलरत्न सागर जी म. सा.,प.पू. मुनि श्रीगंभीररत्न सागरजी म. सा.,प.पू. मुनि श्रीरम्य रत्न सागरजी म. सा.,प.पू. मुनि श्रीलब्धि रत्नसागर जी म. सा. आदि ठाणा के साथ साध्वी वर्या श्री दमिता श्रीजी, श्री हेमेन्दु श्रीजी, श्री मुक्तिप्रिया श्रीजी, श्री भव्यपूर्णा श्रीजी म.सा. आदि ठाणा लगभग 50 साध्वीवर्या श्रीजी की अमृत निश्रा में दिनांक 1 से 8 मई तक अंजन प्रतिष्ठा महोत्सव पूज्यपाद गुरुदेव मालव भूषण आचार्य भगवंत श्री नवरत्नसागर सूरीश्वरजी महाराजा की मनोभावना के अनुकूल मंगल आर्शीवाद के साथ सम्पन्न हुआ। दिनांक 7 मई को भव्य वर्षीदान वरघोड़े का आयोजन मुमुक्षु श्री सपन के वर्षीदान भी अतिभव्य बन गया। पूरे महोत्सव में राजगढ़ के गुरु भक्तों ने अपने ऊंचे भाव रखाते हुए अंजन-प्रतिष्ठा से संबंधी सभी चढ़ावे में जोरदार रुप से भक्तों ने बढ़ चढ़कर लाभ लिया। दिनांक 7 मई को सपन बोहरा की प्रवज्या विधि भव्य रुप से खचाखच भरे धर्मसभा मंडप पूज्य आचार्य भगवंतों ने एवं उपाध्याय श्री वैराग्यरत्नसागरजी ने सम्पन्न करवाई। सम्पूर्ण क्रिया के उपरांत मुमुक्षु का नाम मुनि श्रीशौर्यरत्नसागरजी म.सा. घोषित किया गया। आप पूज्य युवा जैनाचार्य श्री विश्वरत्नसागर सूरी जी म. सा. के सुशिष्य घोषित किये गये है। दिनांक 7 मई को ही शाम को राजगढ़ श्री संघ के धर्मिष्ठों ने अति भव्य बंदोली का आयोजन किया जिसमें जोरदार रुप से होली खेली गई। रात्री में आचार्यश्री के द्वारा अंजन विधान सम्पन्न करवाया गया। दिनांक 8 मई को प्रातःकाल शुभ लग्नांश वेला में सर्वप्रथम श्री आदिनाथ दादा के महातीर्थ की संरचना का भव्य निर्माण कर बनाये गये नवरत्न हेम धाम की प्रतिष्ठा उत्साह के साथ सम्पन्न हुई यहां के बाद श्री आदिनाथ दादा के जीर्णोद्धार के बाद भव्य नवनिर्मित जिन मंदिर की प्रतिष्ठा के लिये उत्साहित श्री संघ और अन्य बाहर से पधारे श्री संघों के धर्मिष्ठों की मंगल उपस्थिति में पूज्यश्री की निश्रा में प्रतिष्ठा विधान आरम्भ हुए, शुभ मंगल मुर्हूत का समय आने पर दादा की ध्वजा लहराई गई। मुनि श्रीशौर्यरत्नसागरजी म.सा. की बड़ी दीक्षा क्रिया विधि दिनांक 22 मई को श्री शांतिनाथ प्रभु के प्राचीन तीर्थ सेमलिया में सम्पन्न हुई। पूज्यश्री यहां सैलाना से सेमलिया का संघ लेकर पधारे थे। यहां से विहार कर आप बदनावर होते हुए नागदा पधारे। यहां से आगे का विहार होगा।।चार्तुमास मुंबई के गोरेगांव क्षेत्र में श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ श्री संघ में होने जा रहा है प्रवेश 9 जुलाई को होगा।

अपूर्वमंगल गुरुकुल त्रिपुटीबंधु का चार्तुमास अंधेरी जैन श्री संघ मुंबई में होगा

✻ अंतराष्ट्रीय जैन विधिकारक भाई मनोज हरण मार्गदर्शक है।
✻ चार्तुमास मुंबई श्री संघ में होगा।

घाटियाली- राजस्थान के अजमेर जिले के किशनगढ़ में पूज्यपाद मालव विभूति तपोनिष्ठ आचार्य भगवंत श्री अपूर्वमंगल रत्नसागरसूरीजी म.सा.के शिष्य परिवार श्री नव-अपूर्व-अमर कृपापात्र बंधु त्रिपुटी मुनिप्रवर श्री आगम-प्रशम-वज्ररत्नसागरजी म.सा.आदि साधु-साध्वीवृंद की निश्रा में श्री चिंतामणी पार्श्वनाथ श्री आदिनाथ, श्री शांतिनाथ आदि जिन मंदिर में भव्य प्रतिष्ठा का महोत्सव मेचारों ओर जैनत्व का नजारा दिखाई दे रहा था। अंतराष्ट्रीय जैन विधिकारक भाई मनोज कुमार बाबूमलजी हरण के मार्गदर्शन और प्रेरणा से 11 प्रतिष्ठा महोत्सव आयोजित हुवे घटियाली सावर आदि नगरों में प्रतिष्ठा के यादगार आयोजन ने अजमेर क्षेत्र में समुदाय का मान बढ़ाया है, भाई मनोजजी का जलवा में सभी आयोजन दिखाई दिये स्मरण रहे मुनिमंडल का आगामी चार्तुमास मुबंई के अधेंरी श्री संघ में होने जा रहा है।।

श्री गिरनार महातीर्थ दादा के जिनालय पर ध्वजारोहण हुआ

जूनागढ़-परम पूज्य आचार्य भगवंत श्री विजय हेमवल्लभ सूरिजी म.सा. एवं जूनागढ़ में विराजमान पूज्य आचार्य भगवंत पदस्थ मुनि भगवंतों तथा अन्य पूज्य साधु साध्वीजी म.सा. श्री गिरनार महातीर्थ के मूलनायक दादा के जिनालय की 893 वीं सालगिरह वि.सं.2078, वैशाख-सूद-पूनम, सोमवार, दिनांक 16-5-2022 के शुभ दिन में श्री नेमिनाथ दादा जिनालय के शिखर की ध्वजा, श्री आदिश्वर भगवान जिनालय, श्री अमिजरा पार्श्वनाथ भगवान की देरी तथा अंबिकादेवी की देरी पर ध्वजारोहण सम्पन्न हुआ।

जयपुर में चार्तुमास

उज्जैन- उज्जैन में आयोजित आचार्य भगवंत श्री विश्वरत्नसागर सूरीजी म.सा. के जन्म अर्धशताब्दी महोत्सव में जयपुर श्री संघ के धार्मिष्ठों की विनंती पर पूज्य आचार्यश्री ने गच्छा धिपतिश्री की आज्ञा और आदेश से पूज्य साध्वी श्री सिद्धांतज्योति श्रीजी म.सा.आदि ठाणा का चार्तुमास जयपुर श्री संघ में करने की घोषणा की है।

जैनाचार्य श्री जयानंदसूरी का चार्तुमास पालीताना

शंखेश्वर- त्रिस्तुतिक संघ के वरिष्ठ जैनाचार्य श्री जयानंद सूरीश्वरजी म.सा. आदि ठाणा-140 का चार्तुमास पालीताना सुनिश्चित हुआ है। प्रवेश 8 जुलाई को होगा। मई में आपश्री की निश्रा में 20 दीक्षा की संभावना है। शंखेश्वर में चल रहे 800 आराधकों के उपधान तप की माल 20 मार्च को होगी। पालीताना में 12 सितंबर से उपधान तप होगा। माल 2 नवंबर को होगी।

पूज्य गच्छाधिपतिश्री का चार्तुमास झाबुआ में

झाबुआ- पूज्यपाद राष्ट्रीयसंत आचार्य भगवंत श्री जयवंतसेन सूरीश्वरजी म.सा. के पट्टधर सुशिष्य वर्तमान गच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री नित्यसेन सूरीश्वरजी म.सा.का चार्तुमास झाबुआ श्री संघ में होगा। प्रवेश 4 जुलाई को होगा।

उपाध्यायश्री का चार्तुमास

शंखेश्वर- पू. नूतन उपाध्यायश्री दिव्यानंदविजयजी का चार्तुमास पालीताना होगा। प्रवेश 8 जुलाई को होगा।

केशरवाड़ी में उपधान तप

चैन्नई- श्री कलापूर्ण जैन आराधक मंडल के संयोजन में केशरवाड़ी में श्रावक से श्रमण बनने की धार्मिक क्रिया उपधान का आयोजन होने जा रहा है। पू. आचार्यश्री उदयप्रभ सूरीजी म.सा. की निश्रा में आयोजित होनेवाले उपधान का प्रथम मुर्हूत 18 दिसंबर को है, द्वितीय मुर्हूत 20 दिसंबर को तथा मोक्षमाला रोपण 5 फरवरी 2023 को होगा।

गिरनार तीर्थ में नव्वाणुं यात्रा

गिरनार- तपोवन के पूज्य पंन्यास प्रवर श्री चन्द्रशेखरविजयजी म.सा. के शिष्य प्रशिष्य आचार्य श्री हेमवल्लभ सूरीश्वरजी म.सा., पंन्यास श्री विजय पद्मदर्शन म.सा. एवं मुनिश्री दिव्यपद्म विजयजी म.सा.आदि ठाणा की अमृत निश्रा में श्री गिरनार तीर्थ में नव्वाणुं यात्रा होने जा रही है। पूज्यश्री का प्रवेश 9 नवंबर को होगा एवं नव्वाणुं यात्रा 10 नवंबर से आरंभ होगी। सम्पर्क करें- 9265643444

अध्यात्मयोगी गणि श्री आदर्शरत्नसागरजी का ओली पारणा राजगढ़ में शासन प्रभावना के साथ हुआ

* महामांगलिक 31 मई को झाबुआ में हुई।
* मुनि अक्षतरत्नसागरजी को गणि पदवी प्रदान होगी।
* **चातुर्मास प्रवेश उदयपुर में 9 जुलाई को होगा।**

भोपावर-झाबुआ-आचार्य भगवंत श्री नवरत्नसागर सूरीजी महाराजा के प्रशिष्य गणिवर्य श्री आदर्शरत्न सागर जी म.सा. को 77 वीं वर्धमान तप ओली का पारणा राजगढ़ श्री संघ में अंजन-प्रतिष्ठा के उपरांत 12 मई को सम्पन्न हुआ। इस प्रसंग पर पूज्य युवा जैनाचार्य आचार्य श्री विश्वरत्नसागर सूरीजी म.सा., आचार्य श्री मृदुरत्नसागरसूरीजी म.सा. और उपाध्याय प्रवर श्री वैराग्यरत्नसागरजी म.सा. के साथ बड़ी संख्या में साध्वी भगवंतों की भी पावन निश्रा रही। श्री मनोहरलालजी कांग्रेसा परिवार ने पूज्यश्री के पारणा का लाभ लिया। राजगढ़ श्री संघ धर्मिष्ठों की बड़ी संख्या में उपस्थिति रही। अजंन-शलाका प्रतिष्ठा महोत्सव में पूज्य आचार्य भगवंत श्री विश्वरत्नसागर सूरीजी ने पूज्यपाद सागर गच्छाधिपति की आज्ञानुसार मुनि श्री अक्षतरत्न सागरजी म.सा. को गणि पदवी प्रदान की जायेगी, इसकी घोषणा की, अनुकुलता से पदवी प्रदान की जायेगी। स्मरण रहे गणिवर्य श्री का आगामी चातुर्मास उदयपुर निश्चित हुआ है। आगे वर्षों के लिये भी आपके चातुर्मास की विनंतियां है।

11 करोड़ की संपत्ति गोशाला और गरीबों को दान कर सुराना परिवार ने प्रभुवीर का श्रमण पंथ स्वीकार किया

जयपुर- पूज्य श्री महेन्द्रसागरजी म.सा., पूज्य श्री मणिप्रभा श्रीजी म.सा. आदि ठाणा की अमृत निश्रा में 20-22 मई तक आयोजित श्रमण पथ स्वीकार दीक्षा महोत्सव ने जयपुर में जिन शासन की अद्भूत प्रभावना की। 21 मई को मुमुक्षु सुराना परिवार के राकेशजी लीना बहन एवं पुत्र अभय सुराना का यादगार वर्षीदान वरघोड़ा निकला। साथ ही पूजा नलवाया की दीक्षा हुई। मोहनवाड़ी में अरिहंत वाटिका तक आयोजित वर्षीदान वरघोड़े के पश्चात पूज्य श्री महेन्द्र सागरजी म.सा., पूज्य मनीष सागरजी म.सा. तथा साध्वीवर्या श्री मणिप्रभा श्रीजी के सारगर्थित प्रवचन हुए। 22 मई को जैन श्वेतांबर खरतरगच्छ संघ के तत्वावधान में आयोजित दीक्षा महोत्सव में राकेश सुराना, मुनि यशोवर्धनसागरजी, अभय-बाल मुनि जिनवर्धनसागर और लीना सुराना-साध्वी संवररुचि नाम घोषित किये गये। पूजा नलवाया का नाम साध्वी तत्वरुचि घोषित हुआ।

आचार्यश्री का चार्तुमास शिवपुरी में

शिवपुरी- शास्त्र विशारद प.पू. जैनाचार्य श्रीमद् विजय धर्मसूरीजी म.सा. की परम्परा के गुरुदेव श्रीमद् विजय प्रेमसूरीश्वरजी म.सा. के आजीवन चरणोपासक आचार्य श्री कुलचंद्रसूरीजी म.सा. पंन्यास प्रवर श्री कुलदर्शन विजयजी म. आदि ठाणा का सन् 2022 का चार्तुमास शिवपुरी (म.प्र.) में होना निश्चित हुआ है। श्री धर्मसूरीश्वरजी म.सा.की 100 वीं पुण्यतिथि पू.आ. श्री कुलचंद्रसूरीजी (के.सी.म.) की निश्रा में धूमधाम से मनाई जायेगी आपके चार्तुमास से विजय धर्मसूरि समाधि मंदिर का विकास तथा कायाकल्प हो सके इसलिये आपका चार्तुमास शिवपुरी में हो रहा है।

श्री देव एवं गुरु की प्रतिमा प्रतिष्ठा होगी

उदयपुर- यहां की माधव कालोनी में स्थित श्री संभवनाथ जैन श्वेतांबर मंदिर में श्री नाकोड़ा भैरवजी एवं श्री गुरु गौतम स्वामीजी की प्रतिमा प्रतिष्ठा का आयोजन पूज्य जैनाचार्य श्री निपुणरत्न सूरीश्वरजी म.सा. आदि ठाणा की निश्रा में सम्पन्न होगी। दिनांक 13 जून को प्रतिष्ठा एवं वरघोड़े के चढ़ावे होंगे। 14 जून को गुरु भगवंतों का भव्य वरघोड़े के साथ प्रवेश होगा। दिनांक 15 जून को प्रातःकाल शुभ मंगल वेला में प्रतिष्ठा क्रिया आचार्यश्री के द्वारा सम्पन्न करवाई जायेगी इसके बाद सत्तर भेदी पूजन होगी।

इन्दौर रेसकोर्स में चार्तुमास

पालीताना- आचार्य त्रिपुटी बंधु आचार्यश्री के द्वारा पूज्य गणिवर्य सम्यकचंद सागरजी म.सा.का चार्तुमास रेसकोर्स-इन्दौर घोषित हुआ है।

एक साथ मोक्ष मार्ग की पथगामी बनेंगी जुड़्वां बहनें

✻ आचार्य बंधु-बेलड़ी ने प्रदान किया 26 मई का दीक्षा मुर्हूत

रतलाम- महावीर जन्म कल्याणक पर्व पर जन्म लेनेवाली जुड़्वां बहनें तनिष्का और पलक चाणोदिया अब एक साथ दीक्षा लेकर मोक्ष मार्ग की पथगामी बनेंगी। आचार्य बंधु बेलड़ी ने उन्हें रतलाम में अपनी निश्रा में दीक्षा के लिये 26 मई का शुभ मुर्हूत प्रदान किया । गुजरात के आणंद शहर में आयोजित दीक्षा मुर्हूत प्रदान महोत्सव आचार्य बंधु-बेलड़ी जिनचंद्रसागर सूरीश्वरजी व प्रशमानंदसूरीजी (श्री रामचंद्रसूरीजी समुदाय) आदि विशाल श्रमण-श्रमणीवृंद की निश्रा में रखा गया था। रतलाम के टाटा नगर निवासी सुश्रावक परिवार संतोष-शोभा चाणोदिया परिवार की लाड़लियां मुमुक्षु जुड़्वां बहन 15 वर्षीय तनिष्का और पलक को दीक्षा मुर्हूत प्रदान करने के लिये परिवार की ओर से अनिल-सरोज चाणोदिया ने विनंती की। इसके बाद आचार्य बंधु-बेलड़ी जिनचंद्रसागर सूरीश्वरजी ने उन्हें संयम जीवन अंगीकार करने के लिये रतलाम में दीक्षा का 26 मई का शुभ मंगल मुर्हूत प्रदान किया गया। चाणोदिया की सांसारिक बड़ी बेटी दीपिका वर्तमान में चंद्रवर्षा श्रीजी पूर्व में ही वर्ष 2014 में सूरत शहर में संयम जीवन स्वीकार कर चुकी है । इस अवसर पर आणंद शहर में दीक्षार्थी बहनों का चल समारोह आचार्य बंधु-बेलड़ी की निश्रा में निकाला गया। दीक्षार्थी बहनों का आणंद श्री संघ व शाह सरस्वती बेन रमणलाल परिवार की ओर से शाल, श्रीफल भेंट कर बहुमान किया गया।

एक साथ होगी तीन दीक्षाएं:-

दीक्षा पर्व में ही रतलाम के बाल मुमुक्षु ईशान विशाल कोठारी की भी दीक्षा पूर्व में ही नियत हो चुकी है। अब इसी अवसर पर दोनों जुड़्वां बहनें भी दीक्षा स्वीकार करेंगी । दीक्षा पर्व को निश्रा प्रदान करने के लिये आचार्य बंधु-बेलड़ी जिनचंद्रसागर सूरीश्वरजी आदि ठाणा-7 गुजरात से उग्र विहार कर मालवा में मई के प्रथम सप्ताह में प्रवेश करेंगे।

जैनाचार्यश्री रत्नसुन्दर सूरीजी का चार्तुमास

अहमदाबाद- पूज्यपाद आचार्य भगवंत श्री रत्नसुन्दर सूरीश्वरजी म.सा. आदि विशाल संख्या में साधु-साध्वी भगवंतों का चार्तुमास अहमदाबाद में होगा। पूज्यश्री का मंगल प्रवेश 27 मई को अहमदाबाद में हुआ । आपका चार्तुमास श्री भुवनभानु स्मृति मंदिर पंकज जैन संघ, पालड़ी में होगा। प्रवेश दिनांक 9 जुलाई को रखा गया है।

साध्वीश्री हेमेन्द्र श्रीजी का चार्तुमास पूना में

पूना-सागर समुदाय की वरिष्ठ साध्वीवर्या श्री हेमेन्द्रश्रीजी म.सा. आदि ठाणा का चार्तुमास पूज्यपाद सागर गच्छाधिपति की पावन निश्रा में पूना कोढ़्ला में होगा।

पालीताना में उपधान

पालीताना- पूज्य आचार्य भगवंत श्री जयानंद सूरीश्वरजी महाराज एवं पूज्य उपाध्याय श्री दिव्यानंदविजयजी म.सा.आदि विशाल संख्या में साधु-साध्वीवृंद की अमृत निश्रा श्री गजभंवर जैन धर्मशाला में 12 सितंबर से उपधान तपाराधना का शुभारंभ होगा। तप की मोक्षमाल 2 नवंबर को होगी।

साध्वीश्री दिव्ययशाश्रीजी का चार्तुमास बैंगलोर में

बैंगलोर- सागर समुदाय की वरिष्ठ साध्वीवर्या श्री निर्मलयशा श्रीजी म.सा. की सुशिष्या साध्वी श्री दिव्ययशा श्रीजी म.सा. श्री दिव्यदर्शा श्रीजी म.सा. आदि ठाणा का मंगलमय चार्तुमास बैंगलौर के श्री जैन श्वेतांबर श्री संघ मंदिर 7/4 चौथा मेनरोड़ गांधीनगर पोस्ट बॉक्स 9717 बैंगलोर-560009 (कर्नाटक) में होने जा रहा है। चैन्नई से आपका विहार बैंगलोर की ओर चल रहा है। सम्पर्क- दीपक शाह-9739177900,महाराज-9893277471

आचार्यश्री का चार्तुमास आबांवाडी में

अहमदाबाद-पूज्यपाद आचार्य देव श्री राजयश सूरीजी महाराज का चार्तुमास एवं बहन महाराज का चार्तुमास आंबावाड़ी-अहमदाबाद (गुज.)में होगा

भक्ति योगाचार्य का चार्तुमास मुंबई में

मुंबई- यहां के गोरेगांव जवारानगर जैन श्वेतांबर श्री संघ में पूज्य आचार्य भगवंत भक्ति योगाचार्य श्री यशोविजय सूरीश्वरजी म.सा.आदि ठाणा का चार्तुमास होगा। चार्तुमास प्रवेश 30 जून को होगा।

वचन सिद्ध जैनाचार्य श्री नरदेवसागर सूरीजी की निश्रा में श्री शंखेश्वर तीर्थ में 51 दिवसीय चातुर्मासिक आराधना

✻ चार्तुमास प्रवेश 9 जुलाई को श्री शंखेश्वर महातीर्थ में होगा।
✻ उपधान तप आसोज सुदी-15 से आरम्भ होगा।

शंखेश्वर- श्री 108 पार्श्वनाथ भक्तिविहार जैन धर्मशाला तहसील सभी जिला पाटण (गुज.)-384246 में सागर समुदाय के वरिष्ठ जैनाचार्य भोपावर तीर्थ प्रतिष्ठाचार्य श्री नरदेवसागरसूरीजी म.सा. मुनिश्री पद्मकीर्ति सागरजी म.सा. आदि साधु-साध्वी ठाणा के चातुमार्सिक मंगल प्रवेश दिनांक 9 जुलाई के उपरांत दिनांक 12 जुलाई से 51 दिवसीय चार्तुमास आराधना आरंभ होने जो रही है। चार्तुमास का सम्पूर्ण लाभ मातुश्री सीता बहन लीलाधरभाई नेमजीभाई वडेरा (वादवाला) परिवार ने लिया है। चार्तुमास आराधना की पूर्णाहुति 2 सितंबर को होगी। पूज्यपादश्री की निश्रा में उपधान तप की आराधना भी आसोज सुदी-15 से आरंभ होगी।

वागड़ विभूषण का पालीताना में चार्तुमास प्रवेश के पूर्व वागड़ में धर्म जाग्रति शंखनाद किया

✻ मोटागांव में जिनशासन प्रभ ावक महोत्सव
✻ उपधान तपाराधना 27 अक्टूबर से होगी।
✻ पालीताना में चार्तुमास प्रवेश 10 जुलाई को

मोटागांव- मालव भूषण आचार्य भगवंत गुरुदेव श्री नवरत्न सागरसूरी जी म.सा. के तीसरे सुशिष्य वागड़ विभूषण जैनाचार्य श्री मृदुरत्न सागर सूरीजी म.सा. मुनिश्री पवित्ररत्न सागरजी म.सा.,साध्वीवर्या श्री भव्यपूर्णा श्रीजी म.सा.आदि ठाणा का राजगढ़ अंजन प्रतिष्ठा में निश्रा के उपरांत आपका विहार वागड़ में हुआ। मोटागांव में दिनांक 22 से 26 मई तक जिन भक्ति महोत्सव के आयोजन के अंतर्गत दिनांक 22 मई को श्री पार्श्वनाथ जिनालय का ध्वजारोहण किया गया। दिनांक 23 मई को 18 अभिषेक हुए। श्री नाकौड़ा भैरव मंदिर के लिये शिलान्यास का आयोजन 25 मई को शिला स्थापना के साथ हुआ। पूज्य उपाध्याय श्री वैराग्यसागरजी म.सा. की भी पावन निश्रा रही। चार्तुमास हाड़ेचा भवन पालीताना में होगा। प्रवेश 10 जुलाई आषाढ़सुद-11 को रखा गया है इसके साथ ही आपश्री की निश्रा में उपधान तप का शुभारंभ 27 अक्टूबर को होगा। चार्तुमास एवं उपधान तप के संपूर्ण लाभार्थी प्रेमलता बहन जयंतीलाल, प्रयास गांधी परिवार तलवाड़ावाले है। वागड़क्षेत्र के धर्मिष्ठों के लिये यह विशेष आयोजन है। वागड़ से बड़ी संख्या धर्मिठों के पालीताना पहुंचने की संभावना है। दिनांक 31 मई को आपकी महामांगलिक का आयोजन हुआ।

आर्वी में ध्वजारोहण होगा

आर्वी- श्री जिन पीयूषसागर सूरीजी के द्वारा प्रतिष्ठित यहां के सुपार्श्वनाथ जिन मंदिर और दादावाड़ी में 5 वीं वर्षगांठ पर अंतराष्ट्रीय जैन विधिकारक भाई श्री मनोजकुमार बाबूमलजी हरण के मार्गदर्शन में दिनांक 13 एवं 14 जून को ध्वजारोहण प्रसंग पर 18 अभिषेक के आयोजन के साथ ध्वजा का वरघोड़ा आयोजित किया गया। विजय मुहूर्त में विधिकारक भाई गौरव जैन ने अनुष्ठानपूर्वक ध्वजा चढ़वाई एवं सत्तरभेदी पूजा पढ़ाई गई।

श्री सिद्धाचल का छःरिपालित संघ

महिदपुर- पूज्य साध्वीवर्या श्री कल्पबोधि श्रीजी म.सा. के 299 वीं ओली पारणा प्रसंग पर श्री सिद्धाचल महातीर्थ का संघ सोनगढ़ा में आयोजित किया गया। पूज्य जैनाचार्य श्री सागरचंद्र सागरसूरीजी म.सा.आदि ठाणा की निश्रा रही। महिदपुर के मेहता परिवार के द्वारा आयोजित संघ के लिये 24 मई को महिदपुर से प्रयाण के बाद 25 मई को शंखेश्वर से राजेन्द्रधाम 26 मई को राजेन्द्र धाम से अढ़ारद्वीप 27 मई को अढ़ीद्वीप सिद्धाचल नवरत्नधाम जम्बुद्वीप में पारणा महोत्सव के बाद 28 मई को दादा के दरबार में माल हुई।

कालधर्म

जैनाचार्यश्री योगतिलक विजयजी के शिष्य मुनि श्री चरणतिलक विजयजी एवं मुनिश्री चैतन्य तिलक विजयजी का मोगरा से जोधपुर की ओर विहार करते हुए दिनांक 21 मई को कालधर्म हो गया।

चार्तुमास.... चार्तुमास....

आचार्यश्री तीर्थभद्रसूरीजी म.सा. के सुशिष्यों के आगामी चार्तुमास-

✻ पूज्य मुनिश्री तीर्थतिलक विजयजी म.सा., साध्वी श्री पूर्णयशा श्रीजी का चार्तुमास मैसूर श्वेतांबर मूर्ति पूजक संघ में होगा।

✻ पूज्य मुनिश्री तीर्थपूर्ण विजयजी म.सा. का चार्तुमास तेनाली श्री संघ में होगा।

✻ पूज्य मुनिश्री तीर्थसुन्दर विजयजी म.सा. का चार्तुमास सिकन्दराबाद श्री संघ में होगा।

✻ पूज्य मुनिश्री तीर्थनन्दन विजयजी म.सा. का चार्तुमास मदुराई श्री संघ में होगा।

✻ पूज्य मुनिश्री तीर्थबोधि विजयजी म.सा. का चार्तुमास चुलई श्री संघ में होगा।

✻ पूज्य मुनिश्री तीर्थध्यान विजयजी म.सा. का चार्तुमास कडप्पा श्री संघ में होगा।

✻ पूज्य मुनिश्री तीर्थचैतन्य विजयजी म.सा. का चार्तुमास कोयबंटूर श्री संघ में होगा।

✻ पूज्य मुनिश्री तीर्थपूर्ण विजयजी म.सा. का चार्तुमास तेनाली श्री संघ में होगा।

✻ परम पूज्य आचार्य श्री राजशेख सूरीश्वरजी म.सा., आचार्य श्री रत्नाकर सूरीश्वरजी म.सा.आदि ठाणा का चार्तुमास श्री सांचोर श्री संघ में होगा।

✻ **अहमदाबाद-** पू.पंन्यास हंसबोधि विजयजी म.सा.आदि ठाणा का आगामी चार्तुमास सेटेलाईट श्री प्रेरणा तीर्थ संघ अहमदाबाद में निश्चित हुआ है।

✻ **सूरत-** आगमोद्धारक श्री सागर समुदाय के आचार्य भगवंत वर्धमान तपोनिधि श्री नयचंदसागर सूरीजी म.सा.का आगामी चार्तुमास ऊंकार सूरी आराधना भवन, पाल-सूरत में निश्चित हुआ है।

✻ **जयपुर-** परम पूज्य खातर गच्छाधिपति आचार्य श्री जिन मणिप्रभ सूरीजी का 2022 का चार्तुमास जयपुर श्री संघ में होगा। श्री गिरनार तीर्थ में श्री संघ को पूज्यश्री ने स्वीकृति प्रदान की।

✻ **इन्दौर-** सागर समुदाय के वरिष्ठ आचार्य श्री नरदेवसागर सूरीजी महाराजा के सुशिष्य आचार्य श्री चन्द्रकीर्तिसागर सूरीश्वरजी म.सा. का आगामी चार्तुमास श्री तिलकेश्वर पार्श्वनाथ श्री संघ तिलकनगर, इन्दौर में होगा। पूज्य आचार्यश्री की निश्रा में श्री संघ की विनंती पर पूज्यश्री ने स्वीकृति प्रदान की।

✻ आचार्य भगवंत श्री तीर्थ भद्रसूरीश्वरजी म.सा.आदि ठाणा का आगामी चार्तुमास विजयवाड़ा में होगा।

✻ **सादड़ी-** श्री वल्लभसूरी समुदाय के श्री धर्मनंदविजयजी ध्रुव म.सा.आदि ठाणा का चार्तुमास-सादड़ी (राज.) में होगा।

✻ पूज्य आचार्य श्री लब्धि सूरीजी म.सा. के समुदाय के आचार्यश्री महासेन सूरीश्वरजी म.सा.आदि ठाणा का चार्तुमास श्री सुपार्श्वनाथ श्री संघ दखनगिरी में होगा। श्री पार्श्वलब्धि पुरम् शंखेश्वर में अंजन-प्रतिष्ठा महोत्सव अप्रेल (चैत्र) में होगा।

✻ विमल गच्छाधिपति आचार्य देवेश श्री प्रद्युम्नविमल सूरीश्वरजी म.सा.आदि ठाणा का चार्तुमास डूंगरपुर जैन श्वेतांबर श्री संघ डूंगरपुर (राज.) में होगा। आपका प्रवेश दिनांक 3 जुलाई को होगा।

✻ अनुयोगाचार्य पूज्य श्री वीररत्न विजयजी म.सा. का चार्तुमास श्री जैन श्वेतांबर श्री संघ उन्हेल जिला उज्जैन (म.प्र.) में होगा।

✻ सागर समुदाय की साध्वीवर्या श्री कुसुमश्रीजी म.सा.की सुशिष्या साध्वी श्री चन्द्ररत्नाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा का चार्तुमास उज्जैन में श्री ऋषभदेव छगनीराम पेढ़ी में होगा।

✻ सागर समुदाय की वरिष्ठ साध्वीवर्या श्री सूर्यकांता श्रीजी म.सा.आदि ठाणा का चार्तुमास उज्जैन के सुभाषनगर स्थित चौमुखी श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ जिन मंदिर उपाश्रय में होगा।

✻ पूज्य अनुयोगाचार्य प्रवर श्री वीररत्नविजयजी म.सा. तथा पूज्य आचार्य देव श्री विजय पद्मभूषणरत्न सूरीश्वरजी म.सा. आदि 21 साधु-साध्वी भगवंतों का **चार्तुमास श्री कामितपूरण पार्श्वनाथ तीर्थ उन्हेल जिला उज्जैन (म.प्र.) में होगा।**

जैनाचार्य श्री पूर्णचंद्र सूरीजी का चार्तुमास

मुंबई- कलापूर्ण सूरीजी म.सा. के समुदायवर्तीय पूज्यपाद जैनाचार्य श्री पूर्णचंद्र सूरीश्वरजी म.सा.आदि ठाणा का चार्तुमास श्री आदिनाथ जैन जिनालय एम.जी.रोड़, श्री नगर जैन संघ गोरेगांव (वेस्ट) मुंबई में होगा।

चार्तुमास

आचार्य रत्नसेनसूरीजी म.सा. आदि ठाणा का चार्तुमास श्री त्रिभुवन तारक श्वेतांबर मूर्तिपूजक तपागच्छ संघ एकवीरा मेंशन-ग्राउण्ड फ्लोर स्टेशनरोड़, भद्रकाली मंदिर के पास भायंदर (वेस्ट)-40101 (महा.) में होगा। प्रवेश 3 जुलाई को रखा है।

।। श्री परमात्माय नमः ।।

जीवदया फंड

श्री नगीनचंद कपुरचंद झवेरी

सुभाष चौक, गोपीपुरा, सुरत - 1
मो.: 09825414470 / 9820078772
स्थापना वि. सं. 1962
इ.स. 1906 रजि. नं.- 1744
PAN : AAATS8024L

शेठ नगीनचंद कपुरचंद झवेरीना प्रयासथी

पैसा भेजने का पता :

प्रफुल अमीचंद झवेरी

26, खटाऊवाडी, गोरेगांवकर लेन,
सेन्ट्रल सिनेमानी पाछळ,
मुंबई - 400 004.
ऑफिस फोन : 2387 8476
मोबाईल : 98200 78772

धर्मप्रेमी सद्गृहस्थश्री, सादर प्रणाम !

जीवदया फंड संस्था सुरत के दानवीर शेठ श्री नगीनचंद कपुरचंद झवेरी के प्रयासो के द्वारा स्थापित एक रजीस्टर्ड ट्रस्ट है। यह जीवदया फंड संस्था के द्वारा कतल के लीये जानेवाले ओर बीन उपयोगी जीवो को छुडवाकर के सुरत की पांजरापोल में भेजा जाता है। यह कार्य पीछले ११४ सालो से यह संस्था कर रही है। ओर शेठश्री के उत्तम पुण्यबल की वजह से यह कार्य के अंदर लगातार प्रतिवर्ष प्रगति हो रही है। जैसे की पीछले पांच सालो के दौरान (एप्रील - २०१४ से मार्च - २०१९) १०७९८ जीवो को छुडाया / बचाया गया है।

हमारे आंगन में आनेवाले बेझुबान जीवो को पांजरापोल के अंदर ट्रस्टीओ के द्वारा नीगरानी करके सोंपा जाता है। ओर पशु के संपूर्ण जीवनकाल तक उसको संभालकर रखा जाता है।

अनंत दया के सागर भगवान श्री महावीर प्रभु के शासन के दो स्तंभ है। अहिंसा ओर जीव के उपर मैत्री। सर्वज्ञश्री के यह संदेश को सार्थक करने के लिये दोनो का भी बहुत बडा महत्व है। जैसे की

आपके परिवार के कोई भी सभ्य का जन्मदिन
पशु परिवार के एक सभ्य को जीवनदान देकर मना सकते है।

आपके परिवार मे आये हुए शुभ लग्नोत्सव के दौन
एक पशु युगल को जीवनदान देकर उनका जीवन उत्सवमय बना सकते है।

कर्मसंयोग के कारन आई हुई बीमारी का दुःख ओर अशाता को टालने के लीये
कोई पशु को अभयदान प्रदान करके महाशाता का सुख प्रदान करे।

अपने स्वजन के मृत्यु के दुःखद समय में एक पशु को
मृत्यु के मुखमें से छुडवाने से आपश्री को सांत्वना भी प्राप्त होती है ओर
आपके स्वजन की सदगति प्राप्ती की प्रार्थना भी कर सकते है।

पवित्र पर्व के धर्मोत्सव के समय एक जीवको
जीवनदान देकर पर्व उपासना को दया ओर करुणामय बनाये।

आपश्री हंमेशा के लीये तिथि का भी चयन कर सकते है। यह तिथि के दौन दान में दी गई रकम का जो ब्याज मीलता है उसमें से जीव को छुडवाया जायेगा।

यह संस्था के द्वारा एप्रील २०२० से मार्च २०२१ के एक वर्ष के समय जो की लोकडाउन था,
उस समय में कुल २५९१ जीवो को छुडवाया गया है।

आपश्री चेक या ड्राफ्ट जीवदया फंड के नाम का बनाए। रोकड़ रकम में भी आप योगदान दे सकते है। (आपश्री का अनमोल योगदान सुरत ओर मुंबई में उपर दिये गये पते पर भीजवा सकते है।)

आपश्री आपका योगदान हमारे बेन्क खाते के अंदर भी जमा करवा सकते है। जीसकी जानकारी नीचे दी गई है। हमारी संस्था का 80-G नंबर AAATS 8024 LF 20210 है।

Bank Name	: AXIS BANK LTD.	Bank Name	: BANK OF INDIA
A/c. Name	: JIVDAYA FUND	A/c. Name	: JIVDAYA FUND
IFSC	: UTIB0002274	IFSC	: BKID000001
A/c. No.	: 921010033621820	A/c. No.	: 00120100001219
Branch	: Charni Rd, Mumbai	Branch	: Mumbai Main Branch

जीवदया की शुभ भावना से कीये हुए कार्य से अक्षय सुख ओर मोक्षमार्ग की प्राप्ति होती है ओर नरकगति के कर्म का ओर अनेक भवो के पापो का क्षय भी जीवदया का कार्य करने से होता है। जीवदया का कार्य तीनो लोकमें श्रेष्ठ ओर सर्वोत्तम कार्य है।

दान अेज सफल जीवन

लि. ट्रस्टीगण

प्रफुल अमीचंद झवेरी
पुष्पसेनभाई पानाचंद झवेरी
विरेन्द्र नेमचंद झवेरी

नलीनभाई फकीरचंद
शरदभाई गुलाबचंद कांटावाला
उषाकांत साकेरचंद झवेरी

आकाश ने भगवती प्रवज्या ग्रहण कर मुनिश्री मोक्षयशविजयजी नाम पाया

उज्जैन- शांतिदूत जैनाचार्य पूज्यपाद वल्लभ समुदाय के गच्छाधिपति श्री विजयनित्यानंद सूरीश्वरजी महाराजा आदि साधु-साध्वी की अमृत निश्रा में आकाश का प्रवज्या महोत्सव जोरदार रहा, भव्य वर्षीदान वरघोड़े से जैनत्व का डंका बजा। 4 मई को को विशाल धर्मसभा में हजारों धर्मिष्ठों की उपस्थिति में पूज्यश्री ने आकाश को रजोहरण प्रदान किया गया। दीक्षा उपकरणों की अच्छी बोली के साथ साधुवेश धारण कर नूतन मुनिश्री मोक्षयशविजयजी नाम पाया। गच्छाधिपति ने यहां से इन्दौर के लिये विहार किया। 8 मई को नगर प्रवेश हुआ, 9 मई को भी प्रकृति कालोनी में प्रवेश हुआ, दोनों स्थानों पर सामुहिक प्रवचन हुए। आपश्री ने चैन्नई के लिये विहार प्रारंभ किया है जहां आपका चार्तुमास होगा।

खादड़ा में द्वय जैनाचार्य की निश्रा में अंजन प्रतिष्ठा महोत्सव का यादगार आयोजन हुआ

खादड़ा- पाली जिले के खादड़ा में श्री शांतिनाथ परमात्मा के जिनमंदिर का जीर्णोद्धार के साथ शिखरबद्ध निर्माण करवाकर परमात्मा-देवी देवताओं की अंजन-प्रतिष्ठा महोत्सव के साथ भव्य आयोजन 15 से 22 मई के मध्य सम्पन्न हुआ। -पूज्य आचार्य श्री रविशेखरसूरीजी म.सा.एवं आचार्य श्री ललितशेखर सूरीजी म.सा. आदि ठाणा की निश्रा में यह महोत्सव हुआ। विविध धर्मोत्सव, पूजन, महापूजन के साथ 22 मई को पूज्यश्री के द्वारा मंगलकारी मंत्रोच्चार के साथ प्रातःकाल परमात्मा आदि देवी देवताओं को गद्दीनशीन किया गया। 23 मई को द्वारोद्घाटन के साथ महोत्सव की पूर्णाहुति हुई। स्मरण रहे पूज्यश्री आदि ठाणा का चार्तुमास श्री नाकोड़ा पार्श्वनाथ महातीर्थ में होने जा रहा है। प्रवेश 10 जुलाई को होगा।

जैनाचार्य श्री रविशेखरसूरीजी द्वारा 4 जून को बालवाड़ा में प्रतिष्ठा होगी

मचीन्द्र-राजस्थान के राज समन्द जिले में श्री ओसवाल श्वेतांबर जैन श्री संघ मचीन्द में पूज्य आचार्य श्री रविशेखरसूरीजी म.सा.एवं आचार्य श्री ललितशेखर सूरीजी म.सा. आदि ठाणा की निश्रा में श्री विमलनाथ जिन मंदिर में श्री गौतम स्वामीजी, श्री मणिभद्रवीर, श्री नाकोड़ा भैरवजी, सरस्वतीदेवीजी की प्रतिमा प्रतिष्ठा का आयोजन 31 मई से आरंभ होकर 5 जून को सम्पूर्ण होगा। विविध पूजन अनुष्ठानों के साथ दिनांक 4 जून को मंगल मुर्हूत में पूज्यश्री ने मंत्रोच्चार के साथ प्रतिष्ठा सम्पन्न होगी। दिनांक 5 जून को द्वारोद्घाटन के साथ महोत्सव की पूर्णाहुति होगी।

✻ व्यक्ति दूसरों को कष्टदेने के क्षणों में स्वयं अपनी आत्मा को दुर्गति के बंधनों के लिये तैयार करता है, जैसे रस्सी रस्सी से बंधती है, तब गाय-बैल आदि किसी को बांधती है।

रायपुर में चार्तुमास

रायपुर- राष्ट्रसंत श्री ललितप्रभ सागरजी म.सा. एवं श्री चन्द्रप्रभ सागरजी म.सा.आदि ठाणा का चार्तुमास रायपुर श्री संघ-छत्तीसगढ़ में होने जा रहा है। आपका चार्तुमास प्रवेश 10 जुलाई को होगा। 10 जुलाई से संवत्सरी तक प्रवचन माला इण्डोर स्टूडियो में होगी।

शंभुपुरा में प्रतिष्ठा महोत्सव

शंभुपुरा (चित्तौड़ाढ़, राज.)- के समीप शंभुपुरा में श्री आदिनाथ दादा, श्री महावीर स्वामीजी, श्री शांतिनाथ प्रभु आदि जिन प्रतिमा प्रतिष्ठा महोत्सव का आयोजन 12 से 14 मई तक किया गया। पूज्य जैनाचार्य श्री मेवाड़ देशोद्धारक श्री जितेन्द्रसूरीजी म.सा. के सुशिष्य आचार्य श्री निपुणरत्नसूरीजी म.सा. आदि साधु-साध्वीवृंद की अमृत निशा में आयोजित प्रतिष्ठा महोत्सव में प्रभु प्रवेश, कुंभ स्थापना के परमात्मा के 18 अभिषेक किये गये एवं परमात्मा का भव्य वरघोड़ा निकाला गया। 15 मई को परमात्मा की भव्य प्रतिष्ठा पूज्यश्री के मंगल मंत्रोच्चार के साथ शुभ लग्नांश वेला में सम्पन्न हुई। 10 मई को द्वारोद्घाटन के साथ महोत्सव की पूर्णाहुति हुई।

जिनालय का खनन मुर्हूत हुआ

तलादरी- राजसमंद जिला राजस्थान के तलादरी में श्री धर्मनाथ प्रभु के जिनालय का खनन मुर्हूत शिलान्यास पूज्य आचार्य श्री पूज्य आचार्य श्री रविशेखरसूरीजी म.सा.एवं आचार्य श्री ललितशेखर सूरीजी म.सा. आदि ठाणाकी निश्रा में हुआ। दिनांक 15 मई को खनन मुर्हूत एवं 16 मई को शिलान्यास सम्पन्न हुआ।

आचार्य श्री विजयविज्ञानप्रभ सूरीश्वरजी म.सा. आगामी कार्यक्रम

* 11 जून, घाटकोपर-सांधाणी में चार्तुमास प्रवेश।
* 21 जून, मुलुंड-तांबेनगर में चार्तुमास प्रवेश।
* 1 जुलाई, भगवती आदि मोटा जोगका प्रारंभ।
* 13 जुलाई, गुरु पूर्णिमा पर्व पर पूज्यश्री की हितशिक्षा।
* 16 अगस्त, योगनिष्ठ प.पू.आ.श्री विजय केशरसूरीश्वरजी महाराजा की 91 वीं स्वर्गारोहण तिथि पर भव्य गुणानुवाद।

सांवेर श्रीसंघ में यादगार अंजनप्रतिष्ठा महोत्सव की रथयात्रा के साथ प्रभु नूतन जिनालय में विराजमान हुए

✻चार्तुमास आगम मंदिर सिद्धक्षेत्र में
✻ पालीताना में नव्वाणुं का आयोजन होगा।

सांवेर- पूज्यपाद आचार्य भगवंत श्री जितरत्नसागर सूरीश्वरजी महाराज 260 ओली आराधक श्री आचार्य श्री चन्द्ररत्नसागर सूरीजी, मुनिश्री चैत्य रत्नसागरजी, मुनिश्री ज्ञानेशरत्न सागरजी, मुनि श्री गोयम सागरजी म.सा. आदि ठाणाके साथ साध्वीवृंदों की अमृत निश्रा में यह भव्य आयोजन सांवेर में प्राचीन आदिनाथ मंदिर के स्थान पर निर्मित नवीन मंदिर में दादा श्रीआदिनाथजी की प्रतिमा की पुर्नप्रतिष्ठा के निमित्त किया गया।श्री संघ से मात्र 50-60 घरों के रहते शासन के प्रति अद्भूत भक्ति दिखाकर श्री संघ ने प्रतिष्ठा के जोरदार चढ़ावे लेने के साथ 11 मई को सांवेर के इतिहास न भूलनेवाली स्मरणीय रथयात्रा का आयोजन किया गया। रथयात्रा का सम्पूर्ण नगर में जैन-अजैन लोगों ने जोरदार स्वागत किया। अनेक श्रीसंघों के धार्मिष्ठ इस अवसर पर पधारे थे। दीक्षा कल्याणक की प्रस्तुति में आचार्य संघ का अंजन अनुष्ठान के लिये नवीन वस्त्र प्रदान किये गये। रात्री में पूज्यश्री ने अंजन विधान को पूर्ण किया। प्रातःकाल श्री संघ की मंगल उपस्थिति शुभ लग्नांश वेला में परमात्मा को गद्दीनशील किया गया। हर्ष आनंद से लोग भावविभोर होकर नाचते रहे। प्रातः द्वारोद्घाटन के साथ में महोत्सव की पूर्णाहुति हुई। पूज्यपाद आचार्य भगवंत श्री जितरत्नसागर सूरीश्वरजी महाराज 259 ओली आराधक श्री आचार्य श्री चन्द्ररत्नसागर सूरीजी, मुनिश्री चैत्य रत्नसागरजी, मुनिश्री ज्ञानेशरत्न सागरजी, मुनि श्री गोयम सागरजी म.सा. आदि ठाणाके साथ साध्वीवृंदों की अमृत निश्रा में का आगामी चार्तुमास सिद्धक्षेत्र गिरिराज की छत्रा छाया में स्थित आगम मंदिर में होगा साथ ही आगामी कार्तिक पूनम में वहां भव्य नव्वाणुं यात्रा और उपधान तप का आयोजन भी होगा।

बड़ोदिया में चार्तुमास

राजगढ़- सागर समुदाय की साध्वीवर्या श्री मुक्तिप्रिया श्रीजी म.सा. आदि ठाणा का मंगलकारी चार्तुमास बड़ोदिया में होगा। राजगढ़ में आयोजित अंजन-प्रतिष्ठा महोत्सव में बड़ोदिया श्री संघ के द्वारा पूज्य युवा जैनाचार्य श्री विश्वरत्नसागरसूरीजी म.सा.की मंगल निश्रा में साध्वीवर्या आदि ठाणा की मंगल उपस्थिति में चार्तुमास की विनंती पर पूज्यपादश्री ने गच्छाधिपति की आज्ञानुसार साध्वी मंडल के चार्तुमास की घोषणा की। श्री संघ ने हर्ष व्यक्त किया।

पिंडवाड़ा धर्मशाला में चार्तुमास

पालीताना- पूज्य उपाध्याय प्रवर श्री वैराग्यरत्नसागरजी म.सा. आदि ठाणा का चार्तुमास पिंडवाड़ा धर्मशाला पालीताना में होगा साथ ही मुनिश्री विरक्तसागरजी म.सा. एवं बहन महाराज साध्वीवर्या श्री अमितगुणा श्रीजी का चार्तुमास भी पिंडवाड़ा धर्मशाला में ही होगा।

मांगरोल में 816 वीं ध्वजा चढ़ाई गई

मांगरोल- 108 नववल्लव श्री पार्श्वनाथ प्रभु एवं प्रभु श्री मुनिसुव्रत स्वामीजी से सुशोभित जिन मंदिर में परमात्मा की 816 वीं ध्वजारोहण का मंगल प्रसंग हुआ। दिनांक 11 मई को परमात्मा का वरघोड़ा निकाला गया। पूज्यपाद मालवभूषण आचार्य गुरुदेव श्री नवरत्नसागर सूरीश्वरजी महाराजा के सुशिष्य वर्धमान तप की 96 वीं ओली के आराधक मुनिश्री मोक्षरत्न सागरजी म.सा. एवं मुनिश्री अर्हमरत्न सागरजी म.सा.की निश्रा में यह धर्म आयोजन सम्पन्न हुआ।

दादावाड़ी में अंजन-प्रतिष्ठा सम्पन्न

नागेश्वर- श्री नागेश्वर पार्श्वनाथ महातीर्थ में नवीन निर्मित दादावाड़ी में श्री सिमंदर स्वामी परमात्मा की भव्य प्रतिष्ठा तथा दादा गुरुदेव की ध्वजा आदि की प्रतिष्ठा या अंजन-प्रतिष्ठा महोत्सव 12 से 20 मई तक आयोजित किया गया। पूज्यश्री चन्द्रप्रभा श्रीजी म.सा.की प्रेरणा से निर्मित दादावाड़ी का महोत्सव पूज्य आचार्य श्री पियूष सूरीश्वरजी म.सा. एवं साध्वीवर्या श्री विजयप्रभा श्रीजी म.सा.आदि ठाणा की अमृत निश्रा में हुआ। 19 मई को भव्य वरघोड़ा आयोजित किया गया तथा दिनांक 20 मई को प्रातःकाल शुभ मुर्हूत में प्रतिष्ठा की क्रियाविधि पूज्य आचार्यश्री ने सम्पन्न करवाई।

मन्दसौर में श्री शंखेश्वर जिनालय की प्रतिष्ठा

मन्दसौर- पूज्यपाद आचार्य श्री जितेन्द्र सूरीश्वरजी म.सा.के जन्म शताब्दी वर्ष के अंतर्गत पूज्यश्री के सुशिष्य आचार्य श्री निपुणरत्नसूरीजी म.सा. आदि ठाणा की अमृत निश्रा में श्री आदिनाथ पार्श्वनाथ जैन श्वेतांबर मंदिर द्वारा प्रतिष्ठा महोत्सव का आयोजन दिनांक 22 से 26 मई तक किया गया। इस पावन प्रसंग पर परमात्मा के 18 अभिषेक महापूजन-पूजन धर्म क्रिया अनुष्ठान किया गया। 24 मई को परमात्मा का भव्य वरघोड़ा आयोजित किया गया। 25 मई को प्रातःकाल शुभ वेला में पूज्यश्री के द्वारा प्रतिष्ठा अनुष्ठान संपन करवाये गये। 26 मई को द्वारोद्घाटन और सत्तरभेदी पूजन के साथ महोत्सव की पूर्णाहुति हुई।

परिवार के साथ प्रवज्या ग्रहण की

अहमदाबाद- पूज्य आचार्य श्री तपोरत्नसूरीजी म.सा. के सुशिष्य मुनि श्री कल्याणविजयजी म.सा.आदि ठाणा की अमृत निश्रा में बगैर किसी तामझाम या किसी बड़े दीक्षा महोत्सव वर्षीदान वरघोड़े के श्री यशभाई, श्रीमती पोम्पी बहन पुत्र कल्याणकुमार ने प्रातःकाल शुभ बेला में दिनांक 26 मई को प्रातः 4.30 बजे गृह त्याग कर 5.45 बजे परमेश्वरी प्रवज्या ग्रहण की। दीक्षा पालड़ी में हुई।

पालीताना में चातुमार्सिक आराधना

पालीताना- यहां स्थित शांति भवन में दो माह की चातुमार्सिक आराधना का आयोजन पूज्य गच्छाधिपति श्री राजेन्द्र सूरीजी म.सा. के सुशिष्य मुनिश्री कल्परत्नविजयजी म.सा.की निश्रा में होने जा रहा है। आराधना दिनांक 12 जुलाई से आरम्भ होकर 1 सितंबर को पूर्ण होगी। अंतर्राष्ट्रीय जैन विधिकारक भाई मनोज कुमार बाबूमलजी हरण मार्गदशक प्रेरक है। सम्पर्क-98458-68213

गुरुराम भूमि पर दीक्षा महोत्सव

सूरत- श्री विजयराम सूरीश्वरजी म.सा. डेहलावाले के दीक्षा दिन पूज्य गच्छाधिपति श्री अभयदेव सूरीजी, गच्छाधिपति श्री विजय हेमप्रभसूरीजी आचार्य श्री अनंतभद्रसूरीजी, आचार्य श्री विजयमुक्तिविलय सूरी आदि विशाल संख्या में साधु-साध्वी की निश्रा में दिनांक 25 मई को दो मुमुक्षु बहन कुमारी भव्या कोठारी एवं कुमारी नीतू कुड़िया की दीक्षा सम्पन्न हुई, दोनों नूतन साध्वीवर्या का नाम साध्वी निर्लेप पूर्णा श्रीजी एवं नम्यपूर्णाश्रीजी घोषित किया गया।

मुमुक्षु मयूरी सियाल ने दीक्षा ली

बड़नगर-पूज्यपाद आचार्य भगवंत श्री नित्यसेन सूरीजी महाराजा आदि ठाणा की मंगल निश्रा में मुमुक्षु कुमारी मयूरी सियाल ने परमात्मा प्रभु वीर के श्रमणीसंघ को स्वीकार कर मानव जीवन को धन्य बनाया है। दिनांक 14 से 18 मई तक बड़नगर में आयोजित दीक्षा महोत्सव में 17 मई को भव्य वर्षीदान वरघोड़ा आयोजित किया गया। 18 मई को पूज्यश्री के द्वारा दीक्षा महोत्सव प्रांगण में मंगल मंत्रोच्चार के साथ दीक्षा क्रिया विधि सम्पन्न हुई। 19 मई को नूतन साध्वीजी के पगलिया संसारी परिवार के घर हुए।

उन्हेल में गौशाला का भूमि पूजन खनन मुर्हूत हुआ

उन्हेल- सेठ नंदलाल सरदारसिंह गौसेवा सदन के द्वारा संचालित अभ्युदय स्मृति धाम पांजरापोल का 30 वर्ष पूर्व शुभारंभ हुआ है अब पुनः गौशाला का 15 बीघा जमीन पर नवीन निर्माण करने के लिये 18 मई को गौशाला भूमि पूजन खनन मुर्हूत सम्पन्न हुआ। पूज्यपाद आचार्य भगवंत श्री जित रत्नसागर सूरीश्वरजी महाराज 260 ओली आराधक श्री आचार्य श्री चन्द्र रत्नसागर सूरीजी, मुनिश्री चैत्य रत्न सागरजी, मुनिश्री ज्ञानेशरत्न सागरजी, मुनि श्री गोयमसागरजी म.सा.आदि ठाणा की मंगल उपस्थिति में श्री पारस जैन (पूर्व मंत्री एवं विधायक) के साथ क्षेत्र के विधायक श्री रामलालजी मालवीय का आगमन भी हुआ था। भूमि पूजन श्री सतीश मारु एवं श्री सचिन पाटनी ने तथा खनन मुर्हूत श्री विजय कुमार मण्डोवरा के द्वारा सम्पन्न हुआ।

बंधुबेलड़ी आचार्य भगवंत की निश्रा में शंखेश्वर इन्दौर, रतलाम में प्रवज्या महोत्सव का महाशंखनाद

✲ सिद्धम जैन- श्री चन्द्रसागरजी महाराज बने।

इन्दौर- श्री शंखेश्वर महातीर्थ में तीन दीक्षा श्री दिनेश शाह, शोभना शाह, अस्मिता शाह का दीक्षा महोत्सव 27 अप्रेल को सम्पन्न होने के बाद आचार्य भगवंत श्री जिनचंद्रसागर सूरीश्वरजी म.सा आदि ठाणा- 13 एवं साध्वीवर्या श्री मेघवर्षा श्रीजी आदि ठाणा-7 की मंगलमय अमृत निश्रा में 8 मई से 16 मई तक लगातार जिनशासन की भव्य प्रभावना इन्दौर नगर में हुई, 8 मई को प्रवेश के बाद 10 मई को आलोक नगर श्री संघ उपाश्रय मंदिर का भूमि पूजन हुआ, रेसकोर्स में 12 मई को आचार्यश्री का 60 दीक्षा वर्ष प्रवेश पर भव्य आयोजन के ब ाद 12 मई को शासन स्थापना दिवस पर सामुहिक सामायिक हुई। 14 मई को सिद्धम का भव्य वर्षीदान वरघोड़ा आयोजित हुआ। 15 मई को श्री नवकार वाटिका ह्रींकार गिरी में प्रवज्या महोत्सव का यादगार आयोजन हुआ। बाल मुमुक्षु सिद्धम ने हंसते हुए उत्साह से पूज्यश्री से रजोहरण ग्रहण कर प्रभुवीर का श्रमण धर्म स्वीकार कर मुनिश्री चन्द्र-सागर म.सा. के रुप में नव अवतरण लिया। दिनांक 16 मई को पिपली बाजार सफेद मंदिर में शक्रस्तव महा-अभिषेक का आयोजन किया गया। सभी आयोजन में नवकार परिवार की सहभागिता रही। यहां से आपश्री का विहार रतलाम की ओर हुआ है जहां दिनांक 26 मई को बाल मुमुक्षु ईशान कोठारी, पलक चाणोदिया एवं तनिष्का चाणोदिया का भव्य संयमोत्सव का आयोजन होगा। इसी के साथ श्री लेखा चौकसी की दीक्षा ऊँझा (गुज.) में होगा।

उपाध्याय प्रवर श्री वैराग्यरत्न सागरजी का चार्तुमास पालीताना में

पालीताना- पूज्यपाद गुरुदेव मालव भूषण आचार्य भगवंत श्री नवरत्नसागर सूरीश्वरजी महाराजा के सुशिष्य उपाध्याय प्रवर श्री वैराग्यरत्न सागरजी म.सा. का चार्तुमास पिण्डवाड़ा धर्मशाला पालीताना में सुनिश्चित हुआ है इसके साथ ही साध्वीवृया मातृहृदया श्री अमितगुणा श्रीजी म.सा. एवं मुनि श्री विरक्तसागरजी म.सा. का चार्तुमास पालीताना होगा।

299 वीं ओली का पारणा हुआ

पालीताना- पूज्यपाद संघ स्थविर सागर गच्छाधिपति जिनागम सेवपूज्यपादगच्छाधिपति जिनागमसेवी आचार्य देवेश श्री दौलत सागर सूरीजी महाराजा के मंगल आर्शीवाद एवं शासन प्रभय आचार्य श्री अशोकसागर सूरीजी के मंगल आर्शीवाद के साथ आचार्यश्री सागरचंद्रसागरसूरीजी म.सा. की मंगल प्रेरणा और मार्गदर्शन में पालीताना में विराजित सभी साधु-साध्वीवृंद की अमृत निश्रा में महातपस्वी साध्वीवर्या श्री कल्पबोधि श्रीजी म.सा. को 299 वीं ओली का पारणा महोत्सव दिनांक 27 मई को जम्बुदीप परिसर में सम्पन्न हुआ।

श्रीमद् विजय जिनोत्तम सूरीश्वरजी म.सा. का 2023 का चार्तुमास दक्षिण भारत में

प.पू. आचार्य श्री नेमि-लावण्य-दक्ष-सुशील गुरुकृप प्राप्त प्रतिष्ठाचार्य श्रीमद् विजय जिनोत्तम सूरीश्वरजी म. सा. एवं प.पू.आचार्यदेव श्रीमद् विजय रविचन्द्र सूरीश्वरजी म.सा. आदि श्रमण -श्रमणी परिवार का सन् 2023 वर्ष का चार्तुमास दक्षिण भारत में करने की क्षेत्र स्पर्शना के अनुसार स्वीकृति प्रदान की है। सन् 2022 का चार्तुमास अनंत सिद्धों की पावन भूमि श्री सिद्धा चल पालीताना महातीर्थ में होगा एवं आसोज मास में विशाल संख्या में श्री उपधान तप की आराधना होगी। उपधान तप 6 अक्टूबर से होगा। माला 24 नवंबर को होगा।

कन्या संस्कार शिविर होगा

बिबड़ोद - रतलाम में स्थित बिबड़ोद तीर्थ में दिनांक 9 से 12 जून तक कन्या संस्कार शिविर का आयोजन होने जा रहा है। आगमोद्धारक समुदाय-वर्तीय साध्वी श्री शुद्धिप्रसन्न श्रीजी, साध्वी श्री प्रवृद्धिश्रीजी एवं साध्वी श्री समृद्धि श्रीजी की निश्रा में आयोजित शिविर के लिये फीस 100 रुपये है एवं 9425959701 पर सम्पर्क किया जा सकता है।

श्री शत्रुंजय महातीर्थ में 491 वीं ध्वजा चढ़ाई गई

पालीताना- जैनत्व का गौरव और अभिमान स्वरुप महातीर्थ श्री आदिनाथ दादा प्रथम तीर्थकर परमात्मा से सुशोभित शाश्वत तीर्थराज में दिनांक 21 मई को बहुत उत्साह और उमंग के साथ जिनालय में 491 वीं ध्वजारोहण का आयोजन हुआ।

हमारे तीज-त्यौहार

1- आषाढ़ वदी-3-4	शनिवार	18/06/2022	श्री आदिनाथ प्रभु का चयवन
2- आषाढ़ वदी-9	बुधवार	22/06/2022	आद्रा नक्षत्र प्रातः 11.43 से आम का त्याग

पुष्य नक्षत्र :–
आरम्भः- ज्येष्ट सुदी-4, शुक्रवार, दिनांक 3-6-2022 समय 19.06 बजे से
समाप्तः-ज्येष्ट सुदी- 1, शनिवार, दिनांक 4-6-2022 समय 21.56 बजे तक
पंचक :-
आरम्भः- आषाढ़ वदी-3-4, शनिवार, दिनांक 18-6-2022 समय 18.44 बजे से
समाप्तः- आषाढ़ वदी-10, बुधवार, दिनांक 23-6-2022 समय 06.15 बजे तक

ऐसा करो कि...!

ऐसा काम करो कि लोग देखते रहे।
ऐसा बोलो कि लोग ध्यान से सुने।
ऐसा सोचो कि दूसरी बार सोचना न पड़े।
ऐसा दो कि जो किसी काम का हो।
ऐसा लो कि जिससे दाता का दिल उल्लसे।
ऐसा लिखो जिसे हमेशा पढ़ते रहे।
ऐसा चलो जिससे धूल न उड़े। (जीव न मरे)
ऐसे रहो कि सब रखने की इच्छा करें।
ऐसे बनो कि सब कहे कि- ''ये हमारे है।''

सारे देश में आगमोद्धारक प्रतिनिधि नियुक्त करना है

जैन जगत की प्रतिष्ठित, प्रसिद्ध मासिक पत्रिका आगमोद्धारक के सदस्यता अभियान के लिये सारे देश में प्रतिनिधियों की नियुक्ति की जा रही है। सक्रिय युवा भाई-बहन जो जिनशासन के प्रचार-प्रसार हेतु अपनी सेवा देना चाहते है वे तुरन्त निम्न पते पर संपर्क करें।

प्रतिनिधि को कम से कम 25 सदस्य बनाना आवश्यक है। आपकी सहमति प्राप्त होने पर रसीद कट्टे एवं प्रचार-प्रसार सामग्री आपको भेजी जायेगी। सम्पादक से सम्पर्क करें।

चार्तुमास विशेषांक

माह जुलाई 2022 का अंक चार्तुमास विशेषांक रहेगा आपकी रचनाऐं शीध्र भेजिएं।

- सम्पादक

सादर आमंत्रण

✻ पूज्य साधु-साध्वीजी से विनंती है कि आपके चार्तुमास एवं सभी धार्मिक कार्यक्रमों की जानकारी एवं धार्मिक महोत्सव की सूचना आगमोद्धारक तक पहुंचाने का कष्ट करें, ताकि अंक आपको लगातार भेजा जा सके तथा समाचार प्रकाशित किया जा सकें।

✻ आगमोद्धारक के लिये आपकी रचनाएं भी प्रकाशन के लिये निरंतर भेजते रहे। आपकी रचना से हम प्रोत्साहित होंगे।

✻ पत्रिका को और अच्छा बनाने के लिये आपके सुझाव, मार्गदर्शन भी भेजते रहे ताकि आगमोद्धारक की गुणवत्ता बढ़ाई जा सके।

✻ अंक आपके तक नियमित रुप से नवीन स्वरुप के साथ 10 तारीख तक पहुंचे ऐसा हमारा प्रयास रहता है, अंक अप्राप्ति पर शीघ्र सूचित करें।

- सम्पादक

॥ श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथाय नमः ॥
॥ श्री झवेर - आनंद - माणिक्य - चंद्र - अभ्युदय - नवरत्नसागर सूरीश्वरेभ्यो नमः ।
॥ नमामि नित्यं गुरु नवरत्नं ॥

भारत की प्रसिद्ध मायानगरी मुम्बई के गोरेगांव (वेस्ट) में

भव्यातिभव्य चातुर्मास प्रवेश

आषाढ़ सुदि 10, शनिवार 9 जुलाई 2022

पावन पूण्य साम्राज्य

अनंतानंत आस्था एवं श्रृद्धा के केन्द्र, चारित्र चुड़ामणी, भीष्म तपस्वी, भोपावर तीर्थोद्धारक, मालवभूषण

प.पू. आचार्य देवेश श्री नवरत्नसागर सूरीश्वरजी म.सा.

पावन निश्रा प्रदाता

गुरु नवरत्नकृपा प्राप्त, युवा हृदय सम्राट, महामांगलिक प्रदाता, जिनशासन के महानायक, मोक्षमार्ग प्रदर्शक, आश्रीतगण हितचिंतक, प्रखर प्रावचनिक, गुरु नवरत्न परंपरा के संवाहक

प.पू. आचार्य देवेश श्री विश्वरत्नसागर सूरीश्वरजी म.सा.
आदि श्रमण श्रमणी भगवंत

चातुर्मास स्थल एवं निवेदक

श्री चिंतामणी पार्श्वनाथ जैन संघ गोरेगांव आर्य रोड़ (वेस्ट) मुम्बई 400104

वर्ष 27 | वैशाख-ज्येष्ठ | मई-2022 | अंक 5 (मासिक) | प्रकाशन उज्जैन

आर.एन.आई. नं. 0048570/29/30/1982
पोस्ट मालवा डिवीजन पी.आर.एन.नं.एम.डी. 08/2021-2023

प्राप्त न होने पर कृपया लौटायें-

डॉ. सुभाष जैन (संपादक)
46, सखीपुरा, उज्जैन - 456001 (म.प्र.)
मो. 94250-91012, 8770884897
Email : subash_3333@yahoo.co.in, subhashjain@gmail.com

प्रति, बुक पोस्ट
श्रीमान् ....
....
....

स्टाम्प टिकिट

श्री अभ्युदय फाउण्डेशन उज्जैन के लिये डॉ. सुभाष जैन - संपादक द्वारा प्रकाशित एवं एम.बी. ऑफसेट प्रिंटर्स, 285, एम.जी.रोड़, इन्दौर से मुद्रित। फोन : 0731-2412232, संपादक मो. 94250-91012, 8770884897